हदाइक़े
बख़्शिश
1325 हि.

कहां क्या है

वाह क्या जूदो करम है

वाह क्या जूदो करम है शहे बत्हा तेरा
"नहीं" सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा
धारे चलते हैं अता के वो है क़त्रा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वो है ज़र्रा तेरा
फ़ैज़ है या शहे तस्नीम निराला तेरा
आप प्यासों के तजस्सुस में है दरिया तेरा
अग़्निया पलते हैं दर से वो है बाडा तेरा
अस्फ़िया चलते हैं सर से वो है रस्ता तेरा
फ़र्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
ख़ुस्रवा अर्श पे उड़ता है फरेरा तेरा
आस्माँ ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, जमाना मेहमान
साहिबे ख़ाना लकब किस का है तेरा, तेरा
मैं तो मालिक ही कहूँगा कि हो मालिक के हबीब
यअ़नी महबूबो मुहिब में नहीं मेरा तेरा

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुँह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तल्वा तेरा
बह्रे साइल का हूँ साइल न कुँए का प्यासा
खुद बुझा जाये कलेजा मेरा छींटा तेरा
चोर ह़ाकिम से छुपा करते हैं यॉ उसके खिलाफ़
तेरे दामन में छुपे चोर अनोखा तेरा
ऑखें ठन्डी हों जिगर ताज़े हों जानें सैराब
सच्चे सूरज वो दिल--आरा है उजाला तेरा
दिल अबस् ख़ौफ़ से पत्ता सा उड़ा जाता है
पल्ला हल्का सही भारी है भरोसा तेरा
एक मैं क्या मेरे इस्यां की हक़ीकत कित्नी
मुझ से सौ लाख.को काफ़ी है इशारा तेरा
मुफ़्त पाला था कभी काम की आ़दत न पड़ी
अब अ़मल पूछते हैं हाय निकम्मा तेरा
तेरे टुकडों से पले ग़ैर की ठोकर पे न डाल
झिड़कियां खायें कहाँ छोड़ के सदक़ा तेरा
ख़्वार–ो बीमार–ो, ख़तावार–ो गुनह्गार हूँ मैं
राफ़ेअ–ो नाफ़ेअ–ो शाफ़ेअ़ लक़ब आक़ा तेरा

मेरी तक़दीर बुरी हो तो भली करदे कि है
महूव–ो इस्बात के दफ़्तर पे कड़ोड़ा तेरा

तू जो चाहे तो अभी मैल मेरे दिल के धुलें
कि ख़ुदा दिल नहीं करता कभी मैला तेरा

किसका मुँह तकिये कहाँ जाइये किससे कहिये
तेरे ही क़द्मों पे मिट जाये यह पाला तेरा

तू ने इस्लाम दिया तू ने जमाअ़त में लिया
तू करीम अब कोई फिरता है अ़तिय्या तेरा

मौत सुन्ता हूँ सितम तल्ख़ है ज़ह्राबए नाब
कौन ला दें मुझे तल्वों का ग़ुसाला तेरा

दूर क्या जानिये बद–कार पे कैसी गुज़रे
तेरे ही दर पे मरे बेकसो तन्हा तेरा

तेरे सदक़े मुझे इक बूंद बहुत है तेरी
जिस दिन अच्छों को मिले जाम छलक्ता तेरा

ह़रम–ो तैबा व बग़दाद जिधर कीजे निगाह
जोत पड़ती है तेरी नूर है छनता तेरा

तेरी सरकार में लाता है रज़ा उसको शफ़ीअ़
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस

वाह क्या मर्तबा ऐ गौस है बाला तेरा
ऊँचे ऊँचों के सरों से कदम अअला तेरा

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वो है तल्वा तेरा

क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पन्जा तेरा
शेर को खत्रे में लाता नहीं कुत्ता तेरा

तू हुसैनी हसनी क्यों न मुहीयुद्दीं हो
ऐ खिज़र मजमए बहरैन है चश्मा तेरा

कस्में देदे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा

मुस्तफा के तने बे–साया का साया देखा
जिसने देखा मेरी जाँ जल्वए ज़ेबा तेरा

इब्ने जहरा को मुबारक हो अरूसे क़ुदरत
क़ादिरी पायें तसद्दुक मेरे दूल्हा तेरा

क्यों न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यों न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

नबवी मेंह अ़लवी फ़स्ल बतूली गुल्शन
हसनी फूल हुसैनी है महकना तेरा

नबवी ज़िल अ़लवी बुर्ज बतूली मन्ज़िल
हसनी चाँद हुसैनी है उजाला तेरा

नबवी ख़ुर अ़लवी कोह बतूली मअ़दन
हसनी लअ़्ल हुसैनी है तजल्ला तेरा

बह्रो बर शह्रो क़ुरा सह्लो हज़न दश्तो चमन
कौन से चक पे पहुँचता नहीं दअ़्वा तेरा

हुस्ने नीय्यत हो ख़ता फिर कभी करता ही नहीं
आज़माया है यगाना है दु–गाना तेरा

अ़र्ज़े अह्वाल की प्यासों में कहाँ ताब मगर
आँखें ऐ अब्रे करम तकती हैं रस्ता तेरा

मौत नज़्दीक गुनाहों की तहें मैल के ख़ौल
आ बरस जा कि नहा धो ले ये प्यासा तेरा

आब आमद वो कहे और् मैं तयम्मुम बर्ख़ास्त
मुश्ते ख़ाक अपनी हो और नूर का अह्ला तेरा

जान तो जाते ही जाएगी क़ियामत यह है
कि यहाँ मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा

तुझसे दर दर से सग और सग से है मुझको निस्बत
मेरी गरदन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
मेरी किस्मत की क़सम खायें सगाने बग़दाद
हिन्द में भी हूँ तो देता रहूँ पहरा तेरा
तेरी इज़्ज़त के निसार ऐ मेरे ग़ैरत वाले
आह सद आह कि यूँ ख़्वार हो बरदा तेरा
बद सही चोर सही मुजरिमो नाकारा सही
ऐ वो कैसा ही सही है तो करीमा तेरा
मुझको रुस्वा भी अगर कोई कहेगा तो यूं ही
कि वही ना. वो रज़ा बन्दए रुस्वा तेरा
हैं रज़ा यूं न बिलक तू नहीं जय्यिद तो न हो
सय्यिदे जय्यिदे हर दहर है मौला तेरा
फ़ख़्रे आक़ा में रज़ा और भी इक नज़्मे रफ़ीअ़
चल लिखा लायें सना ख़्वानों में चेहरा तेरा

तू है वो ग़ौस कि हर ग़ौस

तू है वो ग़ौस कि हर ग़ौस है शैदा तेरा
तू है वो ग़ैस कि हर ग़ैस है प्यासा तेरा

सूरज अगलों के चमक्ते थे चमक कर डूबे
उफ़ुके नूर पे है मेह्र हमेशा तेरा

मुर्ग़ सब बोलते हैं बोल के चुप रहते हैं
हाँ असील एक नवा–सन्ज रहेगा तेरा

जो वली क़ब्ल थे या बाद हुए या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

ब–क़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ैनो हरीम
कि हुआ है न वली हो कोई हम्ता तेरा

तुझ से और दह्र के अक़्ताब से निस्बत कैसी
क़ुत्ब ख़ुद कौन है ख़ादिम तेरा चेला तेरा

सारे अक़्ताब जहाँ करते हैं कअ़बे का तवाफ़
कअ़बा करता है तवाफ़े दरे वाला तेरा

और परवाने हैं जो होते हैं कअ़बे पे निसार
शम्अ़ इक तू है कि परवाना है कअ़बा तेरा

शज्रे सर्व सही किस के उगाए तेरे
मअ़रेफ़त फूल सही किस का खिलाया तेरा

तू है नौशाह बराती है ये सारा गुलज़ार
लाई है फस्ले समन गूंध के सेहरा तेरा
डालियाँ झूमती हैं रक़्से ख़ुशी जोश पे है
बुलबुलें झूलती हैं गाती हैं सेहरा तेरा
गीत कलियों की चटक ग़ज़लें हज़ारों की चहक
बाग़ के साज़ों में बजता है तराना तेरा
सफ़े हर शज्रा में होती है सलामी तेरी
शाख़ें झुक झुक के बजा लाती हैं मुज्रा तेरा
किस गुलिस्तां को नहीं फ़स्ले बहारी से नियाज़
कौन से सिल्सिला में फ़ैज न आया तेरा
नही किस चाँद की मन्ज़िल में तेरा जल्वए नूर
नहीं किस आईना के घर में उजाला तेरा
राज किस शह्र में करते नहीं तेरे ख़ुद्दाम
बाज किस नह्र से लेता नहीं दरिया तेरा
मज़रओ चिश्त–ो बुख़ारा व इराक़–ो अजमेर
कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा
और महबूब हैं, हाँ पर सभी यक्साँ तो नहीं
यूँ तो महबूब है हर चाहने वाला तेरा

उस को सौ फ़र्द सरापा ब–फ़रागत ओढ़ें
तंग होकर जो उतरने को हो नीमा तेरा
गर्दनें झुक गईं सर बिछ गये दिल लोट गये
कश्फ़े साक़ आज कहाँ यह तो क़दम था तेरा
ताजे फ़र्क़े ऊरफ़ा किस के क़दम को कहिये
सर जिसे बाज दें वो पाँव है किस का तेरा
सुक्र के जोश में जो हैं वो तुझे क्या जानें
ख़िज़्र के होश से पूछे कोई रुत्बा तेरा
आदमी अपने ही अह्वाल पे करता है कियास
नश्शे वालों ने भला सुक्र निकाला तेरा
वो तो छोटा ही कहा चाहें कि हैं ज़ेरे हज़ीज़
और हर औज से ऊँचा है सितारा तेरा
दिले अअ्दा को रज़ा तेज़ नमक की धुन है
इक ज़रा और छिड़कता रहे ख़ामा तेरा

अल्अमाँ क़ह्र है

अल्–अमाँ क़ह्र है ऐ ग़ौस वो तीखा तेरा
मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा
बादलों से कहीं रुकती है कड़कती बिज्ली
ढालें छँट जाती हैं उठता है जो तेग़ा तेरा

अक्स का देख के मुँह और बिफर जाता है
चार आईना के बल का नहीं नेज़ा तेरा
कोह सर्मुख हो तो इक वार में दो परकाले
हाथ पड़ता ही नहीं भूल के ओछा तेरा
उसपे यह क़ह्र कि अब चन्द मुख़ालिफ़ तेरे
चाहते हैं कि घटा दें कहीं पाया तेरा
अ़क्ल होती तो ख़ुदा से न लड़ाई लेते
यह घटायें, उसे मन्ज़ूर बढ़ाना तेरा
व रफ़अ़ना लक ज़िक्रक का है साया तुझ पर
बोल बाला है तेरा ज़िक्र है ऊँचा तेरा
मिट गये मिटते हैं मिट जाएंगे अअ़्दा तेरे
न मिटा है न मिटेगा कभी चर्चा तेरा
तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे
जब बढ़ाये तुझे अल्लाह तआ़ला तेरा
सम्मे क़ातिल है ख़ुदा की क़सम् उनका इन्कार
मुन्किरे फ़ज़्ले हुज़ूर आह ये लिक्खा तेरा
मेरे सय्याफ़ के ख़न्जर से तुझे बाक नहीं
चीर कर देखे कोई आह कलेजा तेरा
इब्ने ज़हरा से तेरे दिल में हैं ये ज़ह्र भरे
बल बे ओ मुन्किरे बेबाक ये ज़हरा तेरा

दाज़े अशहब की ग़ुलामी से ये आँखें फिरनी
देख उड़ जायेगा ईमान का तोता तेरा

शाख़ पर बैठ के जड़ काटने की फ़िक्र में है
कहीं नीचा न दिखाए तुझे शज्रा तेरा

हक़ से बद होके ज़माने का भला बन्ता है
अरे मैं ख़ूब समझता हूँ मुअम्मा तेरा

सगे दर क़हर से देखे तो बिखरता है अभी
बन्द बन्दे बदन ऐ रूबहे दुनिया तेरा

ग़र्ज़ आक़ा से करूँ अर्ज़ कि तेरी है पनाह
बन्दा मजबूर है ख़ातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा

हुक्म नाफ़िज़ है तेरा ख़ामा तेरा सैफ़ तेरी
दम में जो चाहे करे दौर है शाहा तेरा

जिसको लल्कार दे आता हो तो उल्टा फिर जाय्
जिस को चुम्कार ले हिर–फिर के वो तेरा तेरा

कुन्जियाँ दिल की ख़ुदा ने तुझे दीं ऐसी कर
कि ये सीना हो महब्बत का ख़ज़ीना तेरा

दिल पे कन्दा हो तेरा नाम कि वो दुज़्दे–रजीम
उलटे ही पाँव फिरे देख के तुग़रा तेरा

नज़अ् में, गोर में, मीज़ाँ पे, सरे पुल पे कहीं
न छुटे हाथ से दामाने–मुअ़ल्ला तेरा

धूप महशर की वो जाँ सोज़ कियामत है मगर
मुतमइन हूँ कि मेरे सर पे है पल्ला तेरा
वहजत उस सर की है जो बहजतुल असरार में है
कि फ़लक–वार मुरीदों पे है साया तेरा
ऐ रज़ा चीस्त ग़म अर जुमला जहाँ दुश्मने तुस्त
कर्दह् अम मामने खुद किब्लए हाजाते रा

हम ख़ाक हैं और ख़ाक

हम ख़ाक हैं और ख़ाक ही मावा है हमारा
ख़ाकी तो वो आदम जदे आला है हमारा
अल्लाह हमें ख़ाक करे अपनी तलब में
यह ख़ाक तो सरकार से तम्ग़ा है हमारा
जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आलम
उस ख़ाक पे क़ुरबाँ दिले–शैदा है हमारा
ख़म होगई पुश्ते फ़लक इस तअ़्ने जमीं से
सुन हम पे मदीना है वो रुतबा है हमारा
उसने लक़बे ख़ाक शहन्शाह से पाया
जो हैदरे–कर्रार कि मौला है हमारा
ऐ मुदइयो! ख़ाक को तुम ख़ाक न समझो
इस ख़ाक में मदफ़ूँ शहे बत्हा है हमारा

है ख़ाक से तामीर मज़ारे शहे कौनैन
मअ़मूर इसी ख़ाक से क़िब्ला है हमारा
हम ख़ाक उड़ायेंगे जो वो ख़ाक न पाई
आबाद **रज़ा** जिस पे मदीना है हमारा

ग़म हो गये बेशुमार आक़ा

ग़म होगये बेशुमार आक़ा
बन्दा तेरे निसार आक़ा
बिगड़ा जाता है खेल मेरा
आक़ा, आक़ा सँवार आक़ा
मंझ्धार पे आके नाव टूटी
दे हाथ कि हूँ मैं पार आक़ा
टूटी जाती है पीठ मेरी
लिल्लाह ये बोझ उतार आक़ा
हल्का है अगर हमारा पल्ला
भारी है तेरा वक़ार आक़ा
मज्बूर हैं हम तो फ़िक्र क्या है
तुम को तो है इख़्तियार आक़ा
मैं दूर हूँ तुम तो हो मेरे पास
सुन लो मेरी पुकार आक़ा

मुझ सा कोई ग़मज़दा न होगा
तुमसा नहीं ग़मगुसार आक़ा

गिर्दाब में पड़ गई है कश्ती
डूबा, डूबा उतार आक़ा

तुम वोह कि करम को नाज़ तुमसे
मैं वोह कि बदी को आर आक़ा

फिर मुँह न पड़े कभी ख़िज़ाँ का
दे दे ऐसी बहार आक़ा

जिस की मर्ज़ी ख़ुदा न टाले
मेरा है वोह नामदार आक़ा

है मुल्के ख़ुदा पे जिसका क़ब्ज़ा
मेरा है वोह कामगार आक़ा

सोया किये नाबकार बन्दे
रोया किये ज़ार–ज़ार आक़ा

क्या भूल है उनके होते कहलायें
दुनिया के ये ताज्दार आक़ा

उन के अदना गदा पे मिट जायें
ऐसे ऐसे हज़ार आक़ा

वे अब्रे करम के मेरे धब्बे
ला तग़सिलुहल–बिहार आक़ा
इतनी रहमत रज़ा पे कर लो
ला यक़्रुबुहुल बवार आक़ा

मुहम्मद मज़्हरे कामिल है

मुहम्मद मज़्हरे कामिल है हक़ की शाने इ़ज़्ज़त का
नज़र आता है इस कस्रत में कुछ अन्दाज़ वह्दत का
यही है अस्ले आ़लम माद्दा ईजादे ख़िलक़त का
यहाँ वह्दत में बरपा है अ़जब हंगामा कस्रत का
गदा भी मुंतज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दअ़्वत का
ख़ुदा दिन ख़ैर से लाये सख़ी के घर ज़ियाफ़त का
गुनह मग़्फ़ूर, दिल रौशन ख़ुनुक आँखें, जिगर ठन्डा
तआ़लल्लाह माहे तैबा आ़लम तेरी तल्अ़त का
न रक्खी गुल के जोशे हुस्न ने गुल्शन में जा बाक़ी
चटकता फिर कहाँ ग़ुन्चा कोई बाग़े रिसालत का
बढ़ा यह सिलसिला रहमत का दौरे ज़ुल्फ़े–वाला में
तसल्सुल का ले कोसों रहगया इस्याँ की ज़ुल्मत का

सफ़े मातम उठे ख़ाली हो जिन्दाँ टूटें ज़ंजीरें
गुनहगारो चलो मौला ने दर खोला है जन्नत का

सिखाया है ये किस गुस्ताख़ ने आईना को या रब
नज़ारा रूए जानाँ का बहाना कर के हैरत का

इधर उम्मत की ह़स्रत पर उधर ख़ालिक़ की रह़मत पर
निराला तौर होगा गर्दिशे चश्मे शफ़ाअ़त का

बढ़ीं इस दर्जा मौजें कस्रते अफ़्ज़ाल वाला की
किनारा मिल गया इस नह्र से दरियाए वह़दत का

ख़मे ज़ुल्फ़े नबी साजिद है मेहराबे दो अब्रू में
कि या रब तू ही वाली है सियह–काराने उम्मत का

मदद ऐ जोशिशे गिर्या बहा दे कोह और सह्रा
नज़र आजाये जल्वा बे हिजाब उस पाक तुर्बत का

हुए कम्ख़्वाबिए हिज्राँ में सातों पर्दे कमख़्वाबी
तसव्वुर ख़ूब बाँधा आँखों ने अस्तारे तुर्बत का

यक़ीं है वक़्ते जल्वा लग़ज़िशें पाये–निगह पाये
मिले जोशे सफ़ाये जिस्म से पा–बोस ह़ज़्रत का

यहाँ छिड़का नमक वाँ मरहमे–काफ़ूर हाथ आया
दिले ज़ख़्मी नमक परवर्दा है किसकी मलाह़त का

इलाही मुन्तज़िर हूँ वोह ख़रामे–नाज़ फ़रमायें
बिछा रक्खा है फ़र्श आँखों ने कम ख़्वाबे बसारत का

न हो आक़ा को सज्दा आदमो यूसुफ़ को सज्दा हो
मगर सद्दे ज़रायेअ़ दाब है अपनी शरीअ़त का

ज़बाने ख़ार किस किस दर्द से उनको सुनाती है
तड़पना दश्ते तैबा में जिगर अफ़गारे फ़ुर्क़त का

सिरहाने उनके बिस्मिल के ये बेताबी का मातम है
शहे कौसर तरह्हुम तिश्ना जाता है ज़ियारत का

जिन्हें मर्क़द में ता हश्र उम्मती कह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उनमें सद्क़ा अपनी रह़मत का

वो चमकीं बिजलियाँ या रब तजल्ली–हाए जानाँ से
कि चश्मे तूर का सुर्मा हो दिल–मुश्ताक़े रूयत का

रज़ाए ख़स्ता जोशे बहरे इस्याँ से न घबराना
कभी तो हाथ आजाएगा दामन उनकी रह़मत का

लुत्फ़ उनका आम हो ही जायेगा

लुत्फ़ उनका आम हो ही जायेगा
शाद हर नाकाम हो ही जायेगा
जान दे दो वअ़्दए दीदार पर
नक़्द अपना दाम हो ही जायेगा
शाद है फ़िर्दौस यानी एक दिन
क़िस्मते ख़ुद्दाम हो ही जायेगा
याद रह जायेंगी ये बे–बाकियाँ
नफ़्स तू तो राम हो ही जायेगा
बे निशानों का निशाँ मिटता नहीं
मिटते–मिटते नाम हो ही जायेगा
यादे गेसू ज़िक्रे हक़ है आह कर
दिल में पैदा लाम हो ही जायेगा
एक दिन आवाज़ बदलेंगे ये साज़
चहचहा कोहराम हो ही जायेगा
साइलो दामन सख़ी का थाम लो
कुछ न कुछ इन्आ़म हो ही जायेगा
यादे अबरू करके तड़पो बुलबुलो
टुकड़े टुकड़े दाम हो ही जायेगा

मुफ़्लिसो उन की गली में जा पड़ो
बाग़े ख़ुल्द इक्राम हो ही जायेगा
गर यूंही रहमत की तावीलें रहीं
मद्ह हर इल्ज़ाम हो ही जायेगा
बादा ख्वारी का समाँ बंधने तो दो
शैख़ दुर्द–आशाम हो ही जायेगा
ग़म तो उनको भूलकर लिपटा है यूँ
जैसे अपना काम हो ही जायेगा
मिट कि गर यूंही रहा क़र्ज़े हयात
जान का नीलाम हो ही जायेगा
आक़िलो उन की नज़र सीधी रहे
बौरवों का भी काम हो ही जायेगा
अब तो लाई है शफ़ाअत अफ़्व पर
बढ़ते–बढ़ते आम हो ही जायेगा
ऐ **रज़ा** हर काम का इक वक़्त है
दिल को भी आराम हो ही जायेगा

लम याति नज़ीरुक

लम याति नज़ीरु–क फ़ी नज़रिन मिसले तू न शुद पैदा जाना
जग्राज को ताज तोरे सर सोहे तुझ को शहे दोसरा जाना

अलबह्रु अला वल्मौजु तगा मन बे कसो तूफ़ाँ होशरुबा
मंझधार में हूँ बिगड़ी है हवा मोरी नैया पार लगा जाना

या शम्सु नज़रति इला लैली चू ब–तैबा रसी अर्ज़े बोकुनी
तोरी जोत की झल झल जग में रची मेरी शब ने न दिन होना जाना

लक बदरुन फ़िल् वज्हिल् अज्मल ख़त हालए मह ज़ुल्फ़ अब्रे अजल
तोरे चन्दन चन्द्र परो कुण्डल रहमत की भरण बरसा जाना

अना फ़ी अतशिंव व सख़ाक अतम् ऐ गेसूए पाक ऐ अब्रे करम
बरसन हारे रिमझिम रिमझिम दो बूंद इधर भी गिरा जाना

या क़ाफ़ि–लती ज़ीदी अज्लक् रहमे बर हसरते तिश्ना–लबक
मोरा जियरा लरजे दरक–दरक तैबा से अभी न सुना–जाना

वाहन लिसुवैआतिन् ज़हबत् आँ अह्दे हुज़ूरे बारगहत
जब याद आवत मोहे कर न परत दरदा वो मदीने का जाना

अल्क़ल्बु शजिंव् वल्हम्मु शुजूं दिल जार चुनाँ जाँ ज़ेर चुनूँ
पति अपनी बिपत मैं का से कहूँ मेरा कौन है तेरे सिवा जाना

अर्रूहु फ़िदा–क फ़ज़िद हर्क़ा यक शोला दिगर बरज़न इश्क़ा
मोरा तन, मन, धन सब फूँक दिया ये जान भी प्यारे जला जाना

बस ख़ामए ख़ामे नवाए **रज़ा** ना ये तर्ज़ मेरी ना ये रंग मेरा
इरशादे अहिब्बा नातिक़ था नाचार इस राह पड़ा जाना

न आसमाँ को यूँ

न आस्मान को यूँ सर–कशीदा होना था
हुज़ूरे ख़ाके मदीना ख़मीदा होना था

अगर गुलों को ख़िज़ाँ ना–रसीदा होना था
किनारे ख़ारे मदीना दमीदा होना था

हुज़ूर उन के ख़िलाफ़े अदब थी बेताबी
मेरी उम्मीद तुझे आरमीदा होना था

नज़ारा ख़ाके मदीना का और तेरी आँख
न इस क़दर भी क़मर शोख़–दीदा होना था

किनारे ख़ाके मदीना में राहतें मिलतीं
दिले हज़ीं तुझे अश्के चकीदा होना था

पनाहे दामने दश्ते हरम में चैन आता
न सब्रे दिल को ग़ज़ाले रमीदा होना था

ये कैसे खुलता कि उनके सिवा शफ़ीअ़ नहीं
अ़बस न औरों के आगे तपीदा होना था

हिलाल कैसे न बनता कि माहे कामिल को
सलामे अबरूए शह में ख़मीदा होना था
ल–अमल अत्र जहन्नम था वअदए अजली
न मुन्किरों का अ़बस बद अकीदा होना था
नसीम क्यों न शमीम उनकी तैबा से लाती
कि सुबहे गुल को गरीबाँ–दरीदा होना था
टपकता रंगे–जुनूँ इश्क़े शह में हर गुल से
रगे बहार को नश्तर–रसीदा होना था
बजा था अ़र्श पे ख़ाके मज़ारे–पाक को नाज़
कि तुझ सा अ़र्श–नशीं आफरीदा होना था
गुज़रते जान से एक शोरे "या हबीब" के साथ
फ़ुग़ां को नालए हल्क़े बुरीदा होना था
मेरे करीम गुनह ज़ह्र है मगर आख़िर
कोई तो शह्दे शफ़ाअत–चशीदा होना था
जो संगे दर पे जबीं–साइयों में था मिटना
तो मेरी जान शरारे जहीदा होना था
तेरी क़बा के न क्यों नीचे–नीचे दामन हों
कि खाक्सारों से याँ कब कशीदा होना था
रज़ा जो दिल को बनाना था जलवागाहे हबीब
तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

शोरे महे नौ सुन कर

शोरे महे नौ सुनकर तुझ तक मैं दवाँ आया
साक़ी मैं तेरे सदक़े मय दे रमज़ाँ आया
इस गुल के सिवा हर गुल बागोशे–गिराँ आया
देखे ही गी ऐ बुलबुल जब वक़्ते फ़ुग़ाँ आया
जब बामे तजल्ली पर वोह नय्यरे जाँ आया
सर था जो गिरा झुक कर दिल था जो तपाँ आया
जन्नत को ह़रम समझा आते तो यहाँ आया
अब तक के हर एक का मुँह कहता हूँ कहाँ आया
तैबा के सिवा सब बाग़ पामाले फ़ना होंगे
देखोगे चमन वालो! जब अ़ह्दे ख़िज़ाँ आया
सर और वो संगे दर आँख और वो बज़्मे नूर
ज़ालिम को वतन का ध्यान आया तो कहाँ आया
कुछ नअ़त के तब्क़े का आ़लम ही निराला है
सकते में पड़ी है अ़क़्ल चक्कर में गुमाँ आया
जलती थी ज़मीं कैसी थी धूप कड़ी कैसी
लो वो क़दे–बे–सायां अब साया–कुनां आया
तैबा से हम आते हैं कहिये तो जिनां वालो
क्या देख के जीता है जो वाँ से यहाँ आया

ले तौक़े अ़लम से अब आज़ाद हो ऐ क़ुमरी
चिट्ठी लिये बख़्शिश की वो सर्वे रवाँ आया
नामा से रज़ा के अब मिट जाओ बुरे कामो
देखो मेरे पल्ले पर वो अच्छे मियाँ आया
बदकार **रज़ा** ख़ुश हो बद काम भले होंगे
वो अच्छे मियाँ प्यारा अच्छों का मियाँ आया

ख़राब हाल किया

ख़राब हाल किया दिल को पुर मलाल किया
तुम्हारे कूचे से रुख़सत किया निहाल किया
न रूए गुल अभी देखा न बूए गुल सूँघी
क़ज़ा ने लाके क़फ़स में शिकस्ता बाल किया
वो दिल कि ख़ूँ शुदा अरमाँ थे जिसमें मल डाला
फ़ुग़ां कि गोरे शहीदाँ को पायेमाल किया
ये राय क्या थी वहाँ से पलटने की ऐ नफ़स
सितमगर उल्टी छुरी से हमें हलाल किया
ये कबकी मुझसे अ़दावत थी तुझ को ऐ ज़ालिम
छुड़ा के संगे दरे पाक सरो बाल किया

चमन से फेंक दिया आशियानए बुलबुल
उजाड़ा ख़ानए बेकस बड़ा कमाल किया
तेरा सितम्ज़दा आँखों ने क्या बिगाड़ा था
यह क्या समाई कि दूर उनसे वोह जमाल किया
हुज़ूर उन के ख़्याले वतन मिटाना था
हम आप मिट गए अच्छा फ़रागे़ बाल किया
न घर का रक्खा न उस दर का हाए नाकामी
हमारी बेबसी पर भी न कुछ ख़्याल किया
जो दिलने मरके जलाया था मिन्नतों का चराग़
सितम कि अर्ज़ रहे स़र स़रे ज़वाल किया
मदीना छोड़ के वीराना हिन्द का छाया
ये कैसा हाय हवासों ने इख़्तेलाल किया
तू जिस के वास्ते छोड़ आया तैबा सा महबूब
बता तो उस सितम आरा ने क्या निहाल किया
अभी अभी तो चमन में थे चहचहे नागाह
ये दर्द कैसा उठा जिसने जी निढाल किया
इलाही सुनले **रज़ा** जीते जी कि मौला ने
सगाने कूचा में चेहरा मेरा बहाल किया

बन्दा मिलने को क़रीब

बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया
लमअ़ए बातिन में गुमने जल्वए ज़ाहिर गया

तेरी मर्ज़ी पा गया सूरज फिरा उलटे कदम
तेरी उंगली उठ गयी मह का कलेजा चिर गया

बढ़ चली तेरी ज़िया अन्धेर आ़लम से घटा
खुल गया गेसू तेरा रहमत का बादल घिर गया

बंध गयी तेरी हवा सावहा में ख़ाक उड़ने लगी
बढ़ चली तेरी ज़िया आतिश पे पानी फिर गया

तेरी रहमत से सफीयुल्लाह का बेड़ा पार था
तेरे सदक़े से नजीयुल्लाह का बज्रा तिर गया

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुज्रे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थरथरा कर गिर गया

मोमिन उनका क्या हुआ अल्लाह उसका हो गया
काफ़िर उनसे क्या फिरा अल्लाह ही से फिर गया

वह कि उस दर का हुआ ख़ल्क़े ख़ुदा उसकी हुई
वह कि उस दर से फिरा अल्लाह उस से फिर गया

मुझ को दीवाना बताते हो मैं वो होश्यार हूँ
पाँव जब तौफ़े हरम में थक गये सर फिर गया

रहमतुल् लिल् आलमीं आफत में हूँ कैसी करूँ
मेरे मौला मैं तो इस दिल से बला में घिर गया
मैं तेरे हाथों के सदके कैसी कंकरियाँ थीं वो
जिनसे इतने काफ़िरों का दफ़अतन मुँह फिर गया
क्यों जनाबे बू–हुरैरा था वो कैसा जामे शीर
जिससे सत्तर साहिबों का दूध से मुँह फिर गया
वास्ता प्यारे का ऐसा हो कि जो सुन्नी मरे
यूँ न फ़रमायें तेरे शाहिद कि वह फ़ाजिर गया
अ़र्श पर धूमें मचीं वह मोमिने सालेह मिला
फ़र्श से मातम उठे वो तय्यिबो ताहिर गया
अल्लाह अल्लाह ये उलूवे ख़ासे अ़ब्दियत **रज़ा**
बन्दा मिलने को क़रीबे हज़रते क़ादिर गया
ठोकरें खाते फिरोगे उनके दर पर पड़ रहो
क़ाफ़िला तो ऐ **रज़ा** अव्वल गया आख़िर गया

निअ़्मतें बाँटता

निअ़्मतें बाँटता जिस सम्त वो ज़ीशान गया
साथ ही मुन्शीए रहमत का क़लमदान गया
ले ख़बर जल्द कि गैरों की तरफ़ ध्यान गया
मेरे मौला मेरे आक़ा तेरे क़ुरबान गया

आह वो आँख कि नाकामे तमन्ना ही रही
हाय वो दिल जो तेरे दर से पुर अरमान गया
दिल है वो दिल जो तेरी याद से मअ़मूर रहा
सर है वो सर जो तेरे क़दमों पे .क़ुरबान गया
उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिलहम्द मैं दुनिया से मुसल्मान गया
और तुम पर मेरे आक़ा की इनायत न सही
नज्दियो कल्मा पढ़ाने का भी एहसान गया
आज ले उनकी पनाह आज मदद माँग उनसे
फिर न मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया
उफ़ रे मुन्किर ये बढ़ा जोशे तअ़स्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कमबख़्त के ईमान गया
जानो दिल, होशो ख़िरद सब तो मदीने पहुँचे
तुम नहीं चलते **रज़ा** सारा तो सामान गया

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं

ताबे मिर्आते सहर गरदे बयाबाने अ़रब
ग़ाज़ए रूए क़मर, दूदे चराग़ाने अ़रब
अल्लाह अल्लाह बहारे चमनिस्ताने अ़रब
पाक हैं लौसे ख़िज़ाँ से गुलो रैहाने अ़रब

जो शिशे अब्र से ख़ूने गुले फ़िरदौस गिरे
छेड़ दे रग को अगर ख़ारे बयाबाने अ़रब

तिश्नए नहरे जिनाँ हर अ़रबीओ अ़ज्मी
लबे हर नह्रे जिनाँ तिश्नए नेसाने अ़रब

तौक़े ग़म आप हवाए परे क़ुमरी से गिरे
अगर आज़ाद करे सर्वे ख़रामाने अ़रब

मेह्र मीज़ाँ में छुपा हो तो ह़मल में चमके
डाले एक बूंद शबे–दय में जो बाराने अ़रब

अ़र्शसे मुज़्दए बिल्क़ीसे शफ़ाअ़त लाया
ताइरे सिद्रा नशीं मुर्ग़े सुलैमाने अ़रब

हुस्ने यूसुफ़ पे कटीं मिस्र में अंगुश्ते ज़नाँ
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अ़रब

कूचे कूचे में महकती है यहाँ बूए क़मीस
यूसुफ़िस्ताँ है हर एक ग़ोशए कन्आ़ने अ़रब

बज़्मे क़ुद्सी में है यादे लबे जाँ बख़्शे हुज़ूर
आ़लमे नूर में है चश्मए हैवाने अ़रब

पाये जिब्रील ने सरकार से क्या क्या अल्क़ाब
ख़ुस्रवे ख़ैले मलक, ख़ादिमे सुल्ताने अ़रब

बुलबुलो नीलपरो कब्क बनो परवानो!
महो ख़ुर्शीद पे हँसते हैं चरागाने अ़रब

हूर से क्या कहें? मूसा से मगर अर्ज़ करें
कि है खुद हुस्ने अज़ल तालिबे जानाने अ़रब

करमे नअ़त के नज़दीक तो कुछ दूर नहीं
कि **रज़ाए** अ़ज्मी हो सगे हस्साने अ़रब

फिर उठा वलवलए यादे मुग़ीलाने अ़रब

फिर उठा वल्वलए यादे मुग़ीलाने अ़रब
फिर खिंचा दामने दिल सूए बयाबाने अ़रब

बागे फ़िर्दौस को जाते हैं हज़ाराने अ़रब
हाय सहराए अ़रब हाय बयाबाने अ़रब

मीठी बातें तेरी दीने अ़जम ईमाने अ़रब
नम्कीं हुस्न तेरा जाने अजम शाने अ़रब

अब तो है गिरयए ख़ूँ गौहरे दामाने अ़रब
जिसमें दो लाल थे ज़हरा के वो थी काने अ़रब

दिल वही दिल है जो आँखों से हो हैराने अ़रब
आँखें वो आँखें हैं जो दिल से हों क़ुरबाने अ़रब

हाय किस वक़्त लगी फाँस अ़लम की दिल में
कि बहुत दूर रहे ख़ारे मुग़ीलाने अ़रब

फ़स्ले गुल लाख न हो वस्ल की रख आस हज़ार
फूलते फलते हैं बे-फ़स्ल गुलिस्ताने अरब

सदक़े होने क़ो चले आते हैं लाखों गुलज़ार
कुछ अ़जब रंग से फूला है गुलिस्ताने अ़रब

अ़न्दलीबी पे झगड़ते हैं कटे मरते हैं
गुलो बुलबुल को लड़ाता है गुलिस्ताने अ़रब

सदक़े रह़मत के कहाँ फूल कहाँ ख़ार का काम
ख़ुद है दामन कशे बुलबुल गुले ख़न्दाने अ़रब

शादिए ह़श्र है सदक़े में छुटेंगे क़ैदी
अ़र्श पर धूम से है दअ़वतें मेहमाने अ़रब

चर्चे होते हैं ये कुम्हलाए हुए फूलों में
क्यों ये दिन देखते पाते जो बयाबाने अ़रब

तेरे बे-दाम के बन्दे हैं रईसाने अ़जम
तेरे बे-दाम के बन्दी हैं हजाराने अ़रब

हश्त ख़ुल्द आयें वहाँ कस्बे लताफ़त को रज़ा
चार दिन बरसे जहाँ अब्रे बहाराने अ़रब

जोबनों पर है बहार

जोबनों पर है बहारे चमन आराई दोस्त
ख़ुल्द का नाम न ले बुलबुले शैदाई दोस्त
थक के बैठे तो दरे दिल पे तमन्नाई दोस्त
कौन से घर का उजाला नहीं ज़ेबाई दोस्त

अ़रसए हश्र कुजा मौक़फ़े महमूद कुजा
साज़ हंगामों से रखती नहीं यक्ताई दोस्त
मेहर किस मुँह से जुलू–दारीए जानाँ करता
साये के नाम से बेज़ार है यक्ताई दोस्त

मरने वालों को यहाँ मिलती है उम्रे–जावेद
ज़िन्दा छोड़ेगी किसी को न मसीहाई दोस्त
उनको यक्ता किया और ख़ल्क़ बनाई यानी
अन्जुमन कर के तमाशा करें तन्हाई दोस्त

कअ़बा व अ़र्श में कोहराम है नाकामी का
आह किस बज़्म में है जल्वए यक्ताई दोस्त
हुस्ने बे–पर्दा के पर्दे ने मिटा रक्खा है
ढूँढने जायें कहाँ जल्वए हरजाई दोस्त

शौक़ रोके न रुके पाँव उठाये न उठे
कैसी मुश्किल में हैं अल्लाह तमन्नाई दोस्त

शर्म से झुकती है मेहराब, कि साजिद हैं हुज़ूर
सज्दे करवाती है कअ़बा से जबीं–साई दोस्त

ताज वालों का यहाँ ख़ाक पे माथा देखा
सारे दाराओं की दारा हुई दाराई दोस्त

तूर पर कोई, कोई चर्ख़ पे, यह अ़र्श से पार
सारे बालाओं पे बाला रही बालाई दोस्त

अन्त फ़ी हिम ने अ़दू को भी लिया दामन में
ऐशे–जावेद मुबारक तुझे शैदाई दोस्त

रंजे अअ़दा का **रज़ा** चारा ही क्या है जब उन्हें
आप गुस्ताख़ रखे हि़ल्मो शकेबाई दोस्त

तूबा में जो सब से ऊँची

तूबा में जो सब से ऊँची नाज़ुक सीधी निकली शाख़
मांगूँ नअ़ते नबी लिखने को रूहे क़ुदस से ऐसी शाख़

मौला गुलबुने रह़मत ज़हरा सिब्तैन उसकी कलियाँ फूल
सिद्दीक़ो फ़ारूक़ो उस्माँ, हैदर हर एक उसकी शाख़

शाख़े क़ामते शह में ज़ुल्फ़ो चश्मो रुख़्सारो लब में
सुंबुल, नर्गिस, गुल, पंखड़ियाँ क़ुदरत की क्या फूली शाख़

अपने इन बाग़ों का सद्क़ा वह रह़मत का पानी दे
जिससे नख़्ले दिल में हो पैदा प्यारे तेरी विला की शाख़

यादे रुख़ में आहें करके बन में मैं रोया आई बहार
झूमीं नसीमें नेसाँ बरसा कलियाँ चटकीं महकी शाख़
ज़ाहिरो बातिन अव्वलो आख़िर ज़ेबे फ़ुरुओ ज़ैने उसूल
बाग़े रिसालत में है तू ही गुल ग़ुन्चा जड़ पत्ती शाख़
आले अह़मद ख़ुज़ बेयदी या सय्यदे हमज़ा कुन मददी
वक़्ते ख़िज़ाने उम्रे **रज़ा** हो बरगे हुदा से न आ़री शाख़

ज़हे इ़ज़्ज़तो एअ़्तिलाए

ज़हे इ़ज़्ज़तो एअ़्तिलाए मुह़म्मद ﷺ
कि है अ़र्शे हक़ ज़ेरे पाये मुह़म्मद ﷺ
मकाँ अ़र्श उनका फ़लक फ़र्श उनका
मलक ख़ादिमाने सराये मुह़म्मद ﷺ
ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आ़लम
ख़ुदा चाहता है रज़ाये मुह़म्मद ﷺ
अ़जब क्या अगर रह़्म फ़रमा ले हम पर
ख़ुदाये मुह़म्मद बराये मुह़म्मद ﷺ
मुह़म्मद बराये जनाबे इलाही
जनाबे इलाही बराये मुह़म्मद ﷺ

बसी इत्रे महबूबिये किब्रिया से
अ़बाये मुहम्मद क़बाये मुहम्मद

बहम अ़ह्द बाँधे हैं वस्ले अ़बद का
रज़ाये ख़ुदा और रज़ाये मुहम्मद

दमे नज़्अ़ जारी हो मेरी ज़बाँ पर
मुहम्मद मुहम्मद ख़ुदाये मुहम्मद

अ़साये कलीम अज़दहाये–ग़ज़ब था
गिरों का सहारा अ़साये मुहम्मद

मैं क़ुरबान क्या प्यारी प्यारी है निस्बत
ये आने ख़ुदा वो ख़ुदाये मुहम्मद

मुहम्मद का दम ख़ास बहरे ख़ुदा है
सिवाये मुहम्मद बराये मुहम्मद

ख़ुदा उनको किस प्यार से देखता है
जो आँखें हैं मह्वे लिक़ाये मुहम्मद

जुलू में इजाबत ख़वासी में रहमत
बढ़ी किस तुज़ुक से दुआ़ये मुहम्मद

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया
बढ़ी नाज़ से जब दुआये मुहम्मद

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा
दुल्हन बनके निकली दुआए मुहम्मद ﷺ
रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिये
कि है रब्बे सल्लिम सदाये मुहम्मद ﷺ

ऐ शाफ़ेअ़े उमम

ऐ शाफ़ेअ़े उमम शहे ज़ी–जाह ले ख़बर
लिल्लाह ले ख़बर मेरी लिल्लाह ले ख़बर
दरिया का जोश नाव न बेड़ा न नाख़ुदा
मैं डूबा तू कहाँ है मेरे शाह ले ख़बर
मन्ज़िल कड़ी है रात अंधेरी, मैं नाबलद
ऐ ख़िज़्र ले ख़बर मेरी ऐ माह ले ख़बर
पहुँचे पहुँचने वाले तो मन्ज़िल मगर शहा
उनकी जो थक के बैठे सरे–राह ले ख़बर
जंगल दरिन्दों का है मैं बे–यार शब क़रीब
घेरे हैं चार सम्त से बद–ख़्वाह ले ख़बर
मन्ज़िल नई अ़ज़ीज़ जुदा लोग ना–शनांस
टूटा है कोहे ग़म में परे–काह ले ख़बर
वो सख़्तियाँ सवाल की वो सूरतें मोहीब.
ऐ ग़मज़दों के हाल से आगाह ले ख़बर

मुज्रिम को बारगाहे अ़दालत में लायें हैं
तकता है बे–कसी में तेरी राह ले ख़बर
अहले अ़मल को उनके अ़मल काम आयेंगे
मेरा है कौन तेरे सिवा आह ले ख़बर
पुर ख़ार राह बरहना पा तिश्ना आब दूर
मौला पड़ी है आफ़ते जाँ–काह ले ख़बर
बाहर ज़बानें प्यास से हैं आफ़ताब गर्म
कौसर के शाह, कस्सरहुल्लाह ले ख़बर
माना कि सख़्त मुज्रिमो नाकारा है **रज़ा**
तेरा ही तो है बन्दए दरगाह ले ख़बर

बन्दा क़ादिर का

बन्दा क़ादिर का भी क़ादिर भी, है अ़ब्दुलक़ादिर
सिर्रे बातिन भी है ज़ाहिर भी, है अ़ब्दुल क़ादिर
मुफ़्तिये शरअ़ भी है क़ाज़िये मिल्लत भी है
इल्मे असरार से माहिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
मम्बअ़े फ़ैज़ भी है मज्मअ़े अफ़ज़ाल भी है
महरे इरफ़ाँ का मुनव्विर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
क़ुत्बे अब्दाल भी है मेह्वरे इर्शाद भी है
मरकज़े दायरए सिर्र भी है अ़ब्दुल क़ादिर

सिल्के इरफ़ाँ की ज़िया है यही दुर्रे मुख़्तार
फ़ख़्रे अश्बाहो नज़ाइर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
उसके फरमान हैं सब शारेहे हुक्मे शारेअ़
मज़्हरे नाहियो आमिर भी है अब्दुल क़ादिर
जी–तसर्रुफ़ भी है माज़ून भी मुख़्तार भी है
कारे आलम का मुदब्बिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर
रश्के बुलबुल है **रज़ा** लालए सद दाग़ भी है
आप का वासिफ़ो ज़ाकिर भी है अ़ब्दुल क़ादिर

गुज़रे जिस राह से वह

गुज़रे जिस राह से वो सय्यिदे वाला हो कर
रह गई सारी ज़मीं अम्बरे–सारा हो कर
रुख़े–अन्वर की तजल्ली जो क़मर ने देखी
रह गया बोसा देहे नक़्शे कफ़े पा हो कर
वाये महरूमिए क़िस्मत कि मैं फिर अबकी बरस
रह गया हमरहे ज़व्वारे मदीना हो कर
चमने तैबा है वो बाग़ कि मुर्ग़े सिद्रा
बरसों चहके हैं जहाँ बुलबुले–शैदा हो कर
सर–सरे दश्ते मदीना का मगर आया ख़्याल
रश्के गुल्शन जो बना ग़ुन्चए दिल वा हो कर

गोशे शह कहते हैं फ़रियाद–रसी को हम हैं
वअ़दए चश्म है बख़्शायेंगे गोया हो कर
पाये शह पर गिरे या रब तपिशे मेह्र से जब
दिले–बेताब उड़े ह़श्र में पारा हो कर
है ये उम्मीद **रज़ा** को तेरी रह़मत से शहा
न हो ज़िन्दानिए दोज़ख़ नेरा बन्दा हो कर

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे

नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आ़रिज़
ज़ुल्मते हश्र को दिन कर दे नहारे आ़रिज़
मैं तो क्या चीज़ हूँ ख़ुद साहबे .क़ुरआँ को शहा
लाख मुस्ह़फ़ से पसन्द आयी बहारे आ़रिज़
जैसे क़ुरआन है विर्द उस गुले मह़बूबी का
यूं ही .क़ुरआँ का वज़ीफ़ा है वक़ारे आ़रिज़
गरचे .क़ुरआँ है न .क़ुरआँ की बराबर लेकिन
कुछ तो है जिस पे है वोह मद्ह़ निगारे आ़रिज़
तूर क्या अ़र्श जले देख के वो जलवए गर्म
आप आ़रिज़ हो मगर आइना–दारे आ़रिज़
तुर्फ़ा आ़लम है वो .क़ुरआन इधर देखें उधर
मुस्ह़फ़े पाक हो हैराने बहारे आ़रिज़

तर्जेमा है ये सिफ़त का वो ख़ुद आईनए ज़ात
क्यों न मुसहफ़ से ज़्यादा हो वक़ारे आरिज़
जल्वा फ़रमायें रुख़े दिल की सियाही मिट जाये
सुबह हो जाये इलाही शबे तारे आरिज़
नामे हक़ पर करे महबूब दिलो जाँ क़ुरबाँ
हक़ करे अ़र्श से ता फ़र्श निसारे आरिज़
मुश्क–बू ज़ुल्फ़ से रुख़ चेहरे से बालों में शुआअ़
मोअ़जेज़ा है हल्बे ज़ुल्फ़ो ततारे आरिज़
हक़ ने बख़्शा है करम नज़रे गदायाँ हो क़बूल
प्यारे एक दिल है वो करते हैं निसारे आरिज़
आह बे माएगीए दिल कि **रज़ाए** मुहताज
ले कर एक जान चला बहरे निसारे आरिज़

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ

तुम्हारे ज़र्रे के परतौ सितारहाए फ़लक
तुम्हारे नअ़ल की नाक़िस मसल ज़ियाए फ़लक
अगरचे छाले सितारों से पड़ गये लाखों
मगर तुम्हारी तलब में थके न पाये फ़लक
सरे फ़लक न कभी ता–ब–आस्ताँ पहुँचा
कि इब्तेदाए बुलन्दी थी इनतिहाये फ़लक

ये मिट के उनकी रविश पर हुआ ख़ुद उनकी रविश
कि नक़्शे पा है ज़मीं पर न सौते पाये फ़लक
तुम्हारी याद में गुज़री थी जागते शब भर
चली नसीम हुये बन्द दीद–हाये फ़लक
न जाग उठें कहीं अह्ले बक़ीअ़ कच्ची नींद
चला ये नर्म न निकली सदाये पाए फ़लक
ये उनके जलवे ने कीं गर्मियाँ शबे इसरा
कि जब से चर्ख़ में हैं नुक़रओ तिलाये फ़लक
मेरे ग़नी ने जवाहिर से भर दिया दामन
गया जो कासए मह ले के शब गदाये फ़लक
रहा जो क़ानिअ़ यक नाने सोख़्ता दिन भर
मिली हुज़ूर से काने गुहर जज़ाये फ़लक
तजम्मुले शबे इसरा अभी सिमट न चुका
कि जब से वैसी ही कोतल हैं सब्ज़हाये फ़लक
ख़िताबे ह़क़ भी है दर बाबे ख़ल्क़ मिन अजलिक
अगर इधर से दमे ह़म्द है सदाये फ़लक
ये अहले–बैत की चक्की से चाल सीखी है
रवाँ है बे मददे दस्त आसियाये फ़लक
रज़ा ये नअ़ते नबी ने बुलन्दियाँ बख़्शीं
लक़ब ज़मीने फ़लक का हुआ समाए फ़लक

क्या ठीक हो रुख़े नबवी पर

क्या ठीक हो रुख़े नबवी पर मिसाले गुल
पामाले जल्वए कफ़े पा है जमाले गुल

जन्नत है उनके जल्वे से जूयाये रंगो बू
ऐ गुल हमारे गुल से है गुल को सवाले गुल

उनके क़दम से सलअ़ए–ग़ाली हुई जिनाँ
वल्लाह मेरे गुल से है जाहो जलाले गुल

सुनता हूँ इश्क़े शाह में दिल होगा ख़ूँ–फ़शाँ
या रब ये मुज़्दा सच हो मुबारक हो फ़ाले गुल

बुलबुल ह़रम को चल ग़मे फ़ानी से फ़ायदा
कब तक कहेगी हाय वो ग़ुन्जो दलाले गुल

ग़म्गीं है शौक़े ग़ाज़ए ख़ाके मदीना में
शबनम से धुल सकेगी न गर्दे मलाले गुल

बुलबुल ये क्या कहा मैं कहां फ़स्ले गुल कहां
उम्मीद रख कि आ़म है जूदो नवाले गुल

बुलबुल घिरा है अब्रे विला मुज़्दा हो कि अब
गिरती है आशियाने पे बरक़े जमाले गुल

या रब हरा–भरा रहे दाग़े जिगर का बाग़
हर मह महे बहार हो हर साल साले गुल

रंगे मिज़ह से कर के ख़जिल यादे शाह में
खींचा है हम ने कॉंटों पे इत्रे जमाले गुल
मैं यादे शह में रोऊँ अ़नादिल करें हुजूम
हर अश्के लाला फ़ाम पे हो एहतेमाले गुल
हैं अ़क्से चेहरा से लबे गुल्गूँ में सुर्ख़ियाँ
डूबा है बद्रे गुल से शफ़क़ में हिलाले गुल
नअ़ते हुज़ूर में मुतरन्निम है अ़न्दलीब
शाख़ों के झूमने से अ़याँ वज्दो हाले गुल
बुलबुल गुले मदीना हमेशा बहार है
दो दिन की है बहार फ़ना है मआले गुल
शैख़ैन इधर निसार ग़नी वो अली उधर
ग़ुन्चा है बुलबुलों का यमीनो शिमाले गुल
चाहे ख़ुदा तो पायेंगे इश्क़े नबी में ख़ुल्द
निकली है नामए दिले पुर ख़ूँ में फ़ाले गुल
कर उस की याद जिससे मिले चैने अ़न्दलीब
देखा नहीं कि ख़ारे अ़लम है ख़्याले गुल
देखा था ख़्वाबे ख़ारे हरम अ़न्दलीब ने
खट्का किया है आँख में शब भर ख़्याले गुल
उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं
कीजे **रज़ा** को हश्र में ख़न्दाँ मिसाले गुल

सुल्ताने ज़मन फूल

सर ता ब-क़दम है तने सुल्ताने ज़मन फूल
लब फूल, दहन फूल, ज़क़न फूल, बदन फूल
सद्क़े में तेरे बाग़ तो क्या लाये हैं बन फूल
इस ग़ुंचए दिल को भी तो ईमा हो कि बन फूल
तिन्का भी हमारे तो हिलाये नहीं हिलता
तुम चाहो तो हो जाये अभी कोहे मेहन फूल
वल्लाह जो मिल जाये मेरे गुल का पसीना
माँगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल
दिल-बस्ता व ख़ूँ-गश्ता न खुश्बू न लताफ़त
क्यों ग़ुन्चा कहूँ है मेरे आक़ा का देहन फूल
शब याद थी किन दाँतों की शब्नम कि दमे सुब्ह
शोख़ाने बहारी के जड़ाऊ हैं किरन फूल
दन्दानो लबो ज़ुल्फ़ो रुख़े शह के फ़िदाई
हैं दुर्रे अ़दन लअ़ले यमन मुश्के ख़ोतन फूल
बू होके निहाँ हो गये ताबे रुख़े शह में
लो बन गये हैं अब तो हसीनो का दहन फूल
हों बारे गुनह से न ख़जिल दोशे अ़ज़ीज़ाँ
लिल्लाह मेरी नअ़श कर ऐ जाने चमन फूल

दिल अपना भी शैदाई है उस नाख़ुने पा का
इतना भी महे नौ पे न ऐ चर्ख़े कुहन फूल
दिल खोल के ख़ूँ रो ले ग़मे आ़रिज़े शह में
निकले तो कहीं हस्रते ख़ूँ–नाबा शुदन फूल
क्या ग़ाज़ा मला गर्दे मदीना का जो है आज
निखरे हुये जोबन में क़ियामत की फबन फूल
गरमी ये क़ियामत है कि काँटे हैं ज़बाँ पर
बुलबुल को भी ऐ साक़ीए सह्बा व लबन फूल
है कौन कि गिरया करे या फ़ातिहा को आये
बेकस के उठाये तेरी रह्मत के भरन फूल
दिल ग़म तुझे घेरे हैं ख़ुदा तुझको वो चमकाए
सूरज तेरे ख़िर्मन को बने तेरी किरन फूल
क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिसमें हुसैन और हसन फूल

है कलामे इलाही में

है कलामे इलाही में शम्सो ज़ुहा तेरे चेहरए नूर फ़िज़ा की क़सम
क़स्मे शबे तार में राज़ ये था कि ह़बीब की ज़ुल्फ़े दोता की क़सम
तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़ल्क़ को ह़क़ ने जमील किया
कोई तुझ सा हुआ है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े हुस्नो अदा की क़सम

वो ख़ुदा ने है मर्तबा तुझको दिया न किसी को मिले न किसी को मिला
कि कलामे मजीद ने खाई शहा तेरे शहरो कलामो बक़ा की क़सम
तेरा मसनदे नाज़ है अ़र्शे बरीं तेरा महरमे राज़ है रूहे अमीं
तू ही सरवरे हर दोजहाँ है शहा तेरा मिस्ल नहीं है ख़ुदा की क़सम
यही अ़र्ज़ है ख़ालिक़े अर्ज़ो समा वो रसूल हैं तेरे मैं बन्दा तेरा
मुझे उनके जवार में दे वो जगह कि है ख़ुल्द को जिसकी सफ़ा की क़सम
तू ही बन्दों पे करता है लुत्फ़ो अ़ता है तुझी पे भरोसा तुझी से दुआ़
मुझे जल्वए पाके रसूल दिखा तुझे अपने ही इ़ज़्ज़ो उ़ला की क़सम
मेरे गरचे गुनाह हैं हद से सिवा मगर उनसे उम्मीद है तुझ से रजा
तू रहीम है उनका करम है गवाह वो करीम हैं तेरी अ़ता की क़सम
यही कहती है बुलबुले बाग़े जिनाँ कि रज़ा की तरह कोई सह्र बयाँ
नहीं हिन्द में वासिफ़े शाहे हुदा मुझे शोख़ीए तबअ़े **रज़ा** की क़सम

पाट वोह कुछ धार

पाट वोह कुछ धार यह कुछ ज़ार हम
या इलाही क्यों कर उतरें पार हम
किस बला की मय से हैं सरशार हम
दिन ढला होते नहीं हुशियार हम
तुम करम से मुश्तरी हर ऐब के
जिन्से ना मक़बूले हर बाज़ार हम

दुश्मनों की आँख में भी फूल तुम
दोस्तों की भी नज़र में ख़ार हम
लग़ज़िशे पा का सहारा एक तुम
गिरने वाले लाखों ना हन्जार हम
सदक़ा अपने बाज़ुओं का अल्मदद
कैसे तोड़ें यह बूते पिन्दार हम
दम क़दम की ख़ैर ऐ जाने मसीह
दर पे लाये हैं दिले बीमार हम
अपनी रहमत की तरफ़ देखें हुज़ूर
जानते हैं जैसे हैं बदकार हम
अपने मेहमानों का सदक़ा एक बूँद
मर मिटे प्यासे इधर सरकार हम
अपने कूचे से निकाला तो न दो
हैं तो हद भर के ख़ुदाई ख़्वार हम
हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम
हैं सख़ी के माल में हक़दार हम
चाँदनी छिटकी है उन के नूर की
आओ देखें सैर तूरो नार हम
हिम्मत ऐ ज़ोफ़ उनके दर पर गिर के हों
बे तकल्लुफ़ सायए दीवार हम

बा अ़ता तुम शाह तुम मुख़्तार तुम
बे नवा हम ज़ार हम नाचार हम

तुम ने तो लाखों को जानें फेर दीं
ऐसा कितना रखते हैं आज़ार हम

अपनी सत्तारी का या रब वास्ता
हों न रुस्वा बर सरे दरबार हम

इतनी अ़र्ज़े आख़री कह दो कोई
नाव टूटी आ पड़े मंझधार हम

मुँह भी देखा है किसी के अ़फ़्व का
देख ओ इस्याँ नहीं बे यार हम

मैं निसार ऐसा मुसलमाँ कीजिये
तोड़ डालें नफ़्स का ज़ुन्नार हम

कब से फैलाये हैं दामन तेग़े इश्क़
अब तो पायें ज़ख़्म दामनदार हम

सुन्नियत से खटके सब की आँख में
फूल हो कर बन गये क्या ख़ार हम

ना–तवानी का भला हो बन गये
नक़्श प्राये तालिबाने यार हम

दिल के टुकड़े नज़रे हाज़िर लाये हैं
ऐ सगाने कूचए दिलदार हम

किस्मते सौरो हिरा की हिर्स है
चाहते हैं दिल में गहरा ग़ार हम
चश्म पोशी व करम शाने शुमा
कारे मा बे बाकीओ इसरार हम
फ़स्ले गुल सब्ज़ा सबा मस्ती शबाब
छोड़ें किस दिल से दरे ख़म्मार हम
मैकदा छटता है लिल्लाह साक़िया
अब के सागर से न हों हुशियार हम
साक़िए तस्नीम जबतक आ न जायें
ऐ सियह मस्ती न हों हुशियार हम
नाज़िशें करते हैं आपस में मलक
हैं गुलामाने शहे अबरार हम
लुत्फ़ अज़ ख़ुद रफ़्तगी यारब नसीब
हों शहीदे जल्वए रफ़्तार हम
उनके आगे दअ्वए हस्ती रज़ा
क्या बके जाता है यह हर बार हम

आ़रिज़े शम्सो क़मर

आ़रिज़े शम्सो क़मर से भी हैं अन्वर एड़ियां
अ़र्श की आँखों के तारे हैं वो ख़ुश्तर एड़ियां
जा बजा परतौ फ़िगन हैं आस्माँ पर एड़ियां
दिन को हैं ख़ुर्शीद शब को माहो अख़्तर एड़ियां
नज्म गरदूँ तो नज़र आते हैं छोटे और वो पाँव
अ़र्श पर फिर क्यों न हों महसूस लाग़र एड़ियां
दब के ज़ेरे पा न गुंजाइश समाने को रही
बन गया जल्वा कफ़े पा का उभर कर एड़ियां
उनका मंगता पाँव से ठुकरा दे वो दुनिया का ताज
जिसकी ख़ातिर मर गये मुन्इम रगड़ कर एड़ियां
दो क़मर दो पंजए ख़ुर, दो सितारे दस हिलाल
उनके तल्वे, पंजे, नाख़ुन, पाये अत्हर एड़ियां
हाए उस पत्थर से इस सीने की क़िस्मत फोड़िये
बे तकल्लुफ़ जिस के दिल में यूं करें घर एड़ियां
ताजे रूहुल क़ुदस के मोती जिसे सज्दा करें
रखती हैं वल्लाह वो पाकीज़ा गौहर एड़ियां
एक ठोकर में उहुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा
रखती हैं कितना वक़ार *अल्लाहु अक्बर* एड़ियां

चर्ख़ पर चढ़ते ही चाँदी में सियाही आगई
कर चुकी हैं बद्र को टेक्साल बाहर एड़ियां
ऐ **रज़ा** तूफ़ाने मह्शर के तलातुम से न डर
शाद हो हैं कश्तिए उम्मत को लंगर एड़ियां

इश्क़े मौला में हो

इश्क़े मौला में हो ख़ूँ बार कनारे दामन
या ख़ुदा जल्द कहीं आये बहारे दामन
बह चली आँख भी अश्कों की तरह दामन पर
कि नहीं तारे नज़र जुज़ दो सेह तारे दामन
अश्क बरसाऊँ चले कूचए जानां से नसीम
या ख़ुदा जल्द कहीं निकले बुख़ारे दामन
दिल शुदों का ये हुआ दामने अत्हर पे हुजूम
बेदिल आबाद हुआ नामे दयारे दामन
मुश्क–सा ज़ुल्फ़े शहो नूरे फ़िशाँ रूए हुज़ूर
अल्लाह अल्लाह हलबे जैबो ततारे दामन
तुझ से ऐ गुल मैं सितम दीदए दश्ते हिरमां
ख़लिशे दिल की कहूं या ग़मे ख़ारे दामन
अक्स अफ़गन है हिलाले लबे शह जैब नहीं
मेह्रे आरिज़ की शुआयें हैं न तारे दामन

अश्क कहते हैं ये शैदाई की आँखें धो कर
ऐ अदब गर्दे नज़र हो न .ग़ुबारे दामन
ऐ **रज़ा** आह वो बुलबुल कि नज़र में जिसकी
जल्वए जैबे गुल आये न बहारे दामन

रश्के क़मर हूं

रश्के क़मर हूं रंगे रुख़े आफ़ताब हूं
ज़र्रा तेरा जो ऐ शहे गरदूं जनाब हूं
दुर्रे नजफ़ हूं गौहरे पाके ख़ूशाब हूं
यानी तुराबे रह गुज़रे बू तुराब हूं
गर आँख हूं तो अब्र की चश्मे पुरआब हूं
दिल हूं तो बर्क़ का दिले पुर इज़्तेराब हूं
ख़ूनीं जिगर हूं ताइरे बे आशियाँ शहा
रंगे परीदए रुख़े गुल का जवाब हूं
बे अस्लो बे सबात हूं बहरे करम मदद
परवरदए किनारे सराबो हुबाब हूं
इबरत फ़ेज़ा है शर्मे गुनह से मेरा सुकूंत
गोया लबे ख़मोशे लहद का जवाब हूं
क्यों नाला सोज़ लै करूं क्यों ख़ूने दिल पियूं
सीख़े कबाब हूं न मैं जामे शराब हूं

दिल बस्ता बेक़रार जिगर चाक अश्कबार
ग़ुन्चा हूं गुल हूं बर्क़ तपाँ हूं सहाब हूं
दावा है सब से तेरी शफ़ाअ़त पे बेश्तर
दफ़्तर में आ़सियों के शहा इन्तेख़ाब हूं
मौला दुहाई नज़रों से गिर कर जला ग़ुलाम
अश्के मिज़ा रसीदए चश्मे कबाब हूं
मिट जाये यह ख़ुदी तो वो जल्वा कहां नहीं
दर्दा मैं आप अपनी नज़र का हिजाब हूं
सद्क़े हूं उस पे नार से देगा जो मुख़लेसी
बुलबुल नहीं कि आतिशे गुल पर कबाब हूं
क़ालिब तही किये हमा आग़ोश है हिलाल
ऐ शहसवारे तैबा मैं तेरी रेकाब हूं
क्या क्या हैं तुझ से नाज़ तेरे क़स्र को कि मैं
कअ़बा की जान अ़र्शे बरीं का जवाब हूं
शाहा बुझे सक़र मेरे अश्कों से ता न मैं
आबे अ़बस चकीदए चश्मे कबाब हूं
मैं तो कहा ही चाहूं कि बन्दा हूं शाह का
पर लुत्फ़ जब है कह दें अगर वो जनाब "हूं"
हस्रत में ख़ाक बोसिये तैबा की ऐ रज़ा
टपका जो चश्मे मेह्र से वो ख़ूने नाब हूं

पूछते क्या हो

पूछते क्या हो अ़र्श पर यूं गये मुस्तफ़ा कि यूं
कैफ़ के पर जहां जलें कोई बताये क्या कि यूं

क़स्रे दना के राज़ में अ़क़्लें तो गुम हैं जैसी हैं
रूहे क़ुदस से पूछिये तुम ने भी कुछ सुना कि यूं

मैं ने कहा कि जल्वए अस्ल में किस तरह गुमें
सुब्ह ने नूरे मेह्र में मिट के दिखा दिया कि यूं

हाय रे ज़ौक़े बे ख़ुदी दिल जो संभलने सा लगा
छक के महक में फूल की गिरने लगी सबा कि यूं

दिल को दे नूरो दाग़े इश्क़ फिर मैं फ़िदा दो नीम कर
माना है सुन के शक़्क़े माह आँखों से अब दिखा कि यूं

दिल को है फ़िक्र किस तरह मुर्दे जिलाते हैं हुज़ूर
ऐ मैं फ़िदा लगा कर एक ठोकर उसे बता कि यूं

बाग़ में शुकरे वस्ल था हिज्र में हाय हाय गुल
काम है उनके ज़िक्र से ख़ैर वो यूं हुआ कि यूं

जो कहे शेअ़्रो पासे शरअ़् दोनों का हुस्न क्योंकर आए
ला उसे पेशे जल्वए ज़मज़मए **रज़ा** कि यूं

फिर के गली गली तबाह

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाये क्यों
दिल को जो अक़्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाये क्यों

रुख़्सते क़ाफ़िला का शोर ग़श से हमें उठाये क्यों
सोते हैं उनके साये में कोई हमें जगाये क्यों

बार न थे हबीब को पालते ही ग़रीब को
रोयें जो अब नसीब को चैन कहो गंवाये क्यों

यादे हुज़ूर की क़सम ग़फ़्लते ऐश है सितम
ख़ूब हैं क़ैदे ग़म में हम कोई हमें छुड़ाये क्यों

देख के हज़्रते ग़नी फैल पड़े फ़क़ीर भी
छाई है अब तो छावनी हश्र ही आ न जाये क्यों

जान है इश्क़े मुस्तफ़ा रोज़े फ़ुज़ूँ करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाये क्यों

हमतो हैं आप दिलफ़ेगार ग़म में हंसी है नागवार
छेड़ के गुल को नौ बहार ख़ून हमें रुलाये क्यों

या तो यूं ही तड़प के जायें या वही दाम से छुड़ायें
मिन्नते ग़ैर क्यों उठायें कोई तरस जताये क्यों

उनके जलाल का असर दिल से लगाये है क़मर
जो कि हो लोट ज़ख़्म पर दाग़े जिगर मिटाये क्यों

ख़ुश रहे गुल से अ़न्दलीब ख़ारे ह़रम मुझे नसीब
मेरी बला भी ज़िक्र प़र फूल के ख़ार खाये क्यों

गर्दे मलाल अगर धुले दिल की कली अगर खिले
बर्क़ से आँख क्यों जले रोने पे मुस्कुराये क्यों

जाने सफ़र–नसीब को किस ने कहा मज़े से सो
खट्का अगर सह़र का हो शाम से मौत आ़ये क्यों

अब तो न रोक ऐ ग़नी आ़दते सग बिगड़ गई
मेरे करीम पहले ही लुक़्मए तर खिलाये क्यों

राहे नबी में क्या कमी फ़र्शे बयाज़े दीदा की
चादरे ज़िल है मल्गजी ज़ेरे क़दम बिछाये क्यों

संगे दरे हु़ज़ूर से हम को ख़ुदा न सब्र दे
जाना है सर को जा चुके दिल को क़रार आये क्यों

है तो रज़ा निरा सितम जुर्म पे गर लजा़यें हम
कोई बजाये सोज़े ग़म, साज़े तरब बजाये क्यों

यादे वतन सितम किया

यादे वतन सितम किया दश्ते हरम से लाई क्यों
बैठे बिठाये बद नसीब सर पे बला उठाई क्यों

दिल में जो चोट थी दबी हाए ग़ज़ब उभर गई
पूछो तो आहे सर्द से ठन्डी हवा चलाई क्यों

छोड़ के उस हरम को आप बन में ठगों के आ बसो
फिर क़हो सर पे धर के हाथ लुट गई सब कमाई क्यों

बाग़े अ़रब का सर्वे नाज़ देख लिया है वर्ना आज
क़ुमरीए जाने ग़मज़दा गूंज के चहचहाई क्यों

नामे मदीना ले दिया चलने लगी नसीमे खुल्द
सोज़िशे ग़म को हमने भी कैसी हवा बताई क्यों

किसकी निगाह की ह़या फिरती है मेरी आँख में
नरगिसे मस्ते नाज़ ने मुझ से नज़र चुराई क्यों

तूने तो कर दिया तबीब आतिशे सीना का इलाज
आज के दूदे आह में बूए कबाब आई क्यों

फ़िक्रे मआ़श बद बला हौले मआद जां गुज़ा
लाखों बला में फंसने को रूह़ बदन में आई क्यों

हो न हो आज कुछ मेरा ज़िक्र हुज़ूर में हुआ
वर्ना मेरी तरफ़ ख़ुशी देख के मुस्कुराई क्यों

हूरे जिनाँ सितम किया तैबा नज़र में फिर गया
छेड़ के परदए हिजाज़ देस की चीज़ गाई क्यों

ग़फ़्लते शेख़ो शाब पर हँसते हैं तिफ़्ले शीर ख़्वार
करने को गुदगुदी अ़बस आने लगी बहाई क्यों

अ़र्ज़ करूं हुज़ूर से दिल की तो मेरे ख़ैर है
पीटती सर को आरज़ू दश्ते ह़रम से आई क्यों

हस्‌रते नौ का सानेहा सुनते ही दिल बिगड़ गया
ऐसे मरीज़ को **रज़ा** मर्गे जवां सुनाई क्यों

अहले सिरात रूहे अमीं को

अहले सिरात रूहे अमीं को ख़बर करें
जाती है उम्मते नबवी फ़र्श पर करें

इन फ़ित्‌नहाए हश्र से कह दो ह़ज़र करें
नाज़ों के पाले आते हैं रह से गुज़र करें

बद हैं तो आप के हैं भले हैं तो आपके
टुकड़ों से तो यहां के पले रुख़ किधर करें

सरकार हम कमीनों के अत्वार पर न जायँ
आक़ा हुज़ूर अपने करम पर नज़र करें
उनकी हरम के ख़ार कशीदा हैं किस लिए
आँखों में आयें सर पे रहें दिल में घर करें
जालों पे जाल पड़ गये लिल्लाह वक़्त है
मुश्किल कुशाई आप के नाख़ुन अगर करें
मंज़िल कडी है शाने तबस्सुम करम करे
तारों की छाँव नूर के तड़के सफ़र करें
किल्के **रज़ा** है ख़न्जरे ख़ूँ–ख़्वार बर्क़–बार
अअ्दा से कह दो ख़ैर मनायें न शर करें

वो सूए लाला ज़ार

वो सूए लाला ज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं
जो तेरे दर से यार फिरते हैं
दर बदर यूं ही ख़्वार फिरते हैं
आह कल ऐश तो किये हम ने
आज वोह बेक़रार फिरते हैं
उन के ईमा से दोनों बागों पर
ख़ैले लैलो–नहार फिरते हैं

हर चरागे मज़ार पर .कुदसी
कैसे परवाना वार फिरते हैं
उस गली का गदा हूं मैं जिसमें
मांगते ताजदार फिरते हैं
जान हैं जान क्या नज़र आये
क्यों अ़दू गिरदे ग़ार फिरते हैं
फूल क्या देखूं मेरी आँखों में
दश्ते तैबा के ख़ार फिरते हैं
लाखों क़ुदसी हैं कामे ख़िदमत पर
लाखों गिरदे मज़ार फिरते हैं
वर्दियाँ बोलते हैं हर-कारे
पहरा देते सवार फिरते हैं
रखिये जैसे हैं ख़ानाज़ाद हैं हम
मोल के ऐबदार फिरते हैं
हाय ग़ाफ़िल वो क्या जगह है जहां
पाँच जाते हैं चार फिरते हैं
बायें रस्ते न जा मुसाफ़िर सुन
माल है राह-मार फिरते हैं
जाग सुन्सान बन है रात आई
गुर्ग बह्रे शिकार फिरते हैं

नफ़्स ये कोई चाल है ज़ालिम
जैसे ख़ासे बिजार फिरते हैं
कोई क्यों पूछे तेरी बात रज़ा
तुझ से कुत्ते हज़ार फिरते हैं

उनकी महक ने दिल के

उनकी महक ने दिल के ग़ुंचे खिला दिये हैं
जिस राह चल गये हैं कूचे बसा दिये हैं
जब आगयी हैं जोशे रह़्मत पे उनकी आँखें
जलते बुझा दिये हैं रोते हँसा दिये हैं
इक दिल हमारा क्या है आज़ार इसका कित्‌ना
तुमने तो चलते फिरते मुर्दे जिला दिये हैं
उन के निसार कोई कैसे ही रंज में हो
जब याद आगये हैं सब ग़म भुला दिये हैं
हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे
अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं
इस्‌रा में गुज़रे जिस दम बेड़े पे क़ुदसियों के
होने लगी सलामी परचम झुका दिये हैं
आने दो या डुबो दो अब तो तुम्हारी जानिब
कश्ती तुम्हीं पे छोड़ी लंगर उठा दिये हैं

दूल्हा से इतना कह दो प्यारे सवारी रोको
मुश्किल में हैं बराती पुर ख़ार बादिये हैं
अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो–रो के मुस्तफ़ा ने दरिया बहा दिये हैं
मेरे करीम से गर क़त्रा किसी ने मांगा
दरिया बहा दिये हैं दुर–बे–बहा दिये हैं
मुल्के सुख़न की शाही तुम को **रज़ा** मुसल्लम
जिस सम्त आगये हो सिक्के बिठा दिये हैं

है लबे ईसा से

है लबे ईसा से जाँ–बख़्शी निराली हाथ में
संग–रेज़े पाते हैं शीरीं–मक़ाली हाथ में
बे–नवाओं की निगाहें हैं कहां तहरीरे दस्त
रह गयीं जो पा के जूदे ला यज़ाली हाथ में
क्या लकीरों में यदुल्लाह ख़त्ते सर्व आसा लिखा
राह यूं इस राज़ लिखने की निकाली हाथ में
जूदे शाहे कौसर अपने प्यासों का जूया है आप
क्या अजब उड़ कर जो आप आये प्याली हाथ में
अब्रे नेसां मोमिनों को तैग़े–उरियां कुफ़्र पर
जमअ़ हैं शाने–जमाली व जलाली हाथ में

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की निअ़मतें हैं उनके ख़ाली हाथ में

साया–अफ़गन सर पे हो परचम इलाही झूम कर
ज़ब लेवाउल–हम्द ले उम्मत का वाली हाथ में

हर ख़ते कफ़ है यहां ऐ दस्ते बैज़ाए कलीम
मौजज़न दरियाए नूरे–बे–मिसाली हाथ में

वोह गिरां संगीए क़दरे मिस वो अरज़ानीए जूद
नौईया बदला किये संगो लअ़ाली हाथ में

दस्तगीरे हर दो आ़लम कर दिया सिब्तैन को
ऐ मैं क़ुरबां जाने जां अंगुश्त क्या ली हाथ में

आह वो आ़लम कि आँखें बन्द और लब पर दुरूद
वक़्फ़े संगे दर जबीं रौज़े की जाली हाथ में

जिसने बैअ़त की बहारे हुस्न पर क़ुरबां रहा
हैं लकीरें नक़्शे तस्ख़ीरे–जमाली हाथ में

काश होजाऊँ लबे कौसर में यूं वारफ़्ता–होश
लेकर उस जाने करम का ज़ैले–आ़ली हाथ में

आँख मह्‌वे जल्‌वए दीदार दिल पुरजोशे वज्द
लब पे शुक्रे बख़्शिशे साक़ी प्याली हाथं में

इश्क़ में क्या–क्या मज़े वारफ़्तगी के लूं रज़ा
लोट जाऊँ पा के वोह दामाने आ़ली हाथ में

राहे इरफ़ाँ से जो हम

राहे इरफ़ाँ से जो हम नादीदा रू मह्रम नहीं
मुस्तफ़ा है मस्नदे इरशाद पर, कुछ ग़म नहीं

हूं मुसल्माँ गरचे नाकि़स ही सही ऐ कामिलो
माहियत पानी की आख़िर यम से नम में कम नहीं

ग़ुंचे 'मा-औह़ा' के जो चटके 'दना' के बाग़ में
बुलबुले सिद्रा तक उनकी बू से भी मह्रम नहीं

उसमें ज़मज़म है कि थमथम उसमें जमजम है कि बेश
कस्रते कौसर में ज़मज़म की तरह कम कम नहीं

पंजए मेह्रे अ़रब है जिससे दरिया बह गये
चश्मए ख़ुर्शीद में तो नाम को भी नम नहीं

ऐसा उम्मी किस लिए मिन्नत-कशे उस्ताद हो
क्या किफ़ायत उसको 'इक़्रअ् रब्बुकल अक्रम' नहीं

ओस मेह्रे हश्र पर पड़ जाये प्यासो तो सही
उस गुले ख़न्दाँ का रोना गिरयए शबनम नहीं

है उन्हीं के दम क़दम की बाग़े आ़लम में बहार
वो न थे आ़लम न था गर वो न हों आ़लम नहीं

सायए दीवारो ख़ाके दर हो या रब और रज़ा
ख़्वाहिशे दैहीमे कै़सर, शौके़ तख़्ते जम नहीं

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है

वो कमाले हुस्ने हुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहाँ नहीं
यही फूल ख़ार से दूर है यही शम्मा है कि धुआँ नहीं

दो जहां की बेहतरियां नहीं कि 'अमानीए' दिलो जाँ नहीं
कहो क्या है वो जो यहां नहीं मगर इक 'नहीं' कि वो हाँ नहीं

मैं निसार तेरे कलाम पर मिली यूं तो किस को ज़बाँ नहीं
वो सुख़न है जिसमें सुख़न न हो वो बयां है जिसका बयाँ नहीं

बख़ुदा ख़ुदा का यही है दर, नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहां से हो यहीं आके हो, जो यहाँ नहीं तो वहाँ नहीं

करे मुस्तफ़ा की इहानतें खुले बन्दों उस पे ये जुरअतें
कि मैं क्या नहीं हूं मुहम्मदी? अरे हाँ नहीं अरे हाँ नहीं

तेरे आगे यूं हैं दबे लचे फ़ुसहा अ़रब के बड़े–बड़े
कोई जाने मुंह में ज़बां नहीं, नहीं बल्कि जिस्म में जाँ नहीं

वो शरफ़ कि क़त्अ़ हैं निस्बतें वो करम कि सबसे क़रीब हैं
कोई कहदो यासो उम्मीद से वो कहीं नहीं वो कहाँ नहीं

ये नहीं कि ख़ुल्द न हो निको वो निकोई की भी है आबरू
मगर ऐ मदीने की आरज़ू जिसे चाहे तू वो समाँ नहीं

है उन्हीं के नूर से सब अ़यां, है उन्हीं के जल्वे में सब निहाँ
बने सुब्ह ताबिशे मेहर से रहे पेशे मेहर यह जाँ नहीं

वही नूरे ह़क़ वही ज़िल्ले रब है उन्हीं से सब है उन्हीं का सब
नहीं उनकी मिल्क में आस्मां कि ज़मीं नहीं कि ज़माँ नहीं

वही ला मकां के मकीं हुए सरे अ़र्श तख़्त–नशीं हुए
वो नबी है जिसके हैं ये मकां वो ख़ुदा है जिसका मकाँ नहीं

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वो जो तुझ पे अ़याँ नहीं

करूं तेरे नाम पे जाँ फ़िदा न बस एक जाँ दो जहाँ फ़िदा
दो जहाँ से भी नहीं जी भरा करूं क्या करोरों जहाँ नहीं

तेरा क़द तो नादिरे दह्र है कोई मिस्ल हो तो मिसाल दे
नहीं गुल के पौदों में डालियाँ कि चमन में सरवे चमां नहीं

नहीं जिस के रंग का दूसरा न तो हो कोई न कभी हुआ
कहो उस को गुल कहे क्या बनी कि गुलों का ढेर कहाँ नहीं

करूं मदहे अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन पारए नाँ नहीं

रुख़ दिन है या मेहरे समा

रुख़ दिन है या मेहरे समा, ये भी नहीं वो भी नहीं
शब ज़ुल्फ़ या मुश्के ख़ुता, ये भी नहीं वो भी नहीं

मुम्किन में यह क़ुदरत कहां, वाजिब में अबदिय्यत कहां
हैराँ हूं ये भी है ख़ता ये भी नहीं वो भी नहीं

हक़ यह कि हैं अ़ब्दे इलाह और आ़लमे इमकां के शाह
बरज़ख़ हैं वो सिर्रे ख़ुदा यह भी नहीं वो भी नहीं

बुलबुल ने गुल उनको कहा ,क़ुमरी ने सर्वे जांफ़िज़ा
हैरत ने झुंझला कर कहा ये भी नहीं वो भी नहीं

ख़ुर्शीद था किस ज़ोर पर क्या बढ़ के चमका था क़मर
बे पर्दा जब वो रुख़ हुआ ये भी नहीं वो भी नहीं

डर था कि इस्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उनकी रह़मत ने स़दा ये भी नहीं वो भी नहीं

कोई है नाज़ाँ ज़ुहद पर या हुस्ने तौबा है सिपर
याँ है फ़क़त तेरी अ़ता ये भी नहीं वो भी नहीं

दिन लह्व में खोना तुझे, शब सुबह तक सोना तुझे
शरमे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा ये भी नहीं वो भी नहीं

रिज़्के ख़ुदा खाया किया, फ़रमाने हक़ टाला किया
शुकरे करम तरसे सज़ा ये भी नहीं वो भी नहीं

है बुलबुले रंगीं **रज़ा** या तूतीए नग़्मा सरा
हक़ यह कि वासिफ़ है तेरा ये भी नहीं वो भी नहीं

वस्फ़े रुख़ उनका

वस्फ़े रुख़ उनका किया करते हैं शरहे वश्शम्सो ज़ुहा करते हैं
उनकी हम मद्हो सना करते हैं जिन को मह्मूद कहा करते हैं

माहे शक़–गश्ता की सूरत देखो कांप कर मेह्र की रजअ़त देखो
मुस्तफ़ा प्यारे की क़ुरदत देखो कैसे एजाज़ हुआ करते हैं

तू है ख़ुर्शीदे रिसालत प्यारे छुप गये तेरी ज़िया में तारे
अम्बिया और हैं सब मह–पारे तुझ से ही नूर लिया करते हैं

ऐ बला बे ख़िरदीए कुफ़्फ़ार रखते हैं ऐसे के हक़ में इन्कार
कि गवाही हो गर उसको दरकार बे ज़बाँ बोल उठा करते हैं

अपने मौला की है बस शाने अ़ज़ीम जानवर भी करें जिनकी तअ़ज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम पेड़ सज्दे में गिरा करते हैं

रिफ़्अ़ते ज़िक्र है तेरा हिस्सा दोनों आ़लम में है तेरा चर्चा
मुर्ग़े फ़िरदौस पस अज़ हम्दे ख़ुदा तेरी ही मद्हो सना करते हैं

उंगलियां पाई वो प्यारी–प्यारी, जिनसे दरियाए करम हैं जारी
जोश पर आती है जब ग़मख़्वारी तिश्ने सैराब हुआ करते हैं

हां यहीं करती हैं चिड़ियां फ़रियाद हां यहीं चाहती है हिरनी दाद
इसी दर पर शुत्राने–नाशाद गिलए रंजो अ़ना करते हैं

आस्तीं रह्मते आ़लम उल्टे कमरे पाक पे दामन बांधे
गिरने वालों को कूचए दोज़ख़ से साफ़ अलग खींच लिया करते हैं

जब सबा आती है तैबा से इधर खिलखिला पड़ती हैं कलियां यक्सर
फूल जामा से निकल कर बाहर रुख़े रंगीं की सना करते हैं

तू है वो बादशहे कौनो मकां कि मलक हफ़्त फ़लक के हर आँ
तेरे मौला से शहे अ़र्श ऐवाँ तेरी दौलत की दुआ़ करते हैं

जिसके जल्वे से उ़हुद है ताबां मअ़दने नूर है उसका दामाँ
हम भी उस चाँद पे होकर क़ुरबां दिले संगीं की जिला करते हैं

क्यों न ज़ेबा हो तुझे ताजवरी तेरे ही दम की है सब जल्वा गरी
मलको जिन्नो बशर हूरो परी जान सब तुझ पे फ़िदा करते हैं

टूट पड़ती हैं बलायें जिन पर जिनको मिलता नहीं कोई यावर
हर तरफ़ से वो पुर अरमां फिर कर उनके दामन में छुपा करते हैं

लब पर आजाता है जब नामे जनाब मुंह में घुल जाता है शहदे नायाब
वज्द में हो के हम ऐ जाँ बेताब अपने लब चूम लिया करते हैं

लब पे किस मुँह से गमे उल्फ़त लायें क्या बला दिल है अलम जिसका सुनायें
हम तो उनके कफ़े पा पर मिट जाये उनके दर पर जो मिटा करते है

अपने दिल का है उन्हीं से आराम सौंपे हैं अपने उन्हीं को सब काम
लौ लगी है कि अब उस दर के ग़ुलाम चारए दर्दे रज़ा करते हैं

बर तर क़ियास से है

बर तर क़ियास से है मक़ामे अबुल हुसैन
सिद्रा से पूछो रिफ़अते बामे अबुल हुसैन
वारफ़्ता पाये बस्तए दामे अबुल हुसैन
आज़ाद नार से है ग़ुलामे अबुल हुसैन
ख़त्ते सियह में नूरे इलाही की ताबिशें
क्या सुबहे नूर बार है शामे अबुल हुसैन
साक़ी सुना दे शीशए बग़्दाद की टपक
महकी है बूए गुल से मदामे अबुल हुसैन
बूए कबाबे सोख़्ता आती है मय कशो
छलका शराबे चिश्त से जामे अबुल हुसैन
गुलगूं सहर को है सहर सोज़े दिल से आँख
सुल्ताने सुहरवर्द है नामे अबुल हुसैन
कुर्सी नशीं है नक़्शे मुराद उनके फ़ैज़ से
मौलाए नक्शबन्द है नामे अबुल हुसैन

जिस नख़्ले पाक में हैं छियालीस डालियां
इक शाख़ उनमें से है बनामे अबुल हुसैन
मस्तों को ऐ करीम बचाये ख़ुमार से
ता दौरे हश्र दौरए जामे अबुल हुसैन
उनके भले से लाखों ग़रीबों का है भला
या रब ज़माना बाद बकामे अबुल हुसैन
मेला लगा है शाने मसीहा की दीद है
मुर्दे जिला रहा है ख़िरामे अबुल हुसैन
सर गश्ता मेहरो मह हैं पर अब तक खुला नहीं
किस चर्ख़ पर है माहे तमामे अबुल हुसैन
इतना पता मिला है कि यह चर्ख़े चम्बरी
है हफ़्त पाया ज़ीनए बामे अबुल हुसैन
ज़र्रे को मेहर क़तरे को दरिया करे अभी
गर जोश–ज़ंन हो बख़्शिशे आ़मे अबुल हुसैन
यहया का सदक़ा वारिसे इक़बालमन्द पाये
सज्जादए शुयूख़े किरामे अबुल हुसैन
इन्आ़म लें बहारे जिनाँ तहनीयत लिखें
फूले फले तू नख़्ले मुरामे अबुल हुसैन

अल्लाह हम भी देखलें शहज़ादे की बहार
सूंघे गुले मुराद मशामे अबुल हुसैन

आक़ा से मेरे सुथरे मियाँ का हुआ है नाम
उस अच्छे सुथरे से रहे नामे अबुल हुसैन

या रब वो चाँद जो फ़लके इज़्ज़ो जाह पर
हर सैर में हो गाम बगामे अबुल हुसैन

आओ तुम्हें हिलाले सिपहरे शरफ़ दिखायें
गर्दन झुकायें बहरे सलामे अबुल हुसैन

क़ुदरत ख़ुदा की है कि तलातुम कुनाँ उठी
बहरे फ़ना से मौजे दवामे अबुल हुसैन

या रब हमें भी चाश्नी उस अपनी याद की
जिससे है शक्करीं लबो कामे अबुल हुसैन

हां तालिअ़े **रज़ा** तेरी अल्लाह रे यावरी
ऐ बन्दए जदूदे किरामे अबुल हुसैन

ज़ाइरो पासे अदब रक्खो

ज़ाइरो पासे अदब रक्खो हवस जाने दो
आँखें अन्धी हुई हैं उनको तरस जाने दो

सूखी जाती है उम्मीदे ग़ुरबा की खेती
बूंदियां लक्कए रहमत की बरस जाने दो

पल्टी आती है अभी वज्द में जाने शीरीं
नग़्मए क़ुम का ज़रा कानों में रस जाने दो
हम भी चलते हैं ज़रा क़ाफ़िले वालो ठहरो
गठ्रियां तोशए उम्मीद की कस जाने दो
दीदे गुल और भी करती है क़ियामत दिल पर
हम–सफ़ीरो हमें फिर सूए क़फ़स जाने दो
आतिशे दिल भी तो भड़काओ अदब दाँ नालो
कौन कहता है कि तुम ज़ब्ते नफ़स जाने दो
यूँ तने–ज़ार के दर पै हुए दिल के शोलो
शेवए ख़ाना बर–अन्दाज़ीए ख़स जाने दो
ऐ **रज़ा** आह कि यूं सहल कटें जुर्म के साल
दो घड़ी की भी इबादत तो बरस जाने दो

चमने तैबा में सुंबुल

चमने तैबा में सुंबुल जो संवारे गेसू
हूर बढ़ कर शिकने नाज़ पे वारे गेसू
की जो बालों से तेरे रौज़े की जारूब कशी
शब को शबनम ने तबर्रुक को हैं धारे गेसू
हम सियह–कारों पे यारब तपिशे मह्शर में
साया–अफ़गन हों तेरे प्यारे के प्यारे गेसू

चर्चे हूरों में हैं देखो तो ज़रा बाले बुराक़
सुंबुले ख़ुल्द के .कुरबान उतारे गेसू
आख़िरे हज ग़मे उम्मत में परेशां हो कर
तीरा बख़्तों की शफ़ाअ़त को सुधारे गेसू
गोश तक सुनते थे फ़रियाद अब आये ता दोश
कि बनें ख़ाना बदोशों को सहारे गेसू
सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाये
छायें रह़मत की घटा बन के तुम्हारे गेसू
कअ़बए जाँ को पिन्हाया है ग़िलाफ़े–मुश्कीं
उड़ कर आये हैं जो अबरू पे तुम्हारे गेसू
सिलसिला पाके शफ़ाअ़त का झुके पड़ते हैं
सज्दए शुक्र के करते हैं इशारे गेसू
मुश्क–बू कूचा ये किस फूल का झाड़ा इनसे
हूरियो अ़म्बरे सारा हुये सारे गेसू
देखो .क़ुरआँ में शबे क़द्र है ता मत्लअ़े फ़ज्र
यानी नज़्दीक हैं आ़रिज़ के वो प्यारे गेसू
भीनी ख़ुशबू से महक जाती हैं गलियां वल्लाह
कैसे फूलों में बसाये हैं .तुम्हारे गेसू

शाने रह्मत है कि शाना न जुदा हो दम भर
सीना चाकों पे कुछ इस दर्जा हैं प्यारे गेसू

शाना है पंजए क़ुद्रत तेरे बालों के लिए
कैसे हाथों ने शहा तेरे संवारे गेसू

उह्दे पाक की चोटी से उलझ ले शब भर
सुब्ह होने दो शबे ईद ने हारे गेसू

मुज़्दा हो क़िब्ला से घंघोर घटायें उमडीं
अबरूओं पर वो झुके झूम के बारे गेसू

तारे-शीराज़ए मज्मूअ़ए कौनैन हैं ये
हाल खुल जाये जो इक दम हों किनारे गेसू

तेल की बूंदें टपकती नहीं बालों से **रज़ा**
सुब्हे आ़रिज़ पे लुटाते हैं सितारे गेसू

ज़माना हज का है

ज़माना हज का है जल्वा दिया है शाहिदे गुल को
इलाही ताक़ते परवाज़ दे पर-हाये बुलबुल को

बहारें आयीं जोबन पर घिरा है अब्र रह्मत का
लबे मुश्ताक़ भीगें दे इजाज़त साक़िया मुल को

मिले लब से वो मुशकीं मुहर वाली दम में दम आये
टपक सुनकर .क़ुमे ईसा कहूं मस्ती में .क़ुल.क़ुल को
मचल जाऊं सवाले मुद्दआ पर थाम कर दामन
बहकने का बहाना पाऊं क़स्दे बे तअम्मुल को
दुआ कर बख़्ते ख़ुफ़्ता जाग हंगामे इजाबत है
हटाया सुब्हे रुख़ से शाने ने शब्हाये काकुल को
ज़बाने फ़ल्सफी से अमने ख़र्क़ो इल्तियाम इसरा
पनाहे दौरे रह्मत हाये यक साअत तसलसुल को
दो शम्बा मुस्तफ़ा का जुमअए आदम से बेहतर है
सिखाना क्या लिहाज़े हैसियत ख़ूए तअम्मुल को
व.फ़ूरे शाने रह्मत के सबब जुरअत है ऐ प्यारे
न रख बहरे ख़ुदा शर्मिन्दा अर्ज़े बे तअम्मुल को
परेशानी में नाम उनका दिले सद चाक से निकला
इजाबत शाना करने आई गेसूए तवस्सुल को
रज़ा नो सब्ज़ए गरदूं हैं कोतल जिस के मौकिब के
कोई क्या लिख सके उसकी सवारी के तजम्मुल को

याद में जिसकी नहीं

याद में जिसकी नहीं होशे तनो जाँ हमको
फिर दिखा दे वो रुख़ ऐ मेहरे फ़िरोज़ाँ हमको
देर से आप में आना नहीं मिलता है हमें
क्या ही ख़ुद–रफ़्ता किया जल्वए जानाँ हमको
जिस तबस्सुम ने गुलिस्तां पे गिराई बिजली
फिर दिखा दे वो अदाए गुले–ख़न्दाँ हमको
काश आवेज़ए क़िन्दीले मदीना हो वो दिल
जिसकी शोरिश ने किया रश्के चराग़ाँ हमको
अ़र्श जिस ख़ूबिए रफ़्तार का पामाल हुआ
दो क़दम चल के दिखा सरवे ख़िरामाँ हमको
शम्मे तैबा से मैं परवाना रहूं कब तक दूर
हां जलादे शररे आतिशे पिन्हाँ हमको
ख़ौफ़ है समअ़–ख़राशीए सगे तैबा का
वरना क्या याद नहीं नाला व अफ़ग़ाँ हमको
ख़ाक हो जायें दरे पाक पे हस्रत मिट जाय
या इलाही न फिरा बे सरो सामाँ हमको
ख़ारे सहराए मदीना न निकल जाए कहीं
वह्शते दिल न फिरा कोहो बयाबाँ हमको

तंग आये हैं दो आ़लम तेरी बेताबी से
चैन लेने दे तपे सीनए सोज़ाँ हमको

पाँव गि़रबाल हुए राहे मदीना न मिली
ऐ जुनूं अब तो मिले रुख़्सते ज़िन्दाँ हमको

मेरे हर ज़ख़्मे जिगर से ये निकलती है सदा
ऐ मलीहे अ़रबी कर दे नमक दाँ हमको

सैरे गुल्शन से असीराने क़फ़स को क्या काम
न दे तक्लीफ़े चमन बुलबुले बुस्ताँ हमको

जब से आँखों में समाई है मदीने की बहार
नज़र आते हैं खि़ज़ां दीदा गुलिस्ताँ हमको

गर लबे पाक से इक़रारे शफ़ाअ़त होजाय
यूं न बेचैन रखे जोशिशे इस्याँ हमको

नय्यरे हश्र ने इक आग लगा रक्खी है
तेज़ है धूप मिले सायए दामाँ हमको

रह्म फ़रमाइये या शाह कि अब ताब नहीं
ता–बकै ख़ून रुलाये ग़मे हिज्राँ हमको

चाके दामाँ में न थक जाईयो ऐ दश्ते जुनूं
पुरज़े करना है अभी जैबो गरीबाँ हमको

पर्दा उस चेहरए अन्वर से उठा कर इक बार
अपना आईना बना ऐ महे ताबाँ हमको
ऐ रज़ा वस्फ़े रुख़े पाक सुनाने के लिए
नज़र देते हैं चमन मुर्गे ग़ज़ल ख़्वाँ हमको

हाजियो! आओ शहन्शाह का रौज़ा

हाजियो! आओ शहन्शाह का रौज़ा देखो
कअ़बा तो देख चुके कअ़बे का कअ़बा देखो
रुक्ने शामी से मिटी वह्शते शामे ग़ुरबत
अब मदीने को चलो सुब्हे दिल–आरा देखो
आबे–ज़मज़म तो पिया ख़ूब बुझाई प्यासें
आओ जूदे शहे कौसर का भी दरिया देखो
ज़ेरे मीज़ाब मिले ख़ूब करम के छींटे
अब्रे रह्मत का यहाँ ज़ोर बरसना देखो
धूम देखी है दरे कअ़बा पे बेताबों की
उनके मुश्ताक़ों में हस्रत का तड़पना देखो
मिस्ले परवाना फिरा करते थे जिस शमअ़ के गिर्द
अपनी उस शमअ़ को परवाना यहां का देखो
ख़ूब आंखों से लगाया है ग़िलाफ़े कअ़बा
क़स्रे मह्बूब के परदे का भी जल्वा देखो

वाँ मुतीओं का जिगर ख़ौफ़ से पानी पाया
यॉं सियहकारो का दामन पे मचलना देखो
अव्वलीं ख़ानए हक़ की तो ज़ियायें देखीं
आख़रीं बैते नबी का भी तजल्ला देखो
ज़ीनते कअ़बा में था लाख अ़रूसों का बनाव
जल्वा–फ़रमा यहां कौनैन का दूल्हा देखो
ऐमने तूर का था रुक्ने यमानी में फ़रोग़
शोअ़लए तूर यहां अन्जुमन–आरा देखो
मेह्रे मादर का मज़ा देती थी आग़ोशे ह़तीम
जिन पे माँ बाप फ़िदा यॉं करम उनका देखो
अ़र्ज़े हाजत में रहा कअ़बा कफ़ीले इन्जाह़
आओ अब दाद–रसीए शहे तैबा देखो
धो चुका ज़ुल्मते दिल बोसए संगे–अस्वद
ख़ाक–बोसीए मदीना का भी रुत्बा देखो
कर चुकी रिफ़अ़ते कअ़बा पे नज़र परवाज़ें
टोपी अब थाम के ख़ाके दरे–वाला देखो
बे नियाज़ी से वहाँ कांपती पायी ताअ़त
जोशे रह़मत पे यहाँ नाज़ गुनह का देखो
जुम्अ़ए मक्का था ईद अहले इबादत के लिये
मुज्रिमो! आओ यहां ईदे दोशम्बा देखो

मुल्तज़िम से तो गले लग के निकाले अरमाँ
अदबो शौक़ का याँ बाहम उलझना देखो
ख़ूब मस्‌आ में ब–उम्मीदे सफ़ा दौड़ लिये
रहे जानाँ की सफ़ा का भी तमाशा देखो
रक़्से बिस्मिल की बहारें तो मिना में देखीं
दिले ख़ूँ–नाबा फ़िशां का भी तड़पना देखो
ग़ौर से सुन तो **रज़ा** कअ़बे से आती है सदा
मेरी आंखों से मेरे प्यारे को रौज़ा देखो

पुल से उतारो राह–गुज़र को

पुल से उतारो राह– गुज़र को ख़बर न हो
जिब्रील पर बिछायें तो पर को ख़बर न हो
कांटा मेरे जिगर से ग़मे रोज़गार का
यूं खींच लीजिये कि जिगर को ख़बर न हो
फ़रियाद उ़म्मती जो करे हाले ज़ार में
मुम्किन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो
कहती थी यह बुराक़ से उसकी सुबुक रवी
यूं जाइये कि गर्दे सफ़र को ख़बर न हो
फ़रमाते हैं ये दोनों हैं सरदारे दो जहाँ
ऐ मुर्तज़ा अ़तीक़ो उ़मर को ख़बर न हो

ऐसा गुमा दे उनकी विला में ख़ुदा हमें
ढूंढा करे पर अपनी ख़बर को ख़बर न हो

आ दिल हरम को रोकने वालों से छुप के आज
यूं उठ चलें कि पहलूवो बर को ख़बर न हो

तैरे हरम हैं ये कहीं रिश्ता बपा न हों
यूं देखिये कि तारे नज़र को ख़बर न हो

ऐ ख़ारे तैबा देख कि दामन न भीग जाय
यूं दिल में आ कि दीदए तर को ख़बर न हो

ऐ शौक़े दिल ये सज्दा गर उन को रवा नहीं
अच्छा वो सज्दा कीजे कि सर को ख़बर न हो

उनके सिवा **रज़ा** कोई हामी नहीं जहाँ
गुज़रा करे पेसर पे पेदर को ख़बर न हो

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किलकुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊँ नज़अ़ की तक्लीफ़ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरा की जब आये सख़्त रात
उनके प्यारे मुंह की सुबहे जांफ़िज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े मह्शर में शोरे दारोगीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो
या इलाही जब ज़बानें बाहर आयें प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो
या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुर्शीदे ह़श्र
सय्यिदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो
या इलाही गर्मीए मह्शर से जब भड़कें बदन
दामने मह्बूब की ठंडी हवा का साथ हो
या इलाही नामए आमाल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो
या इलाही जब बहें आंखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ़ का साथ हो
या इलाही जब हिसाबे ख़न्दए बेजा रुलाय
चश्मे गिरयाने शफ़ीए मुर्तजा का साथ हो
या इलाही रंग लायें जब मेरी बेबाकियां
उनकी नीची नीची नज़रों की हया का साथ हो
या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुलसिरात
आफ़्ताबे हाश्मी नूरुलहुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़दा का साथ हो

या इलाही जो दुआए नेक मैं तुझ से करूं
.क़ुदसियों के लब से आमीं रब्बना का साथ हो

या इलाही जब **रज़ा** ख़्वाबे गिराँ से सर उठाय
दौलते बेदार इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

क्या ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा

क्या ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा शफ़ाअत है तुम्हारी वाह वाह
क़र्ज़ लेती है गुनह परहेज़गारी वाह वाह

ख़ामए .क़ुदरत का हुस्ने दस्तकारी वाह वाह
क्या ही तस्वीर अपने प्यारे की संवारी वाह वाह

अश्क शब भर इंतेज़ारे अ़फ़्वे उम्मत में बहें
मैं फ़िदा चाँद और यूं अख़्तर शुमारी वाह वाह

उंगलियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नद्दियां पंजाबे रह्‌मत की हैं जारी वाह वाह

नूर की ख़ैरात लेने दौड़ते हैं मेह्‌रो माह
उठती है किस शान से गर्दे सवारी वाह वाह

नीम जल्वे की न ताब आये क़मर साँ तो सही
मेह्र और उन तल्वों की आईना दारी वाह वाह

नफ़्स ये क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है
नातवाँ के सर पर इतना बोझ भारी वाह वाह

मुज्रिमों को ढूंढती फिरती है रह्मत की निगाह
तालिअ़े बरगश्ता तेरी साज़गारी वाह वाह

अ़र्ज़ बेगी है शफ़ाअ़त अ़फ़्व की सरकार में
छंट रही है मुज्रिमों की फ़र्द सारी वाह वाह

क्या मदीने से सबा आई कि फूलों में है आज
कुछ नई बू भीनी-भीनी प्यारी-प्यारी वाह वाह

ख़ुद रहे पर्दे में और आईना अ़क्से ख़ास का
भेज कर अन्जानों से की राहदारी वाह वाह

इस तरफ़ रौज़े का नूर उस सम्त मिम्बर की बहार
बीच में जन्नत की प्यारी प्यारी कियारी वाह वाह

सदक़े उस इन्अ़ाम के क़ुरबान उस इकराम के
हो रही है दोनों अ़ालम में तुम्हारी वाह वाह

पारए दिल भी न निकला दिल से तोहफ़े में रज़ा
उन सगाने कू से इतनी जान प्यारी वाह वाह

रौनक़े बज़्मे जहाँ

रौनक़े बज़्मे जहाँ हैं आशिक़ाने सोख़ता
कह रही है शम्मा की गोया ज़बाने सोख़ता

जिसको क़ुर्से मेहर समझा है जहाँ ऐ मुन्इमो
उनके ख़्वाने जूद से है एक नाने सोख़ता

माहे मन यह नय्यरे मह्शर की गर्मी ता–बकै
आतिशे इस्याँ में ख़ुद जल्ती है जाने सोख़ता

बर्क़े अंगुश्ते नबी चमकी थी उस पर एक बार
आज तक है सीनए मह में निशाने सोख़ता

मेह्रे आलम ताब झुकता है पए तस्लीम रोज़
पेशे ज़र्राते मज़ारे बे–दिलाने सोख़ता

कूचए गेसूए जानाँ से चले ठंडी नसीम
बालो पर अफ़्शाँ हों या रब बुलबुलाने सोख़ता

बहरे् हक ऐ बह्रे रह्मत इक निगाहे लुत्फ़बार
ता–ब–कै बे आब तड़पें माहियाने सोख़ता

रू–कशे ख़ुर्शीदे मह्शर हो तुम्हारे फ़ैज़ से
इक शरारे सीनए शैदाइयाने सोख़ता

आतिशे तर दामनी ने दिल किये क्या क्या कबाब
ख़िज़्र की जाँ हो जिला दो माहियाने सोख़ता

आतिशे गुल्हाए तैबा पर जलाने के लिये
जान के तालिब हैं प्यारे बुलबुलाने सोख़ता
लुत्फ़े बर्क़े जल्वए मेअ़राज लाया वज्द में
शोलए जव्वाला साँ है आस्माने सोख़ता
ऐ **रज़ा** मज़मून सोज़े दिल की रिफ़अ़त ने किया
इस ज़मीने सोख़ता को आस्माने सोख़ता

सबसे औला व आला

सब से औला व आला हमारा नबी
सबसे बाला व वाला हमारा नबी
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी
दोनों आ़लम का दूल्हा हमारा नबी
बज़्मे आख़िर का शमअ़े फ़िरोज़ाँ हुआ
नूरे अव्वल का जल्वा हमारा नबी
जिसको शायां है अ़र्शे ख़ुदा पर जुलूस
है वो सुल्ताने वाला हमारा नबी
बुझ गईं जिसके आगे सभी मशअ़लें
शम्मअ़ वोह लेकर आया हमारा नबी
जिसके तल्वों का धोवन है आबे ह़यात
है वोह जाने मसीहा हमारा नबी

अर्शो कुर्सी की थीं आईना बन्दियाँ
सूए हक़ जब सिधारा हमारा नबी
खल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल
और रसूलों से आला हमारा नबी
हुस्न खाता है जिसके नमक की क़सम
वोह मलीहे दिलआरा हमारा नबी
ज़िक्र सब फीके जब तक न मज़्कूर हों
नमकीन हुस्न वाला हमारा नबी
जिसकी दो बूंद हैं कौसरो सल्सबील
है वो रहमत का दरिया हमारा नबी
जैसे सब का ख़ुदा एक है वैसे ही
इनका उनका तुम्हारा हमारा नबी
क़रनों बदली रसूलों की होती रही
चाँद बदली का निकला हमारा नबी
कौन देता है देने को मुंह चाहिए
देने वाला है सच्चा हमारा नबी
क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गए
पर न डूबे न डूबा हमारा नबी

मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार
ताजदारों का आक़ा हमारा नबी
लामकाँ तक उजाला है जिसका वो है
हर मकाँ का उजाला हमारा नबी
सारे अच्छों में अच्छा समझिये जिसे
है उस अच्छे से अच्छा हमारा नबी
सारे ऊँचों में ऊँचा समझिये जिसे
है उस ऊँचे से ऊँचा हमारा नबी
अम्बिया से करूं अ़र्ज क्यों मालिको
क्या नबी है तुम्हारा हमारा नबी
जिसने टुकड़े किये हैं कमर के वो है
नूरे वह्दत का टुकड़ा हमारा नबी
सब चमक वाले उजलों में चमका किये
अन्धे शीशों में चमका हमारा नबी
जिसने मुर्दा दिलों को दी उम्रे अबद
है वो जाने मसीहा हमारा नबी
गमज़दों को **रज़ा** मुज़्दा दीजे कि है
बेकसों का सहारा हमारा नबी
(सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे

दिल को उनसे ख़ुदा जुदा न करे
बेकसी लूट ले ख़ुदा न करे

इसमें रौज़े का सज्दा हो कि तवाफ़
होश में जो न हो वो क्या न करे

यह वही हैं कि बख़्श देते हैं
कौन इन जुर्मों पर सज़ा न करे

सब तबीबों ने दे दिया है जवाब
आह ईसा अगर दवा न करे

दिल कहां ले चला हरम से मुझे
अरे तेरा बुरा ख़ुदा न करे

उज़रे उम्मीदे अफ़्व गर न सुनें
रू सियाह और क्या बहाना करे

दिल में रौशन है शमअ़े इश्क़े हुज़ूर
काश जोशे हवस हवा न करे

हश्र में हम भी सैर देखेंगे
मुंकिर आज उनसे इल्तेजा न करे

ज़ोफ़ माना मगर ये ज़ालिम दिल
उनके रस्ते में तो थका न करे

जब तेरी ख़ू है सबका जी रखना
वही अच्छा जो दिल बुरा न करे
दिल से इक ज़ौक़े मंय का तालिब हूं
कौन कहता है इत्तेक़ा न करे
ले **रज़ा** सब चले मदीने को
मैं न जाऊँ अरे ख़ुदा न करे

मोमिन वो है

मोमिन वो है जो उनकी इ़ज़्ज़त पे मरे दिल से
ताज़ीम भी करता है नज्दी तो मरे दिल से
वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से
बिछड़ी है गली कैसी बिगड़ी है बनी कैसी
पूछो कोई यह सद्मा अरमान भरे दिल से
क्या उसको गिराए दहर जिस पर तू नज़र रक्खे
ख़ाक उसको उठाए हश्र जो तेरे गिरे दिल से
बहका है कहाँ मजनूं ले डाली बनों की ख़ाक
दम भर न किया ख़ेमा लैला ने परे दिल से
सोने को तपायें जब कुछ मेल हो या कुछ मैल
क्या काम जहन्नम के धुर्रे को खरे दिल से

आता है दरे वाला यूं ज़ौक़े तवाफ़ आना
दिल जान से सदक़े हो सर गिर्द फिरे दिल से

ऐ अब्रे करम फ़रियाद–फ़रियाद जला डाला
उस सोज़िशे ग़म को है ज़िद मेरे हरे दिल से

दरिया है चढ़ा तेरा कितनी ही उड़ायें ख़ाक
उतरेंगे कहाँ मुजरिम ऐ अफ़्व तेरे दिल से

क्यां जानें यमे ग़म में दिल डूब गया कैसा
किस तह को गये अरमाँ अब तक न तेरे दिल से

करता तो है याद उनकी ग़फ़्लत को ज़रा रोके
लिल्लाह **रज़ा** दिल से हाँ दिल से अरे दिल से

अल्लाह अल्लाह के नबी से

अल्लाह अल्लाह के नबी से
फ़रियाद है नफ़्स की बदी से

दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई
लाज आई न ज़र्रों की हंसी से

शब भर सोने ही से ग़रज़ थी
तारों ने हज़ार दाँत पीसे

ईमान पे मौत बेहतर ओ नफ़्स
तेरी नापाक ज़िन्दगी से

ओ शहद नुमाए ज़हर दर जाम
गुम जाऊँ किधर तेरी बदी से

गहरे प्यारे पुराने दिल सोज़
गुज़रा मैं तेरी दोस्ती से

तुझ से जो उठाए मैंने सदमे
ऐसे न मिले कभी किसी से

उफ़ रे ख़ुद कामे बे मुरव्वत
पड़ता है काम आदमी से

तूने ही किया ख़ुदा से नादिम
तूने ही किया ख़जिल नबी से

कैसे आक़ा का हुक्म टाला
हम मर मिटे तेरी ख़ुद सरी से

आती न थी जब बदी भी तुझ को
हम जानते हैं तुझे जभी से

हद के ज़ालिम सितम के कट्टर
पत्थर शरमायें तेरे जी से

हम ख़ाक में मिल चुके हैं कबके
निकला न ग़ुबार तेरे जी से

हे जालिम में निबाहूं तुझ से
अल्लाह बचाये उस घड़ी से
जो तुमको न जानता हो हज़रत
चालें चलिये उस अज्नबी से
अल्लाह के सामने वो गुण थे
यारों में कैसे मुत्तक़ी से
रहजन ने लूट ली कमाई
फरियाद है खिज़्रे हाशमी से
अल्लाह कुएं में ख़ुद गिरा हूं
अपनी नालिश करूं तुझी से
हैं पुश्त पनाह गौसे आज़म
क्यों डरते हो तुम रज़ा किसी से

शजरए आ़लिया, क़ादिरिया, बरकातिया

या इलाही रहम फ़रमा

या इलाही रहम फरमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजे ख़ुदा के वास्ते
मुश्किले हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलायें रद शहीदे करबला के वास्ते

सय्यिदे सज्जाद के सदके में साजिद रख मुझे
इल्मे ह़क दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वास्ते

सिदके सादिक का तसद्दुक सादिक़ुल इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काजिम और रज़ा के वास्ते

बहरे मअ़रूफ़ो सिरी मअ़रूफ़ दे बेखुद सरी
जुन्दे हक में गिन जुनैदे बा–सफ़ा के वास्ते

बहरे शिब्ली शेरे ह़क दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अ़ब्दे वाहिद बे–रिया के वास्ते

बुल्फ़रह का सदक़ा कर गम को फ़रह दे हुस्नो सअ़द
बुल्हसन और बू सईदे सअद ज़ा के वास्ते

क़ादिरी कर क़ादिरी रख, क़ादिरियों में उठा
क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते

अहसनल्लाहु लहुम रिज़्क़न से दे रिज़्क़े हसन
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल अस्फ़िया के वास्ते

नस्र अबी सालेह का सदक़ा सालेहो मन्सूर रख
दे हयाते दीं मुहिय्ये जाँ फ़िज़ा के वास्ते

तूरे इरफ़ानो उ़लूवो हम्दो हुस्नावो बहा
दे अली, मूसा, हसन, अह़मद बहा के वास्ते

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशा के वास्ते

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमाँ को जमाल
शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते

दे मुहम्मद के लिए रोज़ी कर, अहमद के लिए
ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते

दीनो दुनिया के मुझे बरकात दे बरकात से
इश्क़े हक़ दे इश्क़ीए इश्क़ अन्तुमा के वास्ते

हुब्बे अह्ले बैत दे आले मुहम्मद के लिए
कर शहीदे इश्क़े हमज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जानको पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुलओ़ला के वास्ते

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वास्ते

सदक़ा इन अअ्याँ का दे छ: ऐन इ़ज़्ज़ इल्मो अ़मल
अ़फ़्वो इरफ़ाँ आफ़ियत अहमद रज़ा के वास्ते

अर्शे ह़क़ है मसनद

अ़र्शे ह़क़ है मस्नदे रिफ़अ़त रसूलुल्लाह की
देखनी है हश्र में इ़ज़्ज़त रसूलुल्लाह की

क़ब्र में लहरायेंगे ता हश्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब तलअ़त रसूलुल्लाह की

काफ़िरों पर तैग़े–वाला से गिरी बर्क़े ग़ज़ब
अब्र–आसा छा गयी हैबत रसूलुल्लाह की

ला व रब्बिल अ़र्श जिसको जो मिला उनसे मिला
बटती है कौनैन में निअ़मत रसूलुल्लाह की

वो जैहन्नम में गया जो उनसे मुस्तग़नी हुआ
है ख़लीलुल्लाह को हाजत रसूलुल्लाह की

सूरज उल्टे पाँव पल्टे चाँद इशारे से हो चाक
अंधे नज्दी देखले .क़ुदरत रसूलुल्लाह की

तुझसे और ,जन्नत से क्या मतलब वहाबी दूर हो
हम रसूलुल्लाह के,जन्नत रसूलुल्लाह की

ज़िक्र रोके फ़ज़्ल काटे नक़्स का जूयाँ रहे
फिर कहे मर्दक कि हूं उम्मत रसूलुल्लाह की

नज्दी उसने तुझको मुहलत दी कि इस आलम में है
काफ़िरो मुर्तद पे भी रह़मत रसूलुल्लाह की

हम भिकारी वह करीम उनका ख़ुदा उनसे फ़ुज़ूं
और 'ना' कहना नहीं आदत रसूलुल्लाह की

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

ख़ाक होकर इश्क़ में आराम से सोना मिला
जान की अक्सीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की

टूट जायेंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
हश्र को खुल जायेगी ताक़त रसूलुल्लाह की

या रब इक साअ़त में धुल जाये सियहकारों के जुर्म
जोश पर आजाये अब रह़मत रसूलुल्लाह की

है गुले बागे क़ुदुस रुख़सारे ज़ेबाये हुज़ूर
सर्वे गुलज़ारे क़दम क़ामत रसूलुल्लाह की

ऐ **रज़ा** ख़ुद साहिबे क़ुरआँ है मद्दाह़े हुज़ूर
तुझसे कब मुम्किन है फिर मिदह़त रसूलुल्लाह की

क़ाफ़िले ने सूए तैबा

क़ाफ़िले ने सूए तैबा कमर आराई की
मुश्किल आसान इलाही मेरी तन्हाई की

लाज रखली तमअ़े अ़फ़्व के सौदाई की
ऐ मैं क़ुरबां मेरे आक़ा बड़ी आक़ाई की

फ़र्श ता अ़र्श सब आईना ज़माइर हाज़िर
बस क़सम खाईए उम्मी तेरी दानाई की
शश जेहत सम्ते मुक़ाबिल शबो रोज़ एक ही हाल
धूम 'वन्नज्म' में है आपकी बीनाई की
पान सौ साल की राह ऐसी है जैसे दोगाम
आस हमको भी लगी है तेरी शुन्वाई की
चाँद इशारे का हिला हुक्म का बांधा सूरज
वाह क्या बात शहा तेरी तवानाई की
तंग ठहरी है **रज़ा** जिसके लिये वुस्अ़ते अ़र्श
बस जगह दिल में है उस जल्वए हरजाई की

पेशे हक़ मुज़दा शफ़ाअ़त का

पेशे हक़ मुज़्दा शफ़ाअ़त का सुनाते जायेंगे
आप रोते जायेंगे हम को हंसाते जायेंगे
दिल निकल जाने की जा है आह किन आँखों से वोह
हम–से प्यासों के लिए दरिया बहाते जायेंगे
कुश्तगाने गर्मीए महशर को वो जाने मसीह
आज दामन की हवा दे कर जिलाते जायेंगे
गुल खिलेगा आज यह उनकी नसीमे फ़ैज़ से
ख़ून रोते आएंगे हम मुस्कुराते जायेंगे

हां चलो हसरत जदो सुनते हैं वो दिन आज है
थी ख़बर जिसकी कि वो जल्वा दिखाते जायेंगे
आज ईदे आशिक़ाँ है गर खुदा चाहे कि वोह
अब्रूए पैवस्ता का आलम दिखाते जायेंगे

कुछ खबर भी है फ़क़ीरो आज वो दिन है कि वोह
निअ़मते खुल्द अपने सदक़े में लुटाते जायेंगे
ख़ाक उफ़्तादो बस उनके आने ही की देर है
ख़ुद वो गिरकर सज्दे में तुमको उठाते जायेंगे

वुस्अ़तें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जायेंगे और वोह छुपाते जायेंगे
लो वो आये मुस्कुराते हम असीरों की तरफ़
ख़िरमने इस्याँ पे अब बिजली गिराते जायेंगे

आँख खोलो ग़मज़दो देखो वो गिरयाँ आये हैं
लौहे दिल से नक़्शे ग़म को अब मिटाते जायेंगे
सोख़ता जानों पे वो पुर–जोशे रहमत आये हैं
आबे कौसर से लगी दिल की बुझाते जायेंगे

आफ़्ताब उनका ही चमकेगा जब औरों के चराग़
सरसरे जोशे बला से झिलमिलाते जायेंगे

पाये कूबाँ पुल से गुज़रेंगे तेरी आवाज़ पर
'रब्बे सल्लिम' की सदा पर वज्द लाते जायेंगे
सरवरे दीं लीजे अपने नातवानों की ख़बर
नफ़्सो शैताँ सय्यिदा कब तक दबाते जायेंगे
हश्र तक डालेंगे हम पैदाइशे मौला की धूम
मिस्ले फ़ारस नज्द के क़िलअ़े गिराते जायेंगे
ख़ाक होजायें अ़दू जल कर मगर हम तो **रज़ा**
दम में जब तक दम है ज़िक्र उनका सुनाते जायेंगे

चमक तुझ से पाते हैं

चमक तुझ से पाते हैं सब पाने वाले
मेरा दिल भी चमकादे चमकाने वाले
बरसता नहीं देख कर अबरे रह्मत
बदों पर भी बरसा दे बरसाने वाले
मदीने के ख़ित्ते ख़ुदा तुझको रक्खे
ग़रीबों फ़क़ीरों के ठहराने वाले
तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले
में मुजरिम हूं आक़ा मुझे साथ ले लो
कि रस्ते में हैं जा बजा थाने वाले

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौका है ओ जाने वाले
चल उठ जब्ह फरसा हो साक़ी के दर पर
दरे जूद है मेरे मस्ताने वाले
तेरा खायें तेरे .ग़ुलामों से उल्झें
हैं मुन्किर अ़जब खाने ग़ुर्राने वाले
रहेगा यूं ही उन का चरचा रहेगा
पड़े खाक होजायें जल जाने वाले
अब आई शफ़ाअ़त की साअ़त अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले
रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना
कहाँ तुमने देखे हैं चन्दराने वाले

आँखें रो-रो के

आँखें रो-रो के सुजाने वाले
जाने वाले नहीं आने वाले
कोई दिन में ये सरा ऊजड़ है
अरे ओ छाऊनी छाने वाले
ज़ब्ह होते हैं वतन से बिछड़े
देस क्यों गाते हैं गाने वाले

अरे बद–फ़ाल बुरी होती है
देस का जंगला सुनाने वाले

सुनलें अअ्दा मैं बिगड़ने का नहीं
वोह सलामत हैं बनाने वाले

आँखें कुछ कहती हैं तुझसे पैग़ाम
ओ दरे यार के ज़ाने वाले

फिर न करवट ली मदीने की तरफ़
अरे चल झूटे बहाने वाले

नफ़्स मैं ख़ाक हुआ तू न मिटा
है मेरी जान के खाने वाले

जीते क्या देख के हैं ऐ हूरो
तैबा से ख़ुल्द में आने वाले

नीम जल्वे में दो आलम गुलज़ार
वाह–वा रंग जमाने वाले

हुस्न तेरा सा न देखा न सुना
कहते हैं अगले ज़माने वाले

वही धूम उनकी है माशा अल्लाह
मिट गये आप मिटाने वाले

लबे सैराब का सदक़ा पानी
ऐ लगी दिल की बुझाने वाले
साथ ले लो मुझे मैं मुजरिम हूं
राह में पड़ते हैं थाने वाले
हो गया धक से कलेजा मेरा
हाय रुख़्सत की सुनाने वाले
ख़ल्क़ तो क्या कि हैं ख़ालिक़ को अज़ीज़
कुछ अजब भाते हैं भाने वाले
कुश्तए दश्ते हरम जन्नत की
खिड़कियां अपने सिरहाने वाले
क्यों रज़ा आज गली सूनी है
उठ मेरे धूम मचाने वाले

क्या महकते हैं

क्या महकते हैं महकने वाले
बू पे चलते हैं भटकने वाले
जगमगा उट्ठी मेरी गोर की ख़ाक
तेरे क़ुरबान चमकने वाले
महे बे-दाग़ के सदक़े जाऊँ
यूं दमकते हैं दमकने वाले

अ़र्श तक फैली है ताबे आरिज़
क्या झलकते हैं झलकने वाले
गुले तैबा की सना गाते हैं
नख्ले तूबा पे चहकने वाले
आसियो थाम लो दामन उन का
वोह नहीं हाथ झटकने वाले
अब्रे रह्मत के सलामी रहना
फलते हैं पौदे लचकने वाले
अरे यह जल्वा-गहे जानाँ है
कुछ अदब भी है फड़कने वाले

सुन्नियो! उन से मदद मांगे जाओ
पड़े बकते रहें बकने वाले
शमअ़ यादे रुख़े जानाँ न बुझे
ख़ाक हो जायें भड़कने वाले
मौत कहती है कि जल्वा है क़रीब
इक ज़रा सोलें बिलकने वाले
कोई उन तेज़-रवों से कह दो
किसके होकर रहें थकने वाले

दिल सुलगता ही भला है ऐ ज़ब्त
बुझ भी जाते हैं दहकने वाले

हम भी कुम्हलाने से ग़ाफ़िल थे कभी
क्या हंसा ग़ुन्चे चटकने वाले

नख़्ल से छुटके यह क्या हाल हुआ
आह ओ पत्ते खड़कने वाले

जब गिरे मुँह सूए मय–ख़ाना था
होश में हैं ये बहकने वाले

देख ओ ज़ख़्मे दिल आपे को संभाल
फूट बहते हैं तपकने वाले

मय कहां और कहां मैं ज़ाहिद
यूं भी तो छकते हैं छकने वाले

कफ़े दरियाए करम में हैं **रज़ा**
पांच फ़व्वारे छलकने वाले

राह पुर–ख़ार है

राह पुरख़ार है क्या होना है
पाँव अफ़गार है क्या होना है

ख़ुश्क है ख़ून कि दुश्मन ज़ालिम
सख़्त ख़ूंख़्वार है क्या होना है

हमको बिद कर वही करना जिससे
दोस्त बेज़ार है क्या होना है

तन की अब कौन ख़बर ले हे–है
दिल का आज़ार है क्या होना है

मीठे शरबत दे मसीहा जब भी
ज़िद है इंकार है क्या होना है

दिल कि तीमार हमारा करता
आप बीमार है क्या होना है

पर कटे, तंग क़फ़स और बुलबुल
नौ–गिरिफ़्तार है क्या होना है

छुपके लोगों से किये जिस के गुनाह
वोह ख़बरदार है क्या होना है

अरे ओ मुज्रिमे बे–परवा देख
सर पे तल्वार है क्या होना है

तेरे बीमार को मेरे ईसा
ग़श लगातार है क्या होना है

नफ़्से पुरज़ोर का वो ज़ोर और दिल
ज़ेर है ज़ार है क्या होना है

काम ज़िन्दों के किये और हमें
शौक़े गुलज़ार है क्या होना है

हाये रे नींद मुसाफ़िर तेरी
कूच तैयार है क्या होना है

दूर जाना है रहा दिन थोड़ा
राह दुश्वार है क्या होना है

घर भी जाना है मुसाफ़िर कि नहीं
मत पे क्या मार है क्या होना है

जान हल्कान हुई जाती है
बार सा बार है क्या होना है

पार जाना है नहीं मिलती नाव
ज़ोर पर धार है क्या होना है

राह तो तैग़ पर और तल्वों को
गिलए ख़ार है क्या होना है

रौशनी की हमें आ़दत और घर
तीरा–वो तार है क्या होना है

बीच में आग का दरिया हाइल
क़स्द उस पार है क्या होना है

इस कड़ी धूप को क्यों कर झेलें
शोला ज़न नार है क्या होना है

हाय बिगड़ी तू कहां आकर नाव
ऐन मंजधार है क्या होना है

कल तो दीदार का दिन और यहाँ
आँख बेकार है क्या होना है

मुंह दिखाने का नहीं और सहर
आम दरबार है क्या होना है

उनको रहम आए तो आए वरना
वोह कड़ी मारै क्या होना है

ले वो हाकिम के सिपाही आए
सुबहे इज़हार है क्या होना है

वाँ नहीं बात बनाने की मजाल
चारा इक़रार है क्या होना है

साथ वालों ने यहीं छोड़ दिया
बेकसी यार है क्या होना है

आख़री दीद है आओ मिल लें
रंज बेकार है क्या होना है

दिल हमें तुम से लगाना ही न था
अब सफर बार है क्या होना है
जाने वालों पे ये रोना कैसा
बन्दा नाचार है क्या होना है
नज़अ में ध्यान न बट जाये कहीं
यह अ़बस प्यार है क्या होना है
इसका ग़म है कि हर एक की सूरत
गले का हार है क्या होना है
बातें कुछ और भी तुम से करते
पर कहाँ वार है क्या होना है
क्यों **रज़ा** कुढ़ते हो हंसते उट्ठो
जब वोह ग़फ़्फ़ार है क्या होना है

किसके जल्वे की झलक

किसके जल्वे की झलक है ये उजाला क्या है
हर तरफ़ दीदए हैरत ज़दा तकता क्या है
मांग मन मानती मुंह मांगी मुरादें लेगा
न यहाँ 'ना' है न मंगता से यह कहना 'क्या है'
पन्द कड़वी लगे नासेह से तुर्श हो ऐ नफ़्स
ज़हरे इस्याँ में सितमगर तुझे मीठा क्या है

हम हैं उनके वोह हैं तेरे तो हुये हम तेरे
इससे बढ़कर तेरी सम्त और वसीला क्या है
उनकी उम्मत में बनाया उन्हें रह़मत भेजा
यूं न फ़रमा कि तेरा रहम में दावा क्या है
सदक़ा प्यारे की हया का कि न ले मुझसे हिसाब
बख़्श बे पूछे लजाये को लजाना क्या है
ज़ाहिद उनका मैं गुनहगार वोह मेरे शाफ़ेअ़
इतनी निस्बत मुझे क्या कम है तू समझा क्या है
बे बसी हो जो मुझे पुरसिशे आमाल के वक़्त
दोस्तो क्या कहूं उस वक़्त तमन्ना क्या है
काश फ़रियाद मेरी सुनके यह फ़रमायें हुज़ूर
हाँ कोई देखो ये क्या शोर है ग़ौग़ा क्या है
कौन आफ़त–ज़दा है किस पे बला टूटी है
किस मुसीबत में गिरिफ़्तार है सदमा क्या है
किससे कहता है कि लिल्लाह ख़बर लीजे मेरी
क्यों है बेताब ये बेचैनी का रोना क्या है
उसकी बेचैनी से है ख़ातिरे अक़्दस पे मलाल
बेकसी कैसी है पूछो कोई गुज़रा क्या है

यूं मलाइक करें मअरूज़ कि इक मुज्रिम है
उससे पुरसिश है बता तूने किया क्या क्या है

सामना कहर का है दफ़्तरे आमाल हैं पेश
डर रहा है कि ख़ुदा हुक्म सुनाता क्या है

आप से करता है फ़रियाद कि या शाहे रुसुल
बन्दा बेकस है शहा रहम में वक़्फ़ा क्या है

अब कोई दम में गिरिफ़्तारे बला होता हूं
आप आजायें तो क्या ख़ौफ़ है खटका क्या है

सुनके यह अर्ज़ मेरी बहरे करम जोश में आय
यूं मलाइक को हो इरशाद ठहरना क्या है

किसको तुम मौरिदे आफ़ात किया चाहते हो
हम भी तो आके ज़रा देखें तमाशा क्या है

उनकी आवाज़ पे कर उट्ठूँ मैं बेसाख़्ता शोर
और तड़प कर ये कहूं अब मुझे परवा क्या है

लो वो आया मेरा हामी मेरा ग़मख़्वारे उमम
आगयी जाँ तने बे जाँ में यह आना क्या है

फिर मुझे दामने अक़्दस में छुपालें सरवर
और फ़रमायें हटो इस पे तक़ाज़ा क्या है

बन्दा आज़ाद शुदा है यह हमारे दर का
कैसा लेते हो हिसाब इसपे तुम्हारा क्या है
छोड़कर मुझको फ़रिश्ते कहें महकूम हैं हम
हुक्मे वाला की न तअ़मील हो ज़हरा क्या है
यह समां देख के महशर में उठे शोर कि वाह
चश्मे बद दूर हो क्या शान है रुत्बा क्या है
सदके़ उस रहम के उस सायए दामन पे निसार
अपने बन्दे को मुसीबत से बचाया क्या है
ऐ **रज़ा** जाने अ़नादिल तेरे नग़मों के निसार
बुलबुले बाग़े मदीना तेरा कहना क्या है

सरवर कहूं कि....

सरवर कहूं कि मालिको मौला कहूं तुझे
बाग़े ख़लील का गुले ज़ेबा कहूं तुझे
हिरमां नसीब हूं तुझे उम्मीद गह कहूं
जानें मुरादो काने तमन्ना कहूं तुझे
गुलज़ारे क़ुदस का गुले रंगीं अदा कहूं
दरमाने दर्दे बुलबुले शैदा कहूं तुझे
सुब्हे वतन पे शामे ग़रीबाँ को दूं शरफ़
बेकस नवाज़ गेसूओं वाला कहूं तुझे

अल्लाह रे तेरे जिस्मे मुनव्वर की ताबिशें
ऐ जाने जाँ मैं जाने तजल्ला कहूं तुझे

बे दाग़ लाला या क़मरे बे–कलफ़ कहूं
बे ख़ार गुलबुने चमन–आरा कहूं तुझे

मुज्‌रिम हूं अपने अ़फ़्व का सामाँ करूं शहा
यानी शफ़ीअ़ रोज़े जज़ा का कहूं तुझे

इस मुर्दा दिलको मुज़्दा हयाते अबद का दूं
ताबो तवाने जाने मसीहा कहूं तुझे

तेरे तो वस्फ़ ऐबे तनाही से हैं बरी
हैराँ हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे

कह लेगी सब कुछ उनके सनाख़्वाँ की ख़ामुशी
चुप हो रहा है कहके मैं क्या क्या कहूं तुझे

लेकिन **रज़ा** ने ख़त्म सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

मुज़्दा बाद ऐ आ़सियो!

मुज़्दा बाद ऐ आसियो! शाफ़ेअ़ शहे अब्‌रार है
तहनियत ऐ मुज्‌रिमो ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है

अ़र्श–सा फ़र्शे ज़मीं है फ़र्श–पा अ़र्शे बरीं
क्या निराली तर्ज़ की नामे ख़ुदा रफ़्तार है

चाँद शक़ हो पेड़ बोलें जानवर सज्दा करें
'बारकल्लाह' मरजऐ आलम यही सरकार है

जिनको सूए आसमाँ फैलाके जलथल भर दिए
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हमको भी दरकार है

लब ज़ुलाले चश्मए कुन में गुंधे वक़्ते ख़मीर
मुर्दे ज़िन्दा करना ऐ जाँ तुमको क्या दुशवार है

गोरे-गोरे पाँव चमका दो ख़ुदा के वास्ते
नूर का तड़का हो प्यारे गोर की शब तार है

तेरे ही दामन पे हर आसी की पड़ती है नज़र
एक जाने बे ख़ता पर दो जहाँ का बार है

जोशे तूफ़ाँ बहरे बे-पायाँ हवा ना-साज़गार
नूह के मौला करम करले तो बेड़ा पार है

रह्मतुललिल-आलमीं तेरी दुहाई दब गया
अब तो मौला बे तरह सर पर गुनह का बार है

हैरतें हैं आईना-दारे व़फ़ूरे वस्फ़े गुल
उनके बुलबुल की ख़मोशी भी लबे इज़हार है

गूंज-गूंज उट्ठे हैं नग़्माते रज़ा से बोस्ताँ
क्यों न हो किस फूल की मिदह़त में वा मिन्क़ार है

अ़र्श की अ़क्ल दंग है

अ़र्श की अ़क्ल दंग है चर्ख़ में आसमान है
जाने मुराद अब किधर हाये तेरा मकान है

बज़्मे सनाए ज़ुल्फ़ में मेरी अरूसे फ़िक्र को
सारी बहारे हश्त ख़ुल्द छोटा सा इत्रदान है

अ़र्श पे जाके मुर्गे अ़क्ल थक के गिरा ग़श आगया
और अभी मंज़िलों परे पहला ही आस्तान है

अ़र्श पे ताज़ा छेड़ छाड़ फ़र्श पे तुर्फ़ा धूम धाम
कान जिधर लगाईये तेरी ही दास्तान है

इक तेरे रुख़ की रौशनी चैन है दो जहान की
इन्स का उन्स उसी से है जान की वो ही जान है

वो जो न थे तो कुछ न था वो जा न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है

गोद में आ़लमे शबाब हाले शबाब कुछ न पूछ
गुल्बुने बाग़े नूर की और ही कुछ उठान है

तुझ सा सियाहकार कौन उन सा शफ़ीअ़ है कहां
फिर वो तुझी को भूल जायें दिल ये तेरा गुमान है

पेशे नज़र वो नौ बहार सज्दे को दिल है बेक़रार
रोकिये सर को रोकिये हां यही इम्तेहान है

शाने ख़ुदा न साथ दे उनके ख़ेराम का वोह बाज़
सिद्रा से ता ज़मीं जिसे नर्म सी एक उड़ान है
बारे जलाल उठा लिया गरचे कलेजा शक़ हुआ
यूं तो ये माहे सब्ज़ रंग नज़्रों में धान पान है
ख़ौफ़ न रख **रज़ा** ज़रा तू तो है अ़ब्दे मुस्तफ़ा
तेरे लिए अमान है तेरे लिए अमान है

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा

उठा दो पर्दा दिखा दो चेहरा कि नूरे बारी हिजाब में है
ज़माना तारीक हो रहा है कि मेह्र कब से निक़ाब में है
नहीं वो मीठी निगाह वाला ख़ुदा की रह्मत है जल्वा फ़रमा
ग़ज़ब से उनके ख़ुदा बचाये जलाले बारी अ़ताब में है
जली–जली बू से उसकी पैदा है सोज़िशे इश्क़े चश्मे–वाला
कबाबे आहू में भी न पाया मज़ा जो दिल के कबाब में है
उन्हीं की बू मायए समन है उन्हीं का जल्वा चमन चमन है
उन्हीं से गुल्शन महक रहे हैं उन्हीं की रंगत गुलाब में है
तेरी जुलू में है माहे तैबा हिलाल हर मर्गो ज़िन्दगी का
ह़यात जाँ का रिकाब में है ममाते अअ़्दा का डाब में है

सियह लिबासाने दारे दुनिया व सब्ज़–पोशाने अर्शे आला
हर इक है उनके करम का प्यासा ये फैज उनकी जनाब में है

वो गुल हैं लबहाए नाज़ुक उनके हज़ारों झड़ते हैं फूल जिनसे
गुलाब गुल्शन में देखे बुलबुल ये देख गुल्शन गुलाब में है

जली है सोज़े जिगर से जाँ तक है तालिबे जल्वए मुबारक
दिखा दो वो लब कि आबे हैवाँ का लुत्फ़ जिनके ख़िताब में है

खड़े हैं मुन्कर नकीर सर पर न कोई हामी न कोई यावर
बता दो आकर मेरे पयम्बर कि सख़्त मुश्किल जवाब में है

खुदाए क़ह्हार है ग़ज़ब पर खुले हैं बदकारियों के दफ़्तर
बचा लो आकर शफ़ीअ़े मह्शर तुम्हारा बन्दा अ़ज़ाब में है

करीम ऐसा मिला कि जिसके खुले हैं हाथ और भरे ख़ज़ाने
बताओ ऐ मुफ़्लिसो कि फिर क्यों तुम्हारा दिल इज़्तेराब में है

गुनह की तारीकियाँ ये छाईं उमंड के काली घटायें आईं
ख़ुदा के ख़ुर्शीद मेहर फ़रमा कि ज़र्रा बस इज़्तेराब में है

करीम अपने करम का सदक़ा लईमे बे क़द्र को न शरमा
तू और **रज़ा** से हिसाब लेना **रज़ा** भी कोई हिसाब में है

अंधेरी रात है

अंधेरी रात है ग़म की घटा इस्याँ की काली है
दिले बेकस का इस आफ़त में आक़ा तू ही वाली है

न हो मायूस आती है सदा गोरे ग़रीबाँ से
नबी उम्मत का हामी है ख़ुदा बन्दों का वाली है

उतरते चाँद ढलती चाँदनी जो हो सके कर ले
अंधेरा पाख आता है ये दो दिन की उजाली है

अरे यह भेड़ियों का बन है और शाम आगई सर पर
कहाँ सोया मुसाफ़िर हाय कितना ला उबाली है

अंधेरा घर अकेली जान दम घुटता दिल उकताता
ख़ुदा को याद कर प्यारे वो साअ़त आने वाली है

ज़मीं तपती कटीली राह भारी बोझ घायल पाँव
मुसीबत झेलने वाले तेरा अल्लाह वाली है

न चौंका दिन है ढलने पर तेरी मंज़िल हुई खोटी
अरे ओ जाने वाले नींद ये कब की निकाली है

रज़ा मंज़िल तो जैसी है वो इक मैं क्या सभी को है
तुम उसको रोते हो यह तो कहो याँ हाथ ख़ाली है

गुनहगारों को हातिफ़ से

गुनहगारों को हातिफ़ से नवेदे ख़ुश मआली है
मुंबारक हो शफ़ाअत के लिए अह़मद सा वाली है
क़ज़ा ह़क़ है मगर उस शौक़ का अल्लाह वाली है
जो उनकी राह में जाए वो जान अल्लाह वाली है
तेरा क़द्दे मुबारक गुल्बुने रह़मत की डाली है
उसे बोकर तेरे रब ने बिना रह़मत की डाली है
तुम्हारी शर्म से शाने जलाले ह़क़ टपकती है
ख़मे गर्दन हिलाले आस्माने ज़ुलजलाली है
ज़हे ख़ुद गुम जो गुम होने पे यह ढूंढे कि क्या पाया
अरे जब तक कि पाना है जभी तक हाथ ख़ाली है
मैं इक मुहताजे बे–वक़्अ़त गदा तेरे सगे दर का
तेरी सरकार वाला है तेरा दरबार आली है
तेरी बख़्शिश पसन्दी उज़्र जूई तौबा ख़्वाही से
उमूमे बेगुनाही जुर्म शाने ला–उबाली है
अबू बकरो उमर उस्मानो हैदर जिसके बुलबुल हैं
तेरा सर्वे सही उस गुल्बुने–ख़ूबी की डाली है
रज़ा क़िस्मत ही खुल जाए जो गीलाँ से ख़िताब आए
कि तू अदना सगे दरगाहे ख़ुद्दामे मआली है

सूना जंगल

सूना जंगल रात अंधेरी छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

आँख से काजल साफ़ चुरालें याँ वो चोर बला के हैं
तेरी गठरी ताकी है और तूने नींद निकाली है

यह जो तुझको बुलाता है यह ठग है मार ही रक्खेगा
हाए मुसाफ़िर दम में न आना मत कैसी मतवाली है

सोना पास है सूना बन है सोना ज़हर है उठ प्यारे
तू कहता है नींद है मीठी तेरी मत ही निराली है

आँखें मलना झुंझला पड़ना लाखों जमाई अंगड़ाई
नाम पर उठने के लड़ता है उठना भी कुछ गाली है

जुगनू चमके पत्ता खड़के मुझ तन्हा का दिल धड़के
डर समझाए कोई पवन है या अगिया बैताली है

बादल गरजे बिजली तड़पे धक से कलेजा हो जाए
बन में घटा की भयानक सूरत कैसी काली काली है

पाँव उठा और ठोकर खाई कुछ संभला फिर औंधे मुंह
मेंह ने फिसलन कर दी है और धुर तक खाई नाली है

साथी–साथी कहके पुकारूँ साथी हो तो जवाब आए
फिर झुंझला कर सर दे पटकूं चल रे मौला वाली है

फिर फिर कर हर जानिब देखूं कोई आस न पास कहीं
हाँ एक टूटी आस ने हारे जी से रिफ़ाक़त पाली है

तुम तो चाँद अ़रब के हो प्यारे तुम तो अ़जम के सूरज हो
देखो मुझ बेकस पर शब ने कैसी आफ़त डाली है

दुनिया को तू क्या जाने यह बिस की गांठ है हर्राफ़ा
सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली भाली है

शहद दिखाए ज़हर पिलाए क़ातिल डाइन शौहर कुश
इस मुर्दार पे क्या ललचाया दुनिया देखी भाली है

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकायें अपना हाथ ही ख़ाली है

मौला तेरे अ़फ़्वो करम हों मेरे गवाह सफ़ाई के
वरना **रज़ा** से चोर पे तेरी डिगरी तो इक़बाली है

नबी सरवरे हर रसूलो वली है

नबी सरवरे हर रसूलो वली है
नबी राज़दारे मअल्लाहे ली है

वो नामी कि नामे ख़ुदा नाम तेरा
रऊफ़ो रहीमो अ़लीमो अ़ली है

है बेताब जिसके लिए अ़र्शे आज़म
वो उस रहरवे लामकाँ की गली है

नकीरैन करते हैं तअ़ज़ीम मेरी
फ़िदा होके तुझपर ये इ़ज़्ज़त मिली है

तलातुम है कश्ती पे तूफ़ाने ग़म का
ये कैसी हवाए मुख़ालिफ़ चली है

न क्योंकर कहूं या ह़बीबी अग़िस्नी
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

सबा है मुझे सर–सरे दश्ते तैबा
इसी से कली मेरे दिल की खिली है

तेरे चारों हमदम हैं यकजान यकदिल
अबू बक्र फ़ारूक़ उस्माँ अ़ली है

ख़ुदा ने किया तुझको आगाह सबसे
दो आ़लम में जो कुछ ख़फ़ी वो जली है

करूं अ़र्ज़ क्या तुझ से ऐ आ़लिमुस्सिर्र
कि तुझ पर मेरी हालते दिल खुली है
तमन्ना है फ़रमाईए रोज़े मह्शर
ये तेरी रिहाई की चिट्ठी मिली है
जो मक़सद ज़ियारत का बर आए फिर तो
न कुछ क़स्द कीजे ये क़स्दे दिली है
तेरे दर का दरबाँ है जिब्रीले आज़म
तेरा मदह ख़्वाँ हर नबी वो वली है
शफ़ाअ़त करे हश्र में जो रज़ा की
सिवा तेरे यह किसको क़ुदरत मिली है

न अ़र्शे ऐमन

न अ़र्शे ऐमन न इन्नी ज़ाहिबुन में मेहमानी है
न लुत्फ़े उदनु या अहमद नसीबे लन–तरानी है
नसीबे दोस्ताँ गर उनके दर पर मौत आनी है
ख़ुदा यूंही करे फिर तो हमेशा ज़िन्दगानी है
उसी दर पर तड़पते हैं मचलते हैं बिलकते हैं
उठा जाता नहीं क्या ख़ूब अपनी नातवानी है
हर एक दीवारो दर पर मेह्र ने की है जबीं–साई
निगारे मस्जिदे अक़्दस में कब सोने का पानी है

तेरे मंगता की ख़ामोशी शफ़ाअ़त ख्वाह है उसकी
ज़बाने बे ज़बानी तर्जुमाने ख़स्ता जानी है

खुले क्या राज़े महबूबो मुहिब्ब मस्ताने ग़फ़लत पर
शराबे क़द र–अल्हक़ ज़ेबे जामे मन–रआनी है

जहाँ की ख़ाकरूबी ने चमन–आरा किया तुझको
सबा हमने भी उन गलियों की कुछ दिन ख़ाक छानी है

शहा क्या ज़ात तेरी हक़ नुमा है फ़र्दे इमकाँ में
कि तुझसे कोई अव्वल है न तेरा कोई सानी है

कहाँ उस कोशके जाने जिनाँ में ज़र की नक़्क़ाशी
इरम के ताइरे रंगे–परीदा की निशानी है

ज़ियाबुन फ़ी सियाबिन लब पे कल्मा दिल में गुस्ताख़ी
सलाम इस्लामे मुलहिद को, कि तस्लीमे ज़बानी है

ये अक्सर साथ उनके शाना वो मिस्वाक का रहना
बताता है कि दिल रेशों पे ज़ाइद मेहरबानी है

इसी सरकार से दुनिया व दीं मिलते हैं साइल को
यही दरबारे–आली कन्ज़े आमालो अमानी है

दुरूदें सूरते हाला मुहीते माहे तैबा हैं
बरसता उम्मते आ़सी पे अब रह्मत का पानी है

तआ़लल्लाह इस्तिग़ना तेरे दर के गदाओं का
कि उनको आ़र फ़र्रो शौकते साहब क़ेरानी है
वो सरगर्मे शफ़ाअ़त हैं अ़रक़ अफ़्शाँ है पेशानी
करम का इत्र संदल की ज़मीं रह्मत की घानी है
ये सर हो और वो ख़ाके दर वो ख़ाके दर हो और ये सर
रज़ा वो भी अगर चाहें तो अब दिल में ये ठानी है

सुनते हैं कि मह्शर में

सुनते हैं कि मह्शर में सिर्फ़ उनकी रसाई है
गर उनकी रसाई है लो जब तो बन आई है
मचला है कि रह्मत ने उम्मीद बंधाई है
क्या बात तेरी मुज्रिम क्या बात बनाई है
सबने सफ़े मह्शर में लल्कार दिया हमको
ऐ बेकसों के आक़ा अब तेरी दुहाई है
यूं तो सब उन्हीं का है पर दिल की अगर पूछो
यह टूटे हुए दिल ही ख़ास उनकी कमाई है
ज़ाइर गए भी कब के दिन ढलने पे है प्यारे
उठ मेरे अकेले चल क्या देर लगाई है
बाज़ारे अ़मल में तो सौदा न बना अपना
सरकार करम तुझ में ऐबी की समाई है

गिरते हुओं को मुज़्दा सज्दे में गिरे मौला
रो–रो के शफ़ाअ़त की तम्हीद उठाई है

ऐ दिल ये सुलगना क्या जलना है तो जल भी उठ
दम घुटने लगा ज़ालिम क्या धूनी रमाई है

मुज्रिम को न शर्माओ अहबाब कफ़न ढक दो
मुंह देख के क्या होगा पर्दे में भलाई है

अब आप् ही संभालें तो काम अपने संभल जायें
हमने तो कमाई सब खेलों में गंवाई है

ऐ इश्क़ तेरे सद्क़े जलने से छुटे सस्ते
जो आग बुझा देगी वोह आग लगाई है

हिर्सो हवसे बद से दिल तू भी सितम कर ले
तू ही नहीं बेगाना दुनिया ही पराई है

हम दिल जले हैं किसके हट फ़ित्नों के परकाले
क्यों फूंक दूं इक उफ़ से क्या आग लगाई है

तैबा न सही अफ़ज़ल मक्का ही बड़ा ज़ाहिद
हम इश्क़ के बन्दे हैं क्यों बात बढ़ाई है

मत्लअ़ में यह शक क्या था वल्लाह रज़ा वल्लाह
सिर्फ़ उनकी रसाई है सिर्फ़ उनकी रसाई है

हिर्ज़े जाँ ज़िक्रे शफ़ाअ़त

हिर्ज़े जाँ ज़िक्रे शफ़ाअ़त कीजिए
नार से बचने की सूरत कीजिए

उनके नक़्शे पा पे ग़ैरत कीजिए
आँख से छुप कर ज़ियारत कीजिए

उनके हुस्ने बा मलाहत पर निसार
शीरए जाँ की हलावत कीजिए

उनके दर पर जैसे हो मिट जाईए
नातवानो! कुछ तो हिम्मत कीजिए

फेर दीजे पंजए देवे लईं
मुस्तफ़ा के बल पे ताक़त कीजिए

डूब कर यादे लबे शादाब में
आबे कौसर की सबाहत कीजिए

यादे क़ामत करते उठिये क़ब्र से
जाने मह्शर पर क़ियामत कीजिए

उनके दर पर बैठिये बन कर फ़क़ीर
बेनवाओ फ़िक्रे सरवत कीजिए

जिसका हुस्न अल्लाह को भी भा गया
ऐसे प्यारे से महब्बत कीजिए

हय्ये बाक़ी जिसकी करता है सना
मरते दम तक उसकी मिदहत कीजिए
अ़र्श पर जिसकी कमानें चढ़ गयीं
सदक़े उस बाज़ू पे क़ुव्वत कीजिए
नीम वा तैबा के फूलों पर हो आँख
बुलबुलो पासे नजाकत कीजिए
सर से गिरता है अभी बारे गुनाह
ख़म ज़रा फ़र्क़े इरादत कीजिए
आँख तो उठती नहीं क्या दें जवाब
हम पे बे पुरसिश ही रह़मत कीजिए
उज़्रे बदतर अज़ गुनह का ज़िक्र क्या
बे सबब हम पर इनायत कीजिए
नअ़रा कीजे या रसूलल्लाह का
मुफ़्लिसो सामाने दौलत कीजिए
हम तुम्हारे होके किसके पास जायें
सदक़ा शहज़ादों का रह़मत कीजिए
मन रआनी क़द्‌ र अल्‌हक़ जो कहे
क्या बयाँ उसकी हक़ीक़त कीजिए
अ़ालिमे इल्मे दो अ़ालम हैं हुज़ूर
आप से क्या अ़र्ज़ हाजत कीजिए

आप सुल्ताने जहाँ हम बे–नवा
याद हमको वक़्ते निअ़मत कीजिए
तुझ से क्या क्या ऐ मेरे तैबा के चाँद
ज़ुल्मते ग़म की शिकायत कीजिए
दर बदर कब तक फिरें ख़स्ता ख़राब
तैबा में मद्फ़न इनायत कीजिए
हर बरस वो क़ाफ़िलों की धूम–धाम
आह सुनिए और ग़फ़्लत कीजिए
फिर पलट कर मुंह न उस जानिब किया
सच है और दावाए उल्फ़त कीजिए
अक़्रेबा हुब्बे वतन बे हिम्मती
आह किस किसकी शिकायत कीजिए
अब तो आक़ा मुंह दिखाने का नहीं
किस तरह रफ़अ़े नदामत कीजिए
अपने हाथों ख़ुद लुटा बैठे हैं घर
किस पे दावाए बज़ाअ़त कीजिए
किससे कहिए क्या किया क्या होगया
ख़ुद ही अपने पर मलामत कीजिए
अ़र्ज़ का भी अब तो मुंह पड़ता नहीं
क्या इलाजे दर्दे फ़ुरक़त कीजिए

अपनी इक मीठी नज़र के शहद से
चारए ज़हरे मुसीबत कीजिए

दे ख़ुदा हिम्मत कि यह जाने हज़ीं
आप पर वारें वो सूरत कीजिए

आप हमसे बढ़ के हम पर मेहरबाँ
हम करें जुर्म आप रह्मत कीजिए

जो न भूला हम ग़रीबों को **रज़ा**
याद उसकी अपनी आ़दत कीजिए

दुश्मने अहमद पे शिद्दत

दुश्मने अह़मद पे शिद्दत कीजिए
मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजिए

ज़िक्र उन का छेड़िए हर बात में
छेड़ना शैताँ का आ़दत कीजिए

मिस्ले फ़ारस ज़ल्ज़ले हों नज्द में
ज़िक्रे आयाते वेलादत कीजिए

ग़ैज़ में जल जायें बेदीनों के दिल
या रसूलल्लाह की कस्रत कीजिए

कीजिए चर्चा उन्हीं का सुबहो शाम
जाने काफ़िर पर क़ियामत कीजिए

आप दरगाहे ख़ुदा में हैं वजीह
हाँ शफ़ाअ़त बिलवजाहत कीजिए
हक़ तुम्हें फ़रमा चुका अपना ह़बीब
अब शफ़ाअ़त बिलमह़ब्बत कीजिए
इज़्न कबका मिल चुका अब तो हु़ज़ूर
हम ग़रीबों की शफ़ाअत कीजिए
मुल्हिदों का शक निकल जाए हु़ज़ूर
जानिबे मह फिर इशारत कीजिए
शिर्क ठहरे जिसमें तअ़ज़ीमे ह़बीब
उस बुरे मज़्हब पे लअ़नत कीजिए
ज़ालिमो मह़बूब का ह़क़ था यही
इश्क़ के बदले अ़दावत कीजिए
वज़्ज़ुहा हुज्रात अलम नश्रह से फिर
मोमिनो इतमामे हुज्जत कीजिए
बैठते–उठते हु़ज़ूरे पाक से
इल्तेजा वो इस्तेआ़नत कीजिए
या रसूलल्लाह दुहाई आप की
गोशमाले अहले बिदअ़त कीजिए
ग़ौसे आज़म आप से फ़रियाद है
ज़िन्दा फिर यह पाक मिल्लत कीजिए

या ख़ुदा तुझ तक है सब का मुन्तहा
औलिया को हुक्मे नुस्रत कीजिए
मेरे आक़ा हज़्रते अच्छे मियां
हो **रज़ा** अच्छा वो सूरत कीजिए

शुक्रे ख़ुदा कि आज

शुक्रे ख़ुदा कि आज घड़ी उस सफ़र की है
जिस पर निसार जान फ़लाहो ज़फ़र की है
गर्मी है, तप है, दर्द है, कुल्फ़त सफ़र की है
ना शुक्र यह तो देख अ़ज़ीमत किधर की है
किस ख़ाके पाक की तू बनी खाके पा शिफ़ा
तुझ को क़सम जनाबे मसीह़ा के सर की है
आबे हयाते रूह़ है 'ज़रक़ा' की बूंद बूंद
अक्सीर आज़मे मसे दिल ख़ाक दर की है
हम को तो अपने साये में आराम ही से लाये
ह़ीले बहाने वालों को यह राह डर की है
लुटते हैं मारे जाते हैं यूंही सुना किये
हर बार दी वो अम्न कि ग़ैरत हज़र की है
वो देखो जगमगाती है शब और क़मर अभी
पहरों नहीं कि बिस्तो चहारुम सफ़र की है

माहे मदीना अपनी तजल्ली अता करे
यह ढलती चाँदनी तो पहर दो पहर की है

मन ज़ार–तुर्बती व–ज–बत लह शफ़ाअ़ती
उन पर दुरूद जिनसे नवेद इन बुशर की है

इसके तुफ़ैल हज भी ख़ुदा ने करा दिये
अस्ले मुराद हाज़री उस पाक दर की है

कअ़बा का नाम तक न लिया तैबा ही कहा
पूछा था हमसे जिसने कि नुहज़त किधर की है

कअ़बा भी है उन्हीं की तजल्ली का एक ज़िल्ल
रौशन उन्हीं के अ़क्स से पुतली हजर की है

होते कहाँ ख़लीलो बिना कअ़बा वो मिना
लौ–लाक वाले साहेबी सब तेरे घर की है

मौला अ़ली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वह भी अ़स्र सबसे जो आला ख़तर की है

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जाँ उस पे दे चुके
और हिफ़्ज़े जाँ तो जान ़फ़ुरूज़े ग़ुरर की है

हाँ तू ने उनको जान, उन्हें फेर दी नमाज़
पर वह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है

साबित हुआ कि जुमला फ़राइज़ ़फ़ुरूअ़ हैं
अस्‌लुल–उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

शर ख़ैर, शोर सूर, शरर दूर, नार नूर
बुशरा कि बारगाह ये ख़ैरुल बशर की है
मुज्‌रिम बुलाये आए हैं *'जाऊ-क'* है गवाह
फिर रद हो कब ये शान करीमों के दर की है
बद हैं मगर उन्हीं के हैं बाग़ी नहीं हैं हम
नज्दी न आए उसको ये मन्ज़िल ख़तर की है
तुफ़ नज्दियत न कुफ़्र न इस्लाम सब पे हर्फ़
काफ़िर इधर की है न उधर की अधर की है
हाकिम हकीम दादो दवा दें ये कुछ न दें
मरदूद यह मुराद किस आयत ख़बर की है
शकले बशर में नूरे इलाही अगर न हो
क्या क़द्र उस ख़मीरए माओ मदर की है
नूरे इलाह क्या है महब्बत हबीब की
जिस दिल में ये न हो वो जगह ख़ूको ख़र की है
ज़िक्रे ख़ुदा जो उनसे जुदा चाहो नज्दियो
वल्लाह ज़िक्रे हक़ नहीं कुंजी सक़र की है
बे उनके वास्ते के ख़ुदा कुछ अ़ता करे
हाशा ग़लत, ग़लत यह हवस बे बसर की है
मक़सूद ये हैं आदमो नूहो ख़लील से
तुख़्मे करम में सारी करामत समर की है

उनकी नबुव्वत उनकी उबुव्वत है सबको आम
उम्मुल बशर अ़रूस उन्हीं के पेसर की है
ज़ाहिर में मेरे फूल हकीक़त में मेरे नख़्ल
उस गुल की याद में ये सदा बुल बशर की है
पहले हो उनकी याद कि पाये जिला नमाज़
यह कहती है अज़ान जो पिछले पहर की है
दुनिया, मज़ार, हश्र, जहाँ हैं ग़फ़ूर हैं
हर मंजिल अपने चाँद की मंज़िल ग़फ़र की है
उन पर दुरूद जिनको हजर तक करें सलाम
उन पर सलाम जिनको तहिय्यत शजर की है
उन पर दुरूद जिनको कसे बेकसां कहें
उन पर सलाम जिनको ख़बर बे ख़बर की है
जिन्नो बशर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह बारगाह मालिके जिन्नो बशर की है
शम्सो क़मर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
ख़ूबी उन्हीं की जोत से शम्सो क़मर की है
सब बहरो बर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
तम्लीक उन्हीं के नाम तो हर बहरो बर की है
संगो शजर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
कल्मे से तर ज़बान दरख़्तो हजर की है

अर्ज़ो असर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
मल्जा ये बारगाहे दुआओ असर की है
शोरीदा–सर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
राहत उन्हीं के कदमों में शोरीदा–सर की है
ख़स्ता–जिगर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
मरहम यहीं की ख़ाक तो ख़स्ता जिगर की है
सब ख़ुश्को तर सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह जल्वा गाह मालिके हर ख़ुश्को तर की है
सब कर्रो फ़र सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
टोपी यहीं तो ख़ाक पे हर कर्रो फ़र की है
अह्ले नज़र सलाम को हाज़िर हैं अस्सलाम
यह गर्द ही तो सुर्मा सब अह्ले नज़र की है
आंसू बहा कि बह गये काले गुनह के ढेर
हाथी डुबाव–झील यहां चश्मे–तर की है
तेरी क़ज़ा ख़लीफ़ए अहकामे ज़िल्जलाल
तेरी रज़ा हलीफ़ कज़ावो क़दर की है
यह प्यारी–प्यारी कियारी तेरे ख़ाना बाग़ की
सर्द इसकी आबो ताब से आतिश सक़र की है
जन्नत में आ के नार में जाता नहीं कोई
शुक्रे ख़ुदा नवेद नजातो ज़फ़र की है

मोमिन हूं, मोमिनों पे रऊफ़ुर् रहीम हो
साइल हूं, साइलों को ख़ुशी ला–नहर की है
दामन का वास्ता मुझे इस धूप से बचा
मुझको तो शाक़ जाड़ों में उस दोपहर की है
माँ दोनों भाई बेटे भतीजे अज़ीज़ दोस्त
सब तुझको सौंपे मिल्क ही सब तेरे घर की है
जिन–जिन मुरादों के लिये अहबाब ने कहा
पेशे ख़बीर क्या मुझे हाजत ख़बर की है
फ़ज़्ले ख़ुदा से ग़ैबे शहादत हुआ उन्हें
इस पर शहादत आयतो वह़ियो असर की है
कहना न कहने वाले थे जब से तू इत्तेलाअ़
मौला को क़ौलो क़ाइलो हर ख़ुश्को तर की है
उन पर किताब उतरी बयानल लिकुल्लि शै
तफ़्सील जिसमें मा अ़बर–ो मा ग़ंबर की है
आगे रही अ़ता, वो बक़दरे तलब तो क्या
आ़दत यहाँ उम्मीद से भी बेशतर की है
बे मांगे देने वाले की निअ़मत में ग़र्क़ हैं
मांगे से जो मिले किसे फ़हम इस क़दर की है
अह्बाब इससे बढ़ के तो शायद न पायें अ़र्ज़
ना करदा अ़र्ज़, अ़र्ज़ यह तर्ज़े दिगर की हैं

दन्दाँ का नअत ख़्वाँ हूं न पायाब होगी आब
नद्दी गले–गले मेरे आबे गुहर की है
दश्ते ह़रम में रहने दे सय्याद अगर तुझे
मिट्टी अज़ीज़ बुलबुले बे–बालो पर की है
या रब रज़ा न अहमदे पारीना होके जाय
यह बारगाह तेरे ह़बीबे–अबर्र की है
तौफ़ीक़ दे कि आगे न पैदा हो ख़ूए–बद
तब्दील कर जो खस्लते–बद पेशतर की है
आ कुछ सुना दे इश्क़ के बोलों में ऐ रज़ा
मुश्ताक़ तब्अ लज़्ज़ते सोज़े जिगर की है

भीनी सुहानी सुब्ह़

भीनी सुहानी सुब्ह़ में ठंडक जिगर की है
कलियाँ खिलीं दिलों की हवा यह किधर की है
खुबती हुई नज़र में अदा किस सहर की है
चुभती हुई जिगर में सदा किस जिगर की है
डालें हरी–हरी हैं तो बालें भरी–भरी
किश्ते अमल–परी है ये बारिश किधर की है
हम जायें और क़दम से लिपट कर हरम कहे
सौंपा ख़ुदा को यह अ़ज़मत किस सफ़र की है

हम गिर्दे कअ़बा फिरते थे कल तक और आज वह
हम पर निसार है ये इरादत किधर की है

कालिक जबीं की सज्दए दर से छुड़ाओगे
मुझ को भी ले चलो ये तमन्ना हजर की है

डूबा हुआ है शौक़ में ज़मज़म और आँख से
झाले बरस रहे हैं ये हसरत किधर की है

बरसा कि जाने वालों पे गौहर करूं निसार
अबरे करम से अ़र्ज़ यह मीज़ाबे–ज़र की है

आग़ोशे शौक़ खोले है जिनके लिए हतीम
वो फिर के देखते नहीं ये धुन किधर की है

हाँ–हाँ रहे मदीना है ग़ाफ़िल ज़रा तू जाग
ओ पाँव रखने वाले ये जा चश्मो सर की है

वारूं क़दम क़दम पे कि हर दम है जाने नौ
यह राहे जाँ–फ़िज़ा मेरे मौला के दर की है

घड़ियाँ गिनी हैं बरसों कि यह शुभ घड़ी फिरी
मर मर के फिर ये सिल मेरे सीने से सर की है

अल्लाहु अकबर अपने क़दम और ये ख़ाके पाक
हसरत मलाइका को जहाँ वज़्अ़े सर की है

मेअ़राज का समाँ है कहाँ पहुंचे ज़ाइरो
कुर्सी से ऊँची कुर्सी उसी पाक घर की है

उश्शाके रौज़ा सज्दे में सूए हरम झुके
अल्लाह जानता है कि नीयत किधर की है
यह घर ये दर है उसका जो घर दर से पाक है
मुज़्दा हो बे–घरो कि सला अच्छे घर की है
महबूबे रब्बे अ़र्श है इस सब्ज़ .क़ुब्बे में
पहलू में जल्वा–गाह अ़तीक़ो उ़मर की है
छाए मलाइका हैं लगातार है दुरूद
बदले हैं पहरे बदली में बारिश दुरर की है
सअ़दैन का क़िरान है पहलुए माह में
झुरमुट किये हैं तारे तजल्ली क़मर की है
सत्तर हज़ार सुबह हैं सत्तर हज़ार शाम
यूं बन्दगीए .ज़ुल्फ़ो रुख़ आठों पहर की है
जो एक बार आए दोबारा न आयेंगे
रुख़्सत ही बारगाह से बस इस क़दर की है
तड़पा करें बदल के फिर आ़ना कहाँ नसीब
बे–हुक्म कब मजाल परिन्दे को पर की है
ऐ वाय बेकसीए तमन्ना कि अब उमीद
दिन को न शाम की है न शब को सहर की है
यह बदलियाँ न हों तो करोरों की आस जाये
और बारगाह मरहमते आ़म तर की है

मासूमों को है उम्र में सिर्फ़ एक बार 'बार'
आसी पड़े रहें तो सिला उम्र भर की है

जि़न्दा रहें तो हाज़िरी–ए–बारगह नसीब
मर जायें तो हयाते–अ़बद ऐश घर की है

मुफ़्लिस और ऐसे दर से फिरे बे ग़नी हुए
चाँदी हर इक तरह तो यहाँ गदिया गर की है

जानाँ पे तकिया ख़ाक निहाली है दिल निहाल
हाँ बेनवाओ ख़ूब ये सूरत गुज़र की है

हैं चतरो तख़्त साय–ए–दीवारो ख़ाके दर
शाहों को कब नसीब ये धज करों फ़र की है

इस पाक कू में ख़ाक ये बसर सर–बख़ाक हैं
समझे हैं कुछ यही जो हक़ीक़त बसर की है

क्यों ताजदारो ख़्वाब में देखी कभी ये शै
जो आज झोलियों में गदायाने दर की है

जारू–कशों में चेहरे लिखे हैं मुलूक के
वह भी कहाँ नसीब फ़क़त नाम भर की है

तैबा में मर के ठंडे चले जाओ आँखें बन्द
सीधी सड़क यह शहरे शफ़ाअ़त–नगर की है

आ़सी भी हैं चहीते ये तैबा है ज़ाहिदो
मक्का नहीं कि जाँच जहाँ ख़ैरो शर की है

शाने जमाले तयबए जानाँ है नफ़अ़े महज़
वुस्अ़त जलाले मक्का में सूदो ज़रर की है
कअ़बा है बेशक अंजुमन–आरा दुल्हन मगर
सारी बहार दुल्हनों में दूल्हा के घर की है
कअ़बा दुल्हन है तुरबते–अतहर नयी दुल्हन
यह रश्के आफ़ताब वो ग़ैरत क़मर की है
दोनों बनीं सजीली अनीली बनी मगर
जो पी के पास है वोह सुहागन कुंवर की है
सर–सब्ज़े वस्ल ये है सियह–पोशे हिज्र वोह
चमकी दुपट्टों से है जो हालत जिगर की है
मा वो शुमा तो क्या कि ख़लीले जलील को
कल देखना कि उनसे तमन्ना नज़र की है
अपना शरफ़ दुआ से है बाक़ी रहा क़बूल
यह जानें उनके हाथ में कुंजी असर की है
जो चाहे उनसे मांग कि दोनों जहाँ की ख़ैर
ज़र ना–ख़रीदा एक कनीज़ उनके घर की है
रूमी .गुलाम दिन हबशी बांदियाँ शबें
गिन्ती कनीज़ ज़ादों में शामो सहर की है
इतना अ़जब बुलन्दीए जन्नत पे किस लिए
देखा नहीं कि भीक ये किस ऊँचे घर की है

अ़र्शे–बरीं पे क्यों न हो फ़िरदौस का दिमाग़
उतरी हुई शबीह तेरे बामो दर की है
वोह खुल्द जिसमें उतरेगी अबरार की बरात
अदना निछावर उस मेरे दूल्हा के सर की है
अ़म्बर ज़मीं अबीर हुआ मुश्के–तर ग़ुबार
अदना सी यह शनाख़्त तेरी रहगुज़र की है
सरकार हम गंवारों में तरज़े अदब कहाँ
हमको तो बस तमीज़ यही भीक भर की है
माँगेंगे माँगे जायेंगे मुँह माँगी पायेंगे
सरकार में न 'ला' है न हाजत 'अगर' की है
उफ़ बे–हयाईयाँ कि यह मुंह और तेरे हुज़ूर
हाँ तू करीम है तेरी ख़ू दर गुज़र की है
तुझसे छुपाऊँ मुंह तो करूं किसके सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ुअ़ नज़र की है
जाऊँ कहां पुकारूं किसे किस का मुंह तकूं
क्या पुरसिश और जा भी सगे बे–हुनर की है
बाबे अ़ता तो ये है जो बहका इधर–उधर
कैसी ख़राबी उस नघरे दर–बदर की है
आबाद एक दर है तेरा और तेरे सिवा
जो बारगाह देखिए ग़ैरत खंडर की है

लब वा हैं आँखें बन्द हैं फैली हैं झोलियाँ
कितने मज़े की भीक तेरे पाक दर की है

घेरा अंधेरियों ने दुहाई है चाँद की
तन्हा हूं काली रात है मंज़िल ख़तर की है

क़िस्मत में लाख पेच हों, सौ बल, हज़ार कज
यह सारी गुत्थी इक तेरी सीधी नज़र की है

ऐसी बंधी नसीब खुले मुश्किलें खुलीं
दोनों जंहाँ में धूम तुम्हारी कमर की है

जन्नत न दें, न दें तेरी रुयत हो ख़ैर से
उस गुल के आगे किसको हवस बरगो बर की है

शरबत न दें, न दें, तो करे बात लुत्फ़ से
यह शहद हो तो फिर किसे परवा शकर की है

मैं ख़ाना–ज़ाद कोहना हूं सूरत लिखी हुयी
बन्दों, कनीज़ों में मेरे मादर–पेदर की है

मंगता का हाथ उठते ही दाता की देन थी
दूरी क़बूलो अ़र्ज़ में बस हाथ भर की है

सनकी वो देख बादे शफ़ाअ़त कि दे हवा
यह आबरू **रज़ा** तेरे दामाने–तर की है

वो सरवरे किश्वरे रिसालत

वो सरवरे किश्वरे रिसालत जो अर्श पर जल्वागर हुए थे
नये निराले तरब के सामाँ अरब के मेहमान के लिए थे

बहार है शादियाँ मुबारक चमन को आबादियाँ मुबारक
मलक फ़लक अपनी अपनी लै में ये घर अ़नादिल का बोलते थे

वहाँ फ़लक पर यहाँ ज़मीं में रची थी शादी मची थीं धूमें
उधर से अन्वार हंसते आते इधर से नफ़हात उठ रहे थे

ये छूट पड़ती थी उनके रुख़ की कि अ़र्श तक चाँदनी थी छिटकी
वो रात क्या जगमगा रही थी जगह–जगह नस्ब आईने थे

नयी दुल्हन की फबन में कअ़बा निखर के संवरा संवर के निखरा
हजर के सदक़े कमर के इक तिल में रंग लाखों बनाव के थे

नज़र में दुल्हा के प्यारे जल्वे हया से मेहराब सर झुकाए
सियाह पर्दे के मुंह पर आंचल तजल्लीए ज़ात बहत से थे

ख़ुशी के बादल उमंड के आए दिलों के ताऊस रंग लाए
वो नग़्मए नअ़त का समाँ था हरम को ख़ुद वज्द आ रहे थे

ये झूमा मीज़ाबे ज़र का झूमर कि आ रहा कान पर ढलक कर
फूहार बरसी तो मोती झड़ कर हतीम की गोद में भरे थे

दुल्हन की ख़ुशबू से मस्त कपड़े नसीम गुस्ताख़ आँचलों से
ग़िलाफ़े मुश्कीं जो उड़ रहा था ग़ज़ाल नाफ़े बसा रहे थे

पहाड़ियों का वो हुस्ने तज़ईं वो ऊँची चोटी वो नाज़ो तमकीं
सबा से सब्ज़ा में लहरें आतीं दोपट्टे धानी चुने हुए थे

नहा के नहरों ने वोह चमकता लिबास आबे रवाँ का पहना
कि मौजें छड़ियां थीं धार लचका हुबाबे ताबाँ के थल टिके थे

पुराना पुर दाग़ मलगजा था उठा दिया फ़र्श चाँदनी का
हुजूमे तारे निगह से कोसों क़दम-क़दम फ़र्श बादले थे

ग़ुबार बनकर निसार जायें कहाँ अब उस रह-गुज़र को पायें
हमारे दिल हूरियों की आँखें फ़रिश्तों के पर जहाँ बिछे थे

ख़ुदा ही दे सब्र जाने पुर ग़म दिखाऊँ क्योंकर तुझे वो आ़लम
जब उनको झुरमुट में लेके क़ुदसी जिनाँ का दुल्हा बना रहे थे

उतार कर उनके रुख़ का सदक़ा ये नूर का बट रहा था बाड़ा
कि चाँद सूरज मचल-मचल कर जबीं की ख़ैरात मांगते थे

वही तो अब तक छलक रहा है वही तो जोबन टपक रहा है
नहाने में जो गिरा था पानी कटोरे तारों ने भर लिए थे

बचा जो तल्वों का उनके धोवन बना वो जन्नत का रंगो रौग़न
जिन्हों ने दुल्हा की पाई उतरन वो फूल गुलज़ारे नूर के थे

ख़बर ये तहवीले मेहर की थी कि रुत सुहानी घड़ी फिरेगी
वहाँ की पोशाक ज़ेबे तन की यहाँ का जोड़ा बढ़ा चुके थे

तजल्लीए हक़ का सेहरा सर पर सलातो तस्लीम की निछावर
दो रूया क़ुदसी परे जमा कर खड़े सलामी के वास्ते थे

जो हम भी वाँ होते खाके गुल्शन लिपट के क़दमों से लेते उतरन
मगर करें क्या नसीब में तो ये नामुरादी के दिन लिखे थे

अभी न आए थे पुश्ते ज़ीं तक कि सर हुई मग़्फ़िरत की शिल्लक
सदा शफ़ाअ़त ने दी मुबारक गुनाह मस्ताना झूमते थे

अ़जब न था रख़्श का चमकना ग़ज़ाले दम ख़ुर्दा सा भड़कना
शुआ़एं बुक्के उड़ा रहीं थीं तड़पते आँखों पे साअ़के थे

हुजूमे उम्मीद है घटाओ मुरादें देकर उन्हें हटाओ
अदब की बागें लिए बढ़ाओ मलाइका में ये ग़लग़ले थे

उठी जो गर्दे रहे–मुनव्वर वो नूर बरसा कि रास्ते भर
घिरे थे बादल भरे थे जल–थल उमंड के जंगल उबल रहे थे

सितम किया कैसी मत कटी थी क़मर वो ख़ाक उनकी रह गुज़र की
उठा न लाया कि मिलते–मिलते ये दाग़ सब देखता मिटे थे

बुराक़ के नक़्शे सुम के सदक़े वो गुल खिलाए कि सारे रस्ते
महकते गुल्बुन महकते गुल्शन हरे भरे लहलहा रहे थे

नमाज़े अक़्सा में था यही सिर अयाँ हों मअ़नीए अव्वल आख़िर
कि दस्त–बस्ता हैं पीछे हाज़िर जो सल्तनत आगे कर गए थे

ये उनकी आमद का दबदबा था निखार हर शै का हो रहा था
नुजूमो अफ़लाक जामो मीना उजालते था खंगालते थे

निक़ाब उल्टे वो मेहरे अनवर–जलाले रुख़सार गर्मियों पर
फ़लक को हैबत से तप चढ़ी थी तपकते अंजुम के आबले थे

ये जोशिशे नूर का असर था कि आबे गौहर कमर–कमर था
सफ़ाए रह से फिसल–फिसल कर सितारे क़दमों पे लोटते थे

बढ़ा ये लहरा के बहरे वहदत कि धुल गया नामे रेगे कसरत
फ़लक के टीलों की क्या हक़ीक़त ये अ़र्शो कुर्सी दो बुलबुले थे

वो ज़िल्ले रहमत वो रुख़ के जल्वे कि तारे छुपते न खिलने पाते
सुनहरी ज़रबफ़्त ऊदी अतलस ये थान सब धूप छाँव के थे

चला वो सरवे चमाँ ख़रामाँ न रुक सका सिद्रा से भी दामाँ
पलक झपकती रही वो कब के सब ईनो आँ से गुज़र चुके थे

झलक सी इक क़ुद्सियों पर आई हवा भी दामन की फिर न पाई
सवारी दूल्हा की दूर पहुंची बरात में होश ही गए थे

थके थे रूहुलअमीं के बाज़ू छुटा वो दामन कहाँ वो पहलू
रिकाब छूटी उम्मीद टूटी निगाहे हस्रत के वलवले थे

रविश की गर्मी को जिसने सोचा दिमाग़ से इक भबूका फूटा
ख़िरद के जंगल में फूल चमका दहर–दहर पेड़ जल रहे थे

जिलो में जो मुर्ग़े अक़्ल उड़े थे अ़जब बुरे हालों गिरते पड़ते
वो सिद्‌रा ही पर रहे थे थक कर चढ़ा था दम तेवर आगये थे

क़वी थे मुर्ग़ाने वह्म के पर उड़े तो उड़ने को और दम भर
उठाई सीने की ऐसी ठोकर कि ख़ूने अंदेशा थूकते थे

सुना ये इतने में अ़र्शे ह़क़ ने कि ले मुबारक हों ताज वाले
वही क़दम ख़ैर से फिर आए जो पहले ताजे शरफ़ तेरे थे

ये सुन के बे–ख़ुद पुकार उट्ठा निसार जाऊँ कहाँ हैं आक़ा
फिर उनके तल्वों का पाऊँ बोसा ये मेरी आँखों के दिन फिरे थे

झुका था मुजरे को अ़र्शे–आला गिरे थे सज्दे में बज़्मे–बाला
ये आँखें क़दमों से मल रहा था वो गिर्द क़ुरबान हो रहे थे

ज़ियायें कुछ अ़र्श पर ये आई कि सारी क़िन्दीलें झिलमिलाई
हुज़ूरे ख़ुर्शीद क्या चमकते चराग़ मुंह अपना देखते थे

यही समाँ था कि पैके रह्‌मत ख़बर ये लाया कि चलिए हज़रत
तुम्हारी ख़ातिर कुशादा हैं जो कलीम पर बन्द रास्ते थे

बढ़ ऐ मुहम्मद क़रीं हो अहमद क़रीब आ सरवरे मुमज्जद
निसार जाऊँ ये क्या निदा थी य क्या समाँ था ये क्या मज़े थे

तबारकल्लाह शान तेरी तुझी को ज़ेबा है बे नियाज़ी
कहीं तो वोह जोशे लन-तरानी कहीं तक़ाज़े विसाल के थे

ख़िरद से कहदो कि सर झुकाले गुमाँ से गुज़रे गुज़रने वाले
पड़े हैं याँ ख़ुद जेहत को लाले किसे बताए किधर गए थे

सुराग़े ऐनो मता कहाँ था निशाने कैफ़ो इला कहाँ था
न कोई राही न कोई साथी न संगे मंज़िल न मरहले थे

उधर से पैहम तक़ाज़े आना इधर था मुश्किल क़दम बढ़ाना
जलालो हैबत का सामना था जमालो रह्मत उभारते थे

बढ़े तो लेकिन झिझकते डरते हया से झुकते अदब से रुकते
जो क़ुर्ब उन्हीं की रविश पे रखते तो लाखों मंज़िल के फ़ासले थे

पर उनका बढ़ना तो नाम को था हक़ीक़तन फ़ेअ़ल था उधर का
तनज़्ज़ुलों में तरक़्क़ी-अफ़ज़ा दनातदल्ला के सिलसिले थे

हुआ न आख़िर कि एक बजरा तमव्वुजे बहरे 'हू' में उभरा
दना की गोदी में उनको लेकर फ़ना के लंगर उठा दिए थे

किसे मिले घाट का किनारा किधर से गुज़रा कहाँ उतारा
भरा जो मिस्ले नज़र तरारा वो अपनी आँखों से ख़ुद छुपे थे

उठे जो क़सरे दना के पर्दे कोई ख़बर दे तो क्या ख़बर दे
वहाँ तो जा ही नहीं दुई की न कह कि वो भी न थे अरे थे

वो बाग कुछ ऐसा रंग लाया कि गुंचा वो गुल का फ़र्क उठाया
गिरह में कलियों की बाग फूले गुलों के तुकमे लगे हुए थे

मुहीतो मर्कज में फ़र्क मुश्किल रहे न फ़ासिल ख़ुतूते वासिल
कमाने हैरत में सर झुकाए अजीब चक्कर में दायरे थे

हिजाब उठने में लाखों पर्दे हर एक पर्दे में लाखों जल्वे
अजब घड़ी थी कि वस्लो फ़ुरकत जनम के बिछड़े गले मिले थे

ज़बानें सूखी दिखा के मौजें तड़प रही थीं कि पानी पायें
भंवर को यह ज़ोफ़े तिशनगी था कि हलके आँखों में पड़ गए थे

वही है अव्वल वही है आखिर वही है बातिन वही है ज़ाहिर
उसी के जल्वे उसी से मिलने उसी से उसकी तरफ़ गए थे

कमाने इमकाँ के झूटे नुक़्तो तुम अव्वल आखिर के फेर में हो
मुहीत की चाल से तो पूछो किधर से आए किधर गए थे

उधर से थीं नज़रे शह नमाज़ें इधर से इन्आमे ख़ुसरवी में
सलामो रहमत के हार गुंध कर गुलूए पुर नूर में पड़े थे

ज़बान को इन्तेज़ारे गुफ़्तन तो गोश को हसरते शुनीदन
यहाँ जो कहना था कह लिया था जो बात सुननी थी सुन चुके थे

वो बुर्जे बत्हा का माह–पारा बहिश्त की सैर को सिधारा
चमक पे था ख़ुल्द का सितारा कि उस क़मर के क़दम गए थे

सुरूरे मक़दम की रौशनी थी कि ताबिशों से महे अरब की
जिनाँ के गुलशन थे झाड फ़र्शी जो फूल थे सब कंवल बने थे

तरब की नाज़िश कि हाँ लचकिए अदब वो बन्दिश कि हिल न सकिए
ये जोशे ज़िद्दैन था कि पौदे कशाकशे अर्रा के तले थे

ख़ुदा की क़ुदरत कि चाँद हक़ के करोरों मंज़िल में जल्वा करके
अभी न तारों की छाँव बदली कि नूर के तड़के आ लिए थे

नबीए रहमत शफ़ीअे उम्मत **रज़ा** पे लिल्लाह हो इनायत
इसे भी उन ख़िलअतों से हिस्सा जो ख़ास रहमत के वाँ बटे थे

सनाए सरकार है वज़ीफ़ा क़बूले सरकार है तमन्ना
न शायेरी की हवस न परवा–रवी थी क्या कैसे क़ाफ़ीये थे

रुबाइयात

आते रहे अम्बिया *कमा क़ी–ल लहुम*
वल–ख़ातमु हक़्क़ुकुम कि ख़ातम हुए तुम
यानी जो हुआ दफ़्तरे तनज़ील तमाम
आख़िर में हुई मुहर कि *अक्मल्तु लकुम*

❊

शब लिह्या वो शारिब है रुख़े रौशन दिन
गेसू वो शबे क़द्रो बाराते मोमिन
मिज़गाँ की सफ़ें चार हैं दो अबरू हैं
वल्–फ़ज्र के पहलू में *लयालिन अ़श़रिन*

❁

अल्लाह की सर ता ब–क़दम शान हैं ये
इन सा नहीं इंसान वो इन्सान हैं ये
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें
ईमान ये कहता है मेरी जान हैं ये

❁

बोसा–गहे असहाब वो मुहरे सामी
वोह शानए चप में उसकी अ़म्बर फ़ामी
यह तुर्फ़ा कि है कअ़बए जाना दिल में
संगे असवद नसीबे रुक्ने शामी

❁

कअ़बा से अगर तुरबते शह फ़ाज़िल है
क्यों बायें तरफ़ उसके लिए मंज़िल है

इस फ़िक्र में जो दिल की तरफ़ ध्यान गया
समझा कि वो जिस्म है यह मर्क़दे दिल है

❊

तुम चाहो तो क़िस्मत की मुसीबत टल जाय
क्यों कर कहूं साअ़त से क़ियामत टल जाय
लिल्लाह उठा दो रुख़े रौशन से निक़ाब
मौला मेरी आई हुई शामत टल जाय

❊

याँ शिब्हे शबीह का गुज़रना कैसा
बे मिस्ल की तिम्साल संवरना कैसा
उनका मुतअ़ल्लिक़ है तरक़्क़ी पे मुदाम
तस्वीर का फिर कहिए उतरना कैसा

❊

यह शह की तवाज़ुअ़ का तक़ाज़ा ही नहीं
तस्वीर खिंचे उनको गवारा ही नहीं
मअ़ना हैं ये मानी कि करम क्या माने
खिंचना तो यहाँ किसी से ठहरा ही नहीं

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा रज़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का नअ़तिया दीवान

दूसरा हिस्सा

कहाँ क्या है

सुब्ह तैबा में हुई

सुब्ह तैबा में हुई बटता है बाड़ा नूर का
सदक़ा लेने नूर का आया है तारा नूर का

बाग़े तैबा में सुहाना फूल फूला नूर का
मस्त बू हैं बुलबुलें पढ़ती हैं कल्मा नूर का

बारहवीं के चाँद का मुजरा है सज्दा नूर का
बारह बुर्जों से झुका एक इक सितारा नूर का

उनके कसरे क़द्र से खुल्द एक कमरा नूर का
सिदरा पाईं बाग में नन्हा सा पौदा नूर का

अर्श भी फ़िर्दौस भी उस शाहे वाला नूर का
यह मुसम्मन बुर्ज वो मुश्कूए आला नूर का

आई बिद्अ़त छाई ज़ुल्मत रंग बदला नूर का
माहे सुन्नत मेहरे तल्अत ले ले बदला नूर का

तेरे ही माथे रहा ऐ जान सेहरा नूर का
बख़्त जागा नूर का चमका सितारा नूर का

मैं गदा तू बादशाह भर दे प्याला नूर का
नूर दिन दूना तेरा दे डाल सदका नूर का
तेरी ही जानिब है पाँचों वक्त सज्दा नूर का
रुख़ है किब्ला नूर का अबरू है कअ़बा नूर का
पुश्त पर ढलका सरे अनवर से शम्ला नूर का
देखें मूसा तूर से उतरा सहीफ़ा नूर का
ताज वाले देख कर तेरा अमामा नूर का
सर झुकाते हैं इलाही बोल बाला नूर का
बीनिए पुर–नूर पर रख़्शा है बुक्का नूर का
है लिवाउलहम्द पर उड़ता फरेरा नूर का
मुस्हफ़े आरिज पे है ख़त्ते शफ़ीआ़ नूर का
लो सियह कारो मुबारक हो क़बाला नूर का
आबे ज़र बनता है आ़रिज़ पर पसीना नूर का
मुस्हफ़े एअ्‌जाज़ पर चढ़ता है सोना नूर का
पेच करता है फ़िदा होने को लम्‌आ़ नूर का
गिर्दे सर फिरने को बनता है अ़मामा नूर का
हैबते आ़रिज़ से थर्राता है शोअ़ला नूर का
कफ़्शे पा पर गिरके बन जाता है गुफ्फा नूर का
शमअ़ दिल मिश्कात तन सीना ज़ुजाजा नूर का
तरी सूरत के लिए आया है सूरा नूर का

मैल से किस दर्जा सुथरा है वो पुतला नूर का
है गले में आज तक कोरा ही कुर्ता नूर का
तेरे आगे खाक पर झुकता है माथा नूर का
नूर ने पाया तेरे सज्दे से सीमा नूर का
तू है साया नूर का हर अ़ज़्व टुकड़ा नूर का
साये का साया न होता है न साया नूर का
क्या बना नामे ख़ुदा इसरा का दूल्हा नूर का
सर पे सेहरा नूर का बर में शहाना नूर का
बज़्मे वहदत में मज़ा होगा दोबाला नूर का
मिलने शमअ़े तूर से जाता है इक्का नूर का
वस्फ़े रुख़ में गाती हैं हूरें तराना नूर का
क़ुदरती बीनों में क्या बजता है लहरा नूर का
यह किताबे कुन में आया तुर्फ़ा आयः नूर का
ग़ैरे क़ाइल कुछ न समझा कोई मअ़ना नूर का
देखने वालों ने कुछ देखा न भाला नूर का
मन रआ कैसा? ये आईना दिखाया नूर का
सुब्ह करदी कुफ़्र की सच्चा था मुज़्दा नूर का
शाम ही से था शबे–तीरा को धड़का नूर का
पड़ती है नूरी भरन उमडा है दरिया नूर का
सर झुका ऐ किश्ते कुफ़्र आता है अह्ला नूर का

नारियों का दौर था दिल जल रहा था नूर का
तुमको देखा हो गया ठन्डा कलेजा नूर का
नस्ख़े अदियाँ कर के ख़ुद क़ब्ज़ा बिठाया नूर का
ताजवर ने कर लिया कच्चा इलाक़ा नूर का
जो गदा देखो लिए जाता है तोड़ा नूर का
नूर की सरकार है क्या इस में तोड़ा नूर का
भीक ले सरकार से ला जल्द कासा नूर का
माहे नौ तैबा में बटता है महीना नूर का
देख उनके होते नाज़ेबा है दावा नूर का
मेहर लिख दे याँ के ज़र्रों को मुचल्का नूर का
याँ भी दाग़े सज्दए–तैबा है तमग़ा नूर का
ऐ क़मर क्या तेरे ही माथे है टीका नूर का
शमअ़ साँ इक एक परवाना है उस बा नूर का
नूरे हक़ से लौ लगाए दिल में रिश्ता नूर का
अंजुमन वाले हैं अंजुम, बज़्मे हल्क़ा नूर का
चाँद पर तारों के झुरमुट से है हाला नूर का
तेरी नस्ले पाक में है बच्चा–बच्चा नूर का
तू है ऐने–नूर तेरा सब घराना नूर का
नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का
हो मुबारक तुमको ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

किस के पर्दे ने किया आईना अन्धा नूर का
मांगता फिरता है आँखें हर नगीना नूर का

अब कहाँ वो ताबिशें कैसा वो तड़का नूर का
मेहर ने छुप कर किया ख़ासा धुंधल्का नूर का

तुम मुकाबिल थे तो पहरों चाँद बढ़ता नूर का
तुम से छुट कर मुँह निकल आया ज़रा सा नूर का

क़ब्रे अन्वर कहिए या क़स्रे मुअ़ल्ला नूर का
चर्ख़े अतलस या कोई सादा सा .कुब्बा नूर का

आँख मिल सकती नहीं दर पर है पहरा नूर का
ताब है बे–हुक्म पर मारे परिन्दा नूर का

नज़अ़ में लोटेगा ख़ाके दर पे शैदा नूर का
मर के ओढ़ेगी अ़रूसे जाँ दोपट्टा नूर का

ताबे मेह्‌रे ह़श्र से चौंके न कुश्ता नूर का
बूंदियाँ रह्‌मत की देने आईं छींटा नूर का

वज़अ़े वाज़ेअ़ में तेरी सूरत है मअ़ना नूर का
यूं मजाज़न चाहें जिसको कहदें कल्मा नूर का

अंबिया अज्ज़ा हैं तू बिल्कुल है जुम्ला नूर का
इस इलाक़े से है उन पर नाम सच्चा नूर का

यह जो मेह्‌रो मह पे है इतलाक़ आता नूर का
भीक तेरे नाम की है इस्तेआ़रा नूर का

सुर्मगीं आँखें ह़रीमे हक़ के वो मुशकीं ग़ज़ाल
है फ़ज़ाए लामकाँ तक जिनका रम्ना नूर का
ताबे हुस्ने गर्म से खिल जायेंगे दिल के कंवल
नौ बहारें लाएगा गर्मी का झल्का नूर का
ज़र्रे मेहरे क़ुद्स तक तेरे तवस्सुत से गए
ह़द्दे अवसत ने किया सुग़्रा को कुब्रा नूर का
सब्ज़ए–गरदूं झुका था बहरे पा–बोसे बुराक़
फिर न सीधा हो सका खाया वो कोड़ा नूर का
ताबे सुमसे चौंधिया कर चाँद उन्हीं क़दमों फिरा
हंस के बिज्ली ने कहा देखा छलावा नूर का
दीदे नक़्शे सुम को निकली सात पर्दों से निगाह
पुत्लियाँ बोलीं चलो आया तमाशा नूर का
अक्से सुम ने चाँद सूरज को लगाए चार चाँद
पड़ गया सीमो ज़रे गरदूं पे सिक्का नूर का
चाँद झुक जाता जिधर उंगली उठाते महद में
क्या ही चलता था इशारों पर खिलौना नूर का
एक सीने तक मुशाबेह इक वहाँ से पाँव तक
हुस्ने सिब्तैन उनके जामों में है नीमा नूर का
साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अ़याँ
ख़त्ते तू अम में लिखा है ये दो वरक़ा नूर का

काफ़ गेसू *हा* दहन *या* अबरू आँखें *ऐन स्वाद*
काफ़ हा या ऐनस्वाद उनका है चेहरा नूर का
ऐ **रज़ा** यह अह़मदे नूरी का फ़ैज़े नूर है
हो गई मेरी ग़ज़ल बढ़कर कसीदा नूर का

तेरा ज़र्रा महे कामिल है

तेरा ज़र्रा महे कामिल है या ग़ौस
तेरा क़त्रा यमे साइल है या ग़ौस
कोई सालिक है या वासिल है या ग़ौस
वो कुछ भी हो तेरा साइल है या ग़ौस
क़दे बे साया ज़िल्ले किब्रिया है
तू इस बे साया ज़िल का ज़िल है या ग़ौस
तेरी जागीर में है शर्क़ ता ग़र्ब
क़लम रौ में ह़रम ता हिल है या ग़ौस
दिले इश्क़ो रुख़े हुस्न आईना हैं
और इन दोनों में तेरा ज़िल है या ग़ौस
तेरी शमए़ दिले आरा की तबो ताब
गुलो बुलबुल की आबो गिल है या ग़ौस
तेरा मज्नूं तेरा सह़रा तेरा नज्द
तेरी लैला तेरा मह़मिल है या ग़ौस

यह तेरी चम्पई रंगत हुसैनी
हसन के चाँद सुब्हे दिल है या ग़ौस
गुलिस्ताँ ज़ार तेरी पंखड़ी है
कली सौ ख़ुल्द का हासिल है या ग़ौस
उगाल उसका उधार अब्रार का हो
जिसे तेरा उलश हासिल है या ग़ौस
इशारे में किया जिसने क़मर चाक
तू उस मह का महे कामिल है या ग़ौस
जिसे अ़र्शे दोवुम कहते हैं अफ़लाक
वो तेरी कुर्सीए मंजिल है या ग़ौस
तू अपने वक़्त का सिद्दीक़े अकबर
ग़नी व हैदरो आ़दिल है या ग़ौस
वली क्या मुर्सल आयें ख़ुद हुज़ूर आयें
वो तेरी वअ़ज़ की मह्फ़िल है या ग़ौस
जिसे मांगे न पायें जाह वाले
वो बिन मांगे तुझे हासिल है या ग़ौस
फ़ुयूज़े आ़लिमे उम्मी से तुझ पर
अ़याँ माज़ी व मुस्तक़बिल है या ग़ौस

जो क़रनों सैर में आ़रिफ़ न पाएं
वो तेरी पहली ही मंज़िल है या ग़ौस

मलक मशग़ूल हैं उस की सना में
जो तेरा ज़ाकिरो शाग़िल है या ग़ौस

न क्यों हो तेरी मंज़िल अ़र्शे सानी
कि अ़र्शे ह़क़ तेरी मंज़िल है या ग़ौस

वहीं से उबले हैं सातों समुन्दर
जो तेरी नह्र का साहिल है या ग़ौस

मलाइक के बशर के जिन्न के हल्क़े
तेरी ज़ौ माहे हर मंज़िल है या ग़ौस

बुख़ारा व इराक़ो चिश्तो अजमेर
तेरी लौ शमअ़े हर महफ़िल है या ग़ौस

जो तेरा नाम ले ज़ाकिर है प्यारे
तसव्वुर जो करे शाग़िल है या ग़ौस

जो सर देकर तेरा सौदा ख़रीदे
ख़ुदा दे अ़क़्ल वो आ़क़िल है या ग़ौस

कहा तू ने कि जो मांगो मिलेगा
रज़ा तुझसे तेरा साइल है या ग़ौस

जो तेरा तिफ़्ल है कामिल

जो तेरा तिफ़्ल है कामिल है या ग़ौस
तुफ़ैली का लक़ब वासिल है या ग़ौस

तसव्वुफ़ तेरे मक्तब का सबक़ है
तसर्रुफ़ पर तेरा आमिल है या गौस

तेरी सैरे इलल्लाह ही है फ़िल्लाह
कि घर से चलते ही मूसिल है या ग़ौस

तू नूरे अव्वलो आख़िर है मौला
तू ख़ैरे आजिलो आजिल है या ग़ौस

मलक के कुछ बशर कुछ जिन्न के हैं पीर
तू शैखे़ आली व साफ़िल है या ग़ौस

किताबे हर दिल आसारे तअर्रुफ
तेरे दफ़्तर ही से नाक़िल है या गौस

फ़ुतूहुलग़ैब अगर रौशन न फ़रमाए
फ़ुतूहातो फ़ुसूस आफ़िल है या ग़ौस

तेरा मन्सूब है मरफ़ूअ उस जा
इज़ाफ़त रफ़अ की आमिल है या गौस

तेरे कामी मशक़्क़त से बरी हैं
कि बरतर नस्ब से फ़ाइल है या ग़ौस

अहद से अह़मद और अह़मद से तुझको
कुन और सब कुनमकुन हासिल है या ग़ौस
तेरी इ़ज़्ज़त तेरी रिफ़अ़त तेरा फ़ज़्ल
बिफ़ज़्लेही अफ़ज़लो फ़ाज़िल है या ग़ौस
तेरे जल्वे के आगे मिन्तक़ा से
महो ख़ुर पर ख़ते बातिल है या ग़ौस
सियाही माइल उसकी चाँदनी आई
क़मर का यूं फ़लक माइल है या ग़ौस
तिलाए मेहर है टक्साल बाहर
कि ख़ारिज मरकज़े ह़ामिल है या ग़ौस
तू बरज़ख़ है बरंगे नूने मिन्नत
दो जानिब मुत्तसिल वासिल है या ग़ौस
नबी से आख़िज़ और उम्मत पे फ़ाइज़
उधर क़ाबिल इधर फ़ाइल है या ग़ौस
नतीजा हद्दे अवसत गिर के दे और
यहाँ जब तक कि तू शामिल है या ग़ौस
अला तूबा लकुम है वोह कि जिनका
शबाना रोज़ विर्दे दिल है या ग़ौस
अ़जम कैसा, अ़रब, हिल, क्या, हरम में
जमी हर जा तेरी मह़फ़िल है या ग़ौस

है शरहे इस्मे अल्क़ादिर तेरा नाम
ये शरह उस मत्न की हामिल है या ग़ौस

जबीने जबहा फ़रसाई का सन्दल
तेरी दीवार की कहगिल है या ग़ौस

बजा लाया वो अमरे *सारेऊ़* को
तेरी जानिब जो मुस्तअ़जिल है या ग़ौस

तेरी .क़ुदरत तो फ़ितरिय्यात से है
कि क़ादिर नाम में दाख़िल है या ग़ौस

तसर्रुफ़ वाले सब मज़्हर हैं तेरे
तू ही उस पर्दे में फ़ाइल है या ग़ौस

रज़ा के काम और रुक जाएं हाशा
तेरा साइल है तू बाज़िल है या ग़ौस

बदल या फ़र्द

बदल या फ़र्द जो कामिल है या ग़ौस
तेरे ही दर से मुस्तक्मिल है या ग़ौस

जो तेरी याद से ज़ाहिल है या ग़ौस
वो ज़िक्रुल्लाह से ग़ाफ़िल है या ग़ौस

अनस्सय्याफ़ से जाहिल है या ग़ौस
जो तेरे फ़ज़्ल पर साइल है या ग़ौस

सुख़न हैं अस्फ़िया तू मग़्ज़े मअ़्ना
बदन हैं औलिया तू दिल है या ग़ौस
अगर वो जिस्मे इरफ़ाँ हैं तो तू आँख
अगर वो आँख हैं तू तिल है या ग़ौस
उलूहिय्यत, नबुव्वत के सिवा तू
तमाम अफ़ज़ाल का क़ाबिल है या ग़ौस
नबी के क़द्मों पर है जुज़ नबुव्वत
कि ख़त्म इस राह में हाइल है या ग़ौस
उलूहिय्यत ही अह़मद ने न पाई
नबुव्वत ही से तू आ़तिल है या ग़ौस
सहाबिय्यत हुई फिर ताबिइय्यत
बस आगे क़ादिरी मंज़िल है या ग़ौस
हज़ारों ताबेई से तो .फ़ुज़ूं है
वो तबक़ा मुज्मलन फ़ाज़िल है या ग़ौस
रहा मैदानो शहरिस्ताने इरफ़ाँ
तेरा रम्ना तेरी महफ़िल है या ग़ौस
ये चिश्ती सुह्रवरदी नक़्शबंदी
हर इक तेरी तरफ़ माइल है या ग़ौस
तेरी चिड़ियाँ हैं तेरा दाना पानी
तेरा मेला तेरी महफ़िल है या ग़ौस

उन्हें तो क़ादिरी बैअ़त है तज्दीद
वो हाँ ख़ाती तो मुस्तब्दिल है या ग़ौस
क़मर पर जैसे ख़ूर का यूं तेरा क़र्ज़
सब अहले नूर पर फ़ाज़िल है या ग़ौस
ग़लत करदम तू वाहिब है न मुक़रिज़
तेरी बख़्शिश तेरा नाइल है या ग़ौस
कोई क्या जाने तेरे सर का रुत्बा
कि तल्वा ताजे अह्ले दिल है या ग़ौस
मशाइख़ में किसी की तुझ पे तफ़्ज़ील
ब हुक्मे औलिया बातिल है या ग़ौस
जहाँ दुश्वार हो वहमे मुसावात
ये जुर्अत किस क़दर हाइल है या ग़ौस
तेरे ख़ुद्दाम के आगे है इक बात
जो और अक़्ताब को मुश्किल है या ग़ौस
उसे इद्बार जो मुद्बिर है तुझसे
वो ज़ी इक़्बाल जो मुक़्बिल है या ग़ौस
ख़ुदा के दर से है मतरूदो मख़ज़ूल
जो तेरा तारिको ख़ाज़िल है या ग़ौस
सितम कोरी वहाबी राफ़ेज़ी की
कि हिन्दू तक तेरा क़ाइल है या ग़ौस

वो क्या जानेगा फ़ज़्ले मुर्तज़ा को
जो तेरे फ़ज़्ल का जाहिल है या ग़ौस
रज़ा के सामने की ताब किस में
फ़लकवार उस पे तेरा ज़िल है या ग़ौस

तलब का मुँह तो किस क़ाबिल है

तलब का मुँह तो किस क़ाबिल है या ग़ौस
मगर तेरा करम कामिल है या ग़ौस
दुहाई या मुहीयुद्दीं दुहाई
बला इस्लाम पर नाजिल है या ग़ौस
वो संगीं बिदअतें वो तेज़ीए कुफ़्र
कि सर पर तैग़ दिल पर सिल है या ग़ौस
अ़.जूमन क़ातिलन इन्दल क़िताली
मदद को आदमे बिस्मिल है या ग़ौस
ख़ुदा–रा ना.ख़ुदा आ दे सहारा
हवा बिगड़ी भंवर हाइल है या ग़ौस
जिला दे दीं जला दे कुफ़्रो इल्हाद
कि तू मुह़यी है तू कातिल है या ग़ौस
तेरा वक़्त और पड़े यूं दीन पर वक़्त
न तू आजिज़ न तू ग़ाफ़िल है या ग़ौस

रही हाँ शामते आमाल यह भी
जो तू चाहे अभी ज़ाइल है या ग़ौस
ग़यूरा अपनी ग़ैरत का तसद्दुक़
वही कर जो तेरे क़ाबिल है या ग़ौस
ख़ुदा–रा मरहमे ख़ाके क़दम दे
जिगर ज़ख़्मी है दिल घायल है या ग़ौस
न देखूं शक्ले मुश्किल तेरे आगे
कोई मुश्किल सी ये मुश्किल है या ग़ौस
वो घेरा रिश्तए शिर्के ख़फ़ी ने
फंसा ज़ुन्नार में यह दिल है या ग़ौस
किए तरसा वो गब्र, अक़्ताबो अब्दाल
ये महज़ इस्लाम का साइल है या ग़ौस.
तू क़ुव्वत दे मैं तन्हा, काम बिस्यार
बदन कम्ज़ोर दिल काहिल है या ग़ौस
अ़दू बद–दीन मज़हब वाले हासिद
तू ही तन्हा का ज़ोरे दिल है या ग़ौस
हसद से उन के सीने पाक कर दे
कि बदतर दिक़ से भी यह सिल है या ग़ौस
ग़ेज़ाए दिक़ यही ख़ूं, उस्तख़ाँ, गोश्त
ये आतिशे दीन की आकिल है या ग़ौस

दिया मुझ को उन्हें महरूम छोड़ा
मेरा क्या जुर्म हक़ फ़ासिल है या ग़ौस
ख़ुदा से लें लड़ाई वो है मुअ्ती
नबी क़ासिम है तू मोसिल है या ग़ौस
अ़तायें मुक़्तदिर ग़फ़्फ़ार की हैं
अ़बस बन्दों के दिल में ग़िल है या ग़ौस
तेरे बाबा का फिर तेरा करम है
ये मुँह वरना किसी क़ाबिल है या ग़ौस
भरन वाले तेरा झाला तो झाला
तेरा छींटा मेरा ग़ासिल है या ग़ौस
सना मक़सूद है अर्ज़ ग़रज़ क्या
ग़रज़ का आप तो काफ़िल है या ग़ौस
रज़ा का ख़ात्मा बिलख़ैर होगा
तेरी रहमत अगर शामिल है या ग़ौस

कअ़बा के बदरुद्दुजा

कअ़बा के बदरुद्दुजा तुम पे करोरों दुरूद
तैबा के शम्सुज़्ज़ुहा तुम पे करोरों दुरूद
शाफ़िए रोज़े जज़ा तुम पे करोरों दुरूद
दाफ़िए जुमला बला तुम पे करोरों दुरूद

जानो दिले असफ़िया तुम पे करोरों दुरूद
आबो गिले अम्बिया तुम पे करोरों दुरूद

लायें तो यह दो–सरा दूसरा जिसको मिला
कोशके अर्शो दना तुम पे करोरों दुरूद

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहाँ हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोरों दुरूद

तूर पे जो शमअ़ था चाँद था साईर का
नय्यरे फ़ाराँ हुआ तुम पे करोरों दुरूद

दिल करो ठन्डा मेरा वो कफ़े पा चाँद सा
सीने पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद

ज़ात हुई इन्तेख़ाब वस्फ़ हुए लाजवाब
नाम हुआ मुस्तफ़ा तुम पे करोरों दुरूद

ग़ायतो इल्लत सबब बहूरे जहाँ तुम हो सब
तुम से बना तुम बेना तुम पे करोरों दुरूद

तुम से जहाँ की ह़यात तुम से जहाँ का सबात
अस्ल से है ज़िल बंधा तुम पे करोरों दुरूद

मग़्ज़ हो तुम और पोस्त और हैं बाहर के दोस्त
तुम हो दरूने सरा तुम पे करोरों दुरूद

क्या हैं जो बेहद हैं लौस तुम तो हो ग़ैस और ग़ौस
छींटे में होगा भला तुम पे करोरों दुरूद

तुम हो हफ़ीज़ो मुग़ीस क्या है वो दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोरों दुरूद

वह शबे मेअ़राज राज वह सफ़े महशर का ताज
कोई भी ऐसा हुआ तुम पे करोरों दुरूद

नुह़त फ़लाह़ल्फ़लाह़ रुह़-त फ़राह़ल मराह़
उ़दलि-य-ऊ़दल् ह़ना तुम पे करोरों दुरूद

जानो जहाने मसीह़ दाद कि दिल है जरीह़
नब्ज़ें छुटीं दम चला तुम पे करोरों दुरूद

उफ़ वो रहे संगलाख आह ये पा शाख़ शाख़
ऐ मेरे मुश्किलकुशा तुम पे करोरों दुरूद

तुम से खुला बाबे जूद तुम से है सब का वजूद
तुम से है सबकी बक़ा तुम पे करोरों दुरूद

ख़स्ता हूं और तुम मआ़ज़ बस्ता हूं और तुम मलाज़
आगे जो शह की रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

गरचे हैं बेहद क़ुसूर तुम हो अ़फ़ू वो ग़फ़ूर
बख़्श दो जुर्मो ख़ता तुम पे करोरों दुरूद

मेहरे ख़ुदा नूर नूर दिल है सियह दिन है दूर
शब में करो चाँदना तुम पे. करोरों दुरूद

तुम हो शहीदो बसीर और मैं गुनह पर दिलेर
खोल दो चश्मे हया तुम पे करोरों दुरूद

छींट तुम्हारी सहर छूट तुम्हारी क़मर
दिल में रचादो ज़िया तुम पे करोरों दुरूद
तुम से ख़ुदा का ज़ुहूर उससे तुम्हारा ज़ुहूर
लिम है यह वोह *इन* हुआ तुम पे करोरों दुरूद
बे हुनर वो बेतमीज़ किस को हुए हैं अज़ीज़
एक तुम्हारे सिवा तुम पे करोरों दुरूद
आस है कोई न पास एक तुम्हारी है आस
बस है यही आसरा तुम पे करोरों दुरूद
तारिमे आला का अर्श जिस कफ़े पा का है फ़र्श
आँखों पे रख दो ज़रा तुम पे करोरों दुरूद
कहने को हैं आमो ख़ास एक तुम्हीं हो ख़लास
बन्द से कर दो रिहा तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो शिफ़ाए मरज़ ख़ल्के ख़ुदा ख़ुद ग़रज़
ख़ल्क़ की हाजत भी क्या तुम पे करोरों दुरूद
आह वो राहे सिरात बन्दों की कित्नी बिसात
अल्मदद ऐ रहनुमा तुम पे करोरों दुरूद
बेअदब व बद लिहाज़ कर न सका कुछ हिफ़ाज़
अफ़्व पे भूला रहा तुम पे करोरों दुरूद
लो तहे दामन कि शमअ झोंकों में है रोज़ जमअ
आंधियों से हश्र उठा तुम पे करोरों दुरूद

सीना कि है दाग़ दाग़ कहदो करे बाग़ बाग़
तैबा से आकर सबा तुम पे करोरों दुरूद
गेसू वो क़द लाम अलिफ़ करदो बला मुंसरिफ़
ला के तहे तैग़े 'ला तुम पे करोरों दुरूद
तुमने ब–रंगे फ़लक़ जैबे जहाँ कर के शक़
नूर का तड़का किया तुम पे करोरों दुरूद
नौबते दर हैं फ़लक ख़ादिमे दर हैं मलक
तुम हो जहाँ बादशा तुम पे करोरों दुरूद
ख़ल्क़ तुम्हारी जमील ख़ुल्क़ तुम्हारा जलील
ख़ल्क तुम्हारी गदा तुम पे करोरों दुरूद
तैबा के माहे तमाम जुमला रुसुल के इमाम
नौशहे मुल्के ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद
तुम से जहाँ का निज़ाम तुम पे करोरों सलाम
तुम पे करोरों सना तुम पे करोरों दुरूद
तुम हो जव्वादो करीम तुम हो रऊफ़ो रहीम
भीक हो दाता अ़ता तुम पे करोरों दुरूद
ख़ल्क़ के हाकिम हो तुम रिज़्क़ के क़ासिम हो तुम
तुम से मिला जो मिला तुम पे करोरों दुरूद
नाफ़ेओ दाफ़ेअ हो तुम शाफ़ेओ राफ़ेअ़ हो तुम
तुमसे बस अफ़ज़ूं ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

शाफ़ी वो नाफ़ी हो तुम काफ़ी वो वाफ़ी हो तुम
दर्द को कर दो दवा तुम पे करोरों दुरूद

जायें न जब तक ग़ुलाम खुल्द है सब पर हराम
मिल्क तो है आपका तुम पे करोरों दुरूद

मज़्हरे हक़ हो तुम्हीं मुज़्हिरे हक़ हो तुम्हीं
तुम में है ज़ाहिर ख़ुदा तुम पे करोरों दुरूद

ज़ोर–देहे ना रसाँ तकिया–गहे बेकसाँ
बादशहे मावरा तुम पे करोरों दुरूद

बरसे करम की भरन फूलें नेअ़म के चमन
ऐसी चला दो हवा तुम पे करोरों दुरूद

इक तरफ़ आ़दा–ए दीं इक तरफ़ हैं हासिदीं
बन्दा है तन्हा शहा तुम पे करोरों दुरूद

क्यों कहूं बेकस हूं मैं क्यों कहूं बेबस हूं मैं
तुम हो मैं तुम पर फ़िदा तुम पे करोरों दुरूद

न्दे निकम्मे कमीन महंगे हों कौड़ी के तीन
कौन हमें पालता तुम पे करोरों दुरूद

बाट न दर के कहीं घाट न घर के कहीं
ऐसे तुम्हीं पालना तुम पे करोरों दुरूद

ऐसों को नेअ़मत खिलाओ दूध के शरबत पिलाओ
ऐसों को ऐसी ग़ेज़ा तुम पे करोरों दुरूद

गिरने को हूं रोक लो ग़ोता लगे हाथ दो
ऐसों पर ऐसी अ़ता तुम पे करोरों दुरूद

अपने ख़तावारों को अपने ही दामन में लो
कौन करे यह भला तुम पे करोरों दुरूद

कर के तुम्हारे गुनाह मांगें तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोरों दुरूद

कर दो अ़दू को तबाह हासिदों को रू–बराह
अह्ले विला का भला तुम पे करोरों दुरूद

हमने ख़ता में न की तुमने अ़ता में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोरों दुरूद

काम ग़ज़ब के किए उस पे है सरकार से
बन्दों को चश्मे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

आँख अ़ता कीजिए इसमें ज़िया दीजिए
जल्वा क़रीब आगया तुम पे करोरों दुरूद

काम वो ले लीजिए तुमको जो राज़ी करे
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोरों दुरूद

लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्अे बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम

मेहरे चर्ख़े नबुव्वत पे रौशन दुरूद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम

शहर–यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफ़ाअ़त पे लाखों सलाम

शबे असरा के दुल्हा पे दाइम दुरूद
नौशए बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम

अ़र्श की ज़ेबो ज़ीनत पे अ़र्शी दुरूद
फ़र्श की तीबो नुज़हत पे लाखों सलाम

नूरे अ़ैने लताफ़त पे अल्तफ़ दुरूद
ज़ेबो ज़ैने नज़ाफ़त पे लाखों सलाम

सर्वे नाज़े क़िदम मग़्ज़े राज़े हिकम
यक्का ताज़े फ़ज़ीलत पे लाखों सलाम

नुक़्तए सिर्रे वहदत पे यक्ता दुरूद
मर्कज़े दौरे कस्रत पे लाखों सलाम

साहिबे रजअ़ते शम्सो शक़्क़ुल क़मर
नाइबे दस्ते क़ुद्रत पे लाखों सलाम

जिसके ज़ेरे लिवा आदमो मन सिवा
उस सदाए सियादत पे लाखों सलाम

अर्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं
उसकी क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

अस्ले हर बूदो बहबूद तुख़्मे वजूद
क़ासिमे कन्ज़े निअ़मत पे लाखों सलाम

फ़त्हे बाबे नबुव्वत पे बेहद दुरूद
ख़त्मे दौरे रिसालत पे लाखों सलाम

शर्क़े अनवारे क़ुदरत पे नूरी दुरूद
फ़तक़े अज़ हारे क़ुरबत पे लाखों सलाम

बे–सहीमो क़सीमो अ़दीलो मसील
जौहरे फ़र्दे इज़्ज़त पे लाखों सलाम

सिर्रे ग़ैबे हिदायत पे ग़ैबी दुरूद
इत्रे जैबे निहायत पे लाखों सलाम

माहे लाहूते ख़िल्वत पे लाखों दुरूद
शाहे नासूते जल्वत पे लाखों सलाम

कन्ज़े हर बेकसो बेनवा पर दुरूद
हर्ज़े हर रफ़्ता ताक़त पे लाखों सलाम

परतवे इस्मे ज़ाते अहद पर दुरूद
नुस्ख़ए जामेइय्यत पे लाखों सलाम

मतलअ़े हर संआ़दत पे अस्अ़द दुरूद
मक़्तअ़े हर सियादत पे लाखों सलाम
ख़ल्क़ के दादरस सबके फ़रियाद रस
कह्फ़े रोज़े मुसीबत पे लाखों सलाम
मुझ से बेकस की दौलत पे लाखों दुरूद
मुझसे बेबस की .क़ुव्वत पे लाखों सलाम
शमअ़े बज़्मे *दना हू* में गुम *कुन अना*
शरहे मतने हुविय्यत पे लाखों सलाम
इन्तेहाए दुई इब्तेदाए यकी
जम्अ़े तफ़्रीक़ो कस्रत पे लाखों सलाम
कस्रते बादे क़िल्लत पे अक्सर दुरूद
इ़ज़्ज़ते बादे ज़िल्लत पे लाखों सलाम
रब्बे आला की निअ़मत पे आला दुरूद
हक़ तअ़ाला की मिन्नत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सर्वत पे लाखों सलाम
फ़रहते जाने मोमिन पे बेहद दुरूद
गैज़े क़ल्बे ज़लालत पे लाखों सलाम
सबबे हर सबब मुन्तहाए तलब
इ़ल्लते जुम्ला इ़ल्लत पे लाखों सलाम

मस्दरे मज़्हरिय्यत पे अज़्हर दुरूद
मज़्हरे मस्दरिय्यत पे लाखों सलाम
जिसके जल्वे से मुर्झाई कलियाँ खिलीं
उस गुले पाक मम्बत पे लाखों सलाम
क़द्दे बे–साया के सायए मरहमत
ज़िल्ले मम्दूदे राफ़त पे लाखों सलाम
ताइराने क़ुद्स जिसकी हैं क़ुमरियाँ
उस सही सर्वे क़ामत पे लाखों सलाम
वस्फ़ जिस का है आईनए हक़नुमा
उस ख़ुदा साज़ तल्अत पे लाखों सलाम
जिस के आगे सरे सर्वराँ ख़म रहें
उस सरे ताजे रिफ़्अत पे लाखों सलाम
वो करम की घटा गेसूए मुश्क सा
लक्कए अबरे राफ़त पे लाखों सलाम
लैलतुल्क़द्र में *मत्लइल फ़ज्र* हक़
मांग की इस्तेक़ामत पे लाखों सलाम
लख़्त लख़्ते दिले हर जिगर चाक से
शाना करने की हालत पे लाखों सलाम
दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअ्ले करामत पे लाखों सलाम

चश्मए मेहर में मौजे नूरे जलाल
उस रगे हाशेमिय्यत पे लाखों सलाम

जिसके माथे शफ़ाअत का सेहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम

जिनके सज्दे को मेहराबे कअ़बा झुकी
उन भवों की लताफ़त पे लाखों सलाम

उनकी आंखों पे वो साया अफ़गन मिज़ा
ज़िल्लए क़स्रे रहमत पे लाखों सलाम

अश्क बारीए मिज़्गाँ पे बरसे दुरूद
सिल्के दुर्रे शफ़ाअ़त पे लाखों सलाम

मअ़नए *क़द रआ* मक़्सदे *मा तग़ा*
नर्गिसे बाग़े .क़ुद्रत पे लाखों सलाम

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आगया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

नीची आंखों की शर्मो हया पर दुरूद
ऊँची बीनी की रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

जिनके आगे चरागे क़मर झिलमिलाय
उन अ़ज़ारों की तल्अ़त पे लाखों सलाम

उनके ख़द की सुहूलत पे बेहद दुरूद
उनके क़द की रिशाक़त पे लाखों सलाम

जिस से तारीक दिल जग्मगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

चाँद से मुँह पे ताबाँ दरख़्शाँ दुरूद
नमक आगीं सबाहत पे लाखों सलाम

शबनमे बाग़े हक़ यानी रुख़ का अ़रक़
उसकी सच्ची बराक़त पे लाखों सलाम

ख़त की गिर्दे दहन वो दिलारा फबन
सब्ज़ए नहरे रह्मत पे लाखों सलाम

रीशे ख़ुश मुअ़तदिल मरहमे रेशे दिल
हालए माहे नुदरत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले .कुद्स की पत्तियाँ
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

वोह दहन जिसकी हर बात वह़ीए ख़ुदा
चश्मए इल्मो हिक्मत पे लाखों सलाम

जिसके पानी से शादाब जानो जिनाँ
उस दहन की तरावत पे लाखों सलाम

जिस से खारी कुवें शीरए जाँ बने
उस .ज़ुलाले ह़लावत पे लाखों सलाम

वो ज़बाँ जिसको सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

उसकी प्यारी फ़साहत पे बेहद दुरूद
सकी दिल्कश बलाग़त पे लाखों सलाम

उसकी बातों की लज़्ज़त पे लाखों दुरूद
उसके ख़ुत्बे की हैबत पे लाखों सलाम

वोह दुआ जिसका जोबन बहारे क़बूल
उस नसीमे इजाबत पे लाखों सलाम

जिन के गुच्छे से लच्छे झड़ें नूर के
उन सितारों की नुज़्हत पे लाखों सलाम

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

जिस में नहरें हैं शीरो शकर की रवाँ
उस गले की नज़ारत पे लाखों सलाम

दोश बर दोश है जिन से शाने शरफ़
ऐसे शानों की शौकत पे लाखों सलाम

हज्रे अस्वदे कअ़बए जानो दिल
यानी मुहरे नबुव्वत पे लाखों सलाम

रूए आईनए इल्मे पुश्ते हुज़ूर
पुश्तीए क़स्रे मिल्लत पे लाखों सलाम

हाथ जिस सम्त उठ्ठा ग़नी कर दिया
मौजे बह्रे समाहत पे लाखों सलाम

जिसको बारे दोआ़लम की परवा नहीं
ऐसे बाज़ू की .क़ुव्वत पे लाखों सलाम

कअ़बए दीनो ईमाँ के दोनों सुतूं
साइदैने रिसालत पे लाखों सलाम

जिसके हर ख़त में है मौजे नूरे करम
उस कफ़े बह्‌रे हिम्मत पे लाखों सलाम

नूर के चश्मे लहरायें दरिया बहें
उंगलियों की करामत पे लाखों सलाम

ईदे मुश्किल कुशाई के चमके हिलाल
नाख़ुनों की बशारत पे लाखों सलाम

रफ़अ़े ज़िक्रे जलालत पे अर्फ़अ़ दुरूद
शर्ह़े सद्‌रे सदारत पे लाखों सलाम

दिल समझ से वरा है मगर यूं कहूं
ग़ुन्चए राज़े वह्‌दत पे लाखों सलाम

कुल जहाँ मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

जो कि अ़ज़्मे शफ़ाअ़त पे खिंच कर बंधी
उस क़मर की हिमायत पे लाखों सलाम

अम्बिया तह करें ज़ानू उनके हु.जूर
ज़ानुओं की वजाहत पे लाखों सलाम

साक़े असले क़िदम शाख़े नख़्ले करम
शमअ़े राहे इसाबत पे लाखों सलाम

खाई .क़ुरआँ ने ख़ाके गुज़र की क़सम
उस कफ़े पा की हुर्मत पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चम्का तैबा का चाँद
उस दिल अफ़्रोज़ साअ़त पे लाखों सलाम

पहले सज्दे पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारीए उम्मत पे लाखों सलाम

ज़रअ़े शादाबो हर ज़रअ़े पुर शीर से
बरकाते रेज़ाअ़त पे लाखों सलाम

भाइयों के लिए तर्क पिस्ताँ करें
दूध पीतों की निस्फ़त पे लाखों सलाम

मह्दे वाला की क़िस्मत पे सद्हा दुरूद
बुर्जे माहे रिसालत पे लाखों सलाम

अल्लाह अल्लाह वो बचपने की फबन
उस ख़ुदा भाती सूरत पे लाखों सलाम

उठते बूटों की नश्वो नुमा पर दुरूद
खिल्ते .ग़ुन्चों की निक्हत पे लाखों सलाम

फ़ज़्ले पैदाइशी पर हमेशा दुरूद
खेलने से कराहत पे लाखों सलाम

एअ़तेलाए जबिल्लत पे आ़ली दुरूद
एअ़तेदाले तबीयत पे लाखों सलाम
बे बनावट अदा पर हज़ारों दुरूद
बे तकल्लुफ़ मलाहत पे लाखों सलाम
भीनी भीनी महक पर महक्ती दुरूद
प्यारी–प्यारी नफ़ासत पे लाखों सलाम
मीठी–मीठी इबारत पे शीरीं दुरूद
अच्छी अच्छी इशारत पे लाखों सलाम
सीधी सीधी रविश पर करोरों दुरूद
सादी–सादी तबीअ़त पे लाखों सलाम
रोज़े गर्मो शबे तीरा वो तार में
कोहो सहरा की ख़िल्वत पे लाखों सलाम
जिसके घेरे में हैं अम्बियाओ मलक
उस जहाँगीरे बअ़सत पे लाखों सलाम
अन्धे शीशे झलाझल दमक्ने लगे
जल्वा रेज़ीए दावत पे लाखों सलाम
लुत्फ़े बेदारीए शब पे बेहद दुरूद
आ़लमे ख़्वाबे राहत पे लाखों सलाम
ख़न्दए सुब्हे इ़शरत पे नूरी दुरूद
गिर्यए अब्रे रहमत पे लाखों सलाम

नर्मीए ख़ूए लीनत पे दाइम दुरूद
गर्मीए शाने सत्‌वत पे लाखों सलाम

जिस के आगे खिंची गर्दनें झुक गयीं
उस ख़ुदा दाद शौकत पे लाखों सलाम

किस को देखा यह मूसा से पूछे कोई
आंखों वालों की हिम्मत पे लाखों सलाम

गिर्दे मह दस्ते अंजुम में रख़्शाँ हिलाल
बद्र क़ी दफ़अ़े .ज़ुल्मत पे लाखों सलाम

शोरे तक्‌बीर से थरथराती ज़मीं
जुम्बिशे जैशे नुस्‌रत पे लाखों सलाम

नअ़रहाए दिलेराँ से बन गूंजते
.ग़ुर्रशे कोसे जुर्‌अत पे लाखों सलाम

वोह चक़ा चाक़ ख़ंजर से आती सदा
मुस्तफ़ा तेरी सौलत पे लाखों सलाम

उनके आगे वो हम्ज़ा की जाँ–बाज़ियां
शेरे .ग़ुर्राने सत्‌वत पे लाखों सलाम

अल ग़रज़ उन के हर मू पे लाखों दुरूद
उनकी हर ख़ू व ख़स्लत पे लाखों सलाम

उनके हर नामो निस्बत पे नामी दुरूद
उनके हर वक़्तो हालत पे लाखों सलाम

उनके मौला की उन पर करोरों दुरूद
उनके असहाबो इतरत पे लाखों सलाम

पारहाए सुहुफ़ ग़ुन्चहाए क़ुदुस
अह्ले बैते नबुव्वत पे लाखों सलाम

आबे ततहीर से जिस में पौदे जमे
उस रियाज़े नजाबत पे लाखों सलाम

ख़ूने ख़ैरुर् रुसुल से है जिनका ख़मीर
उनकी बे लौस तीनत पे लाखों सलाम

उस बतूले जिगर पारए मुस्तफ़ा
हज्ला आराए इफ्फ़त पे लाखों सलाम

जिस का आँचल न देखा महो मेहर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

सय्येदा ज़ाहिरा तय्येबा ताहिरा
जाने अह्मद की राहत पे लाखों सलाम

हसने मुज्तबा सय्येदुल अस्ख़िया
राकिबे दोश इज़्ज़त पे लाखों सलाम

औजे मेहरे हुदा मौजे बह्रे निदा
रूहे रौहे सख़ावत पे लाखों सलाम

शहद ख़्वारे लुआबे ज़बाने नबी
चाश्नी–गीर इस्मत पे लाखों सलाम

उस शहीदे बला शाहे गुल्गूं क़बा
बेकसे दश्ते ग़ुर्बत पे लाखों सलाम

दुर्रे दुर्ज़े नजफ़ मेह्रे बुर्जे शरफ़
रंगे रूए शहादत पे लाखों सलाम

अह्ले इस्लाम की मादराने शफ़ीक़
बानूवाने तहारत पे लाखों सलाम

जल्वगिय्याने बैतुश्शरफ़ पर दुरूद
पर्द गिय्याने इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

सिय्येमा पहली माँ कह्फ़े अम्नो अमाँ
हक़ गुज़ारे रिफ़ाक़त पे लाखों सलाम

अ़र्श से जिसपे तस्लीम नाज़िल हुई
उस सराए सलामत पे लाखों सलाम

मंज़िलुम्मिन् क़सब् ला नसब् ला सख़ब्
ऐसे कोशक की ज़ीनत पे लाखों सलाम

बिन्ते सिद्दीक़ आरामे जाने नबी
उस हरीमे बराअ्त पे लाखों सलाम

यानी है सूरए नूर जिन की गवाह
उनकी पुरनूर सूरत पे लाखों सलाम

जिनमें रूहुल क़ुदुस बेइजाज़त न जायें
उन सुरादिक़ की इस्मत पे लाखों सलाम

शम्अ़े ताबाने क़ाशानए इज्तेहाद
मुफ़्तीए चार मिल्लत पे लाखों सलाम

जाँ–निसाराने बद्रो उहुद पर दुरूद
हक़ गुज़ाराने बैअ़त पे लाखों सलाम

वो दसों जिनको जन्नत का मुज़्दा मिला
उस मुबारक जमाअ़त पे लाखों सलाम

ख़ास उस साबिक़े सैरे क़ुर्बे ख़ुदा
औहदे कामिलियत पे लाखों सलाम

सायए मुस्तफ़ा मायए इस्तफ़ा
इ़ज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

यानी उस अफ़ज़लुल ख़ल्क़ बअ़दर्रुसुल
सानी इसनैने हिज्रत पे लाखों सलाम

अस्दक़ुस्–सादेक़ीं सय्येदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशे वेज़ारत पे लाखों सलाम

वोह **उमर** जिस के आदा पे शैदा सक़र
उस ख़ुदा दोस्त हज़्रत पे लाखों सलाम

फ़ारिक़े हक़्क़ो बातिल इमामुल हुदा
तैग़े मस्लूले शिद्दत पे लाखों सलाम

तर्जुमाने नबी हम–ज़बाने नबी
जाने शाने अ़दालत पे लाखों सलाम

ज़ाहिदे मस्जिदे अह्मदी पर दुरूद
दौलते जैशे उ़सरत पे लाखों सलाम

दुर्रे मन्सूर .कुरआं की सिल्के बही
ज़ौजे दो नूरे इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

यानी **उसमान** साहब कमीसे हुदा
हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

मुर्तज़ा शेरे हक़ अश्जउ़ल अश्जई
साक़ीए शीरो शर्बत पे लाखों सलाम

अस्ले नस्ले सफ़ा वज्हे वस्ले ख़ुदा
बाबे फ़स्ले विलायत पे लाखों सलाम

अव्वलीं दाफ़िए अह्ले रिफ़्ज़ो ख़ुरूज
चार मी रुक्ने मिल्लत पे लाखों सलाम

शेरे शम्शीर–ज़न शाहे ख़ैबर–शिकन
परतवे दस्ते .कुद्रत पे लाखों सलाम

माहीए रिफ़्ज़ो तफ़्ज़ीलो नस्बो ख़ुरूज
हामीए दीनो सुन्नत पे लाखों सलाम

मोमेनीं पेशे फ़त्हो पसे फ़त्ह सब
अह्ले ख़ैरो अ़दालत पे लाखों सलाम

जिस मुसल्माँ ने देखा उन्हें इक नज़र
उस नज़र की बसारत पे लाखों सलाम

जिनके दुश्मन पे लानत है अल्लाह की
उन सब अह्ले महब्बत पे लाखों सलाम

बाक़ीए साक़ियाने शराबे तहूर
ज़ैने अह्ले इबादत पे लाखों सलाम

और जितने हैं शह्ज़ादे उस शाह के
उन सब अह्ले मकानत पे लाखों सलाम

उनकी बाला शराफ़त पे आला दुरूद
उनकी वाला सियादत पे लाखों सलाम

शाफ़ेई, मालिक, अह्मद, इमामे ह़नीफ़
चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम

कामिलाने तरीक़त पे कामिल दुरूद
ह़ामिलाने शरीअ़त पे लाखों सलाम

ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जल्वए शाने .क़ुद्रत पे लाखों सलाम

.क़ुतबे अब्दालो इर्शादो रुश्दुर्रशाद
मुह्यीए दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

मर्दे ख़ैले तरीक़त पे बेहद दुरूद
फ़र्दे अह्ले ह़क़ीक़त पे लाखों सलाम

जिसकी मिम्बर हुई गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

शाहे बरकातो बरकाते पेशीनियाँ
नौ बहारे तरीक़त पे लाखों सलाम

सय्यिद आले मुहम्मद इमामुर्रशीद
गुले रौज़े रियाज़त पे लाखों सलाम

हज़्रते हम्ज़ा शेरे ख़ुदा व रसूल
ज़ीनते क़ादिरियत पे लाखों सलाम

नामो कामो तनो जानो हालो मक़ाल
सबमें अच्छे की सूरत पे लाखों सलाम

नूर–जां इत्रे–मज्मूअ़ा आले रसूल
मेरे आक़ाए निअ़मत पे लाखों सलाम

ज़ेबे सज्जादा सज्जादे नूरी निहाद
अह्मदे नूर तीनत पे लाखों सलाम

बे अज़ाबो अ़ेताबो हिसाबो किताब
ता अबद अह्ले सुन्नत पे लाखों सलाम

तेरे उन दोस्तों के तुफ़ैल ऐ ख़ुदा
बन्दए नंगे ख़िल्क़त पे लाखों सलाम

मेरे उस्ताद माँ बाप भाई बहन
अह्ले वुल्दो अ़शीरत पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रह्मत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश महशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के क़ुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

मुस्तफ़ा ख़ैरुलवरा

मुस्तफ़ा ख़ैरुल्वरा हो
सरवरे हर दोसरा हो

अपने अच्छों का तसद्दुक़
हम बदों को भी निबाहो

किसके फिर होकर रहें हम
गर तुम्हीं हमको न चाहो

बद हंसें तुम उनकी ख़ातिर
रात भर रोओ कराहो

बद करें हर दम बुराई
तुम कंहो उनका भला हो

हम वही नाशुस्ता रू हैं
तुम वही बहरे अ़ता हो

हम वही शायाने रद हैं
तुम वही शाने सख़ा हो

हम वही बे–शर्मो बद हैं
तुम वही काने हया हो

हम वही नंगे जफ़ा हैं
तुम वही जाने वफ़ा हो

हम वही क़ाबिल सज़ा के
तुम वही रह्मे ख़ुदा हो

चर्ख़ बदले दह्र बदले
तुम बदलने से वरा हो

अब हमें हो सह्व हाशा
ऐसी भूलों से जुदा हो

उम्र भर तो याद रक्खा
वक़्त पर क्या भूलना हो

वक़्ते पैदाइश न भूले
कैफ़ यन्सा क्यों क़ज़ा हो

यह भी मौला अ़र्ज़ कर दूं
भूल अगर जाओ तो क्या हो

वो हो जो तुम पर गिराँ है
वो हो जो हरगिज न चाहो
वो हो जिस का नाम लेते
दुश्मनों का दिल बुरा हो
वो हो जिसके रद्द की ख़ातिर
रात दिन वक़्फ़े दुआ हो
मर मिटें बरबाद बन्दे
ख़ाना आबाद आग का हो
शाद हो इब्लीसे मलऊँ
ग़म किसे इस कहर का हो
तुमको हो वल्लाह तुम को
जानो दिल तुमपर फ़िदा हो
तुमको गम से हक़ बचाए
ग़म अ़दू को जाँ गुज़ा हो
तुमसे ग़म को क्या तअ़ल्लुक़
बेकसों के ग़म्ज़ेदा हो
हक़ दुरूदें तुम पे भेजे
तुम मुदाम उसको सराहो

वो अ़ता दे तुम अ़ता लो
वो वही चाहे जो चाहो
बर तू ऊ पाशद तू बर मा
ता अबद यह सिल्सिला हो
क्यों रज़ा मुश्किल से डरिये
जब नबी मुश्किलकुशा हो

मिल्के ख़ास किब्रिया हो

मिल्के ख़ासे किब्रिया हो
मालिके हर मा सिवा हो
कोई क्या जाने कि क्या हो
अ़क़्ले आ़लम से वरा हो
कन्ज़े मक्तूमे अज़ल में
दुर्रे मक्नूने ख़ुदा हो
सबसे अव्वल सबसे आख़िर
इब्तेदा हो इन्तेहा हो
थे वसीले सब नबी तुम
अस्ले मक़्सूदे हुदा हो

पाक करने को व.जू थे
तुम नमाज़े जाँ फ़िज़ा हो
सब बशारत की अज़ाँ थे
तुम अज़ाँ का मुद्दआ हो
सब तुम्हारी ही ख़बर थे
तुम मुअख़्ख़र मुब्तदा हो
.कुर्बे ह़क़ की मन्ज़िलें थे
तुम सफ़र का मुन्तहा हो
क़ब्ले ज़िक्र इज़्मार क्या जब
रुत्बा साबिक़ आपका हो
तूरे मूसा चर्खे़ ईसा
क्या मुसावीए दना हो
सब जेहत के दाइरे में
शश जेहत से तुम वरा हो
सब मकाँ तुम लामकाँ में
तन हैं तुम जाने सफ़ा हो
सब तुम्हारे दर के रस्ते
एक तुम राहे ख़ुदा हो

सब तुम्हारे आगे शाफ़ेअ़
तुम हुज़ूरे किब्रिया हो
सब की है तुम तक रसाई
बारगह तक तुम रसा हो
वो कलस रौज़े का चमका
सर झुकाओ कज–कुलाहो
वो दरे दौलत पे आये
झोलियाँ फैलाओ शाहो

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिए

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिए मकीनो मकां तुम्हारे लिए
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिए बने दो जहां तुम्हारे लिए
दहन में ज़बां तुम्हारे लिए बदन में है जां तुम्हारे लिए
हम आये यहां तुम्हारे लिए उठें भी वहां तुम्हारे लिए
फ़रिश्ते ख़िदम रसूले हिशम तमामे उमम ग़ुलामे करम
वजूदो अ़दम हुदूसो क़दम जहां में अ़यां तुम्हारे लिए
कलीमो नजी मसीहो सफ़ी ख़लीलो रज़ी रसूलो नबी
अ़तीक़ो वसी ग़नीयो अ़ली सना की ज़बां तुम्हारे लिए

इसालते कुल इमामते कुल सियादते कुल इमारते कुल
हुकूमते कुल विलायते कुल ख़ुदा के यहां तुम्हारे लिए

तुम्हारी चमक तुम्हारी दमक तुम्हारी झलक तुम्हारी महक
ज़मीनो फ़लक समाको समक में सिक्का निशां तुम्हारे लिए

वो कन्ज़े निहां ये नूरे फ़िशां वो कुन से अयां ये बज़्मे फ़कां
ये हर तनो जां ये बाग़े जिनां यह सारा समां तुम्हारे लिए

ज़ुहूरे निहां क़ियामे जहां रुकूअ़े महां सुजूदे शहां
नियाज़ें यहां नमाज़ें वहां यह किस लिए हां तुम्हारे लिए

ये शम्सो क़मर ये शामो सहर ये बर्गो शजर ये बाग़ो समर
ये तैग़ो सिपर ये ताजो क़मर ये हुक्मे रवां तुम्हारे लिए

ये फ़ैज़ दिए वो जूद किये कि नाम लिए ज़माना जिये
जहां ने लिए तुम्हारे दिये यह अक्रमियां तुम्हारे लिए

सहाबे करम रवाना किए कि आबे नेअम ज़माना पिए
जो रखते थे हम वो चाक सिए ये सत्रे बदां तुम्हारे लिए

सना का निशां वो नूर फ़िशां कि मेह्रे वशां बआं हमा शां
बसा यह कशां मवाकिबे शां यह नामो निशां तुम्हारे लिए

अताए अरब जलाए करब फ़ुयूज़े अजब बगैरे तलब
यह रह्मते रब है किसके सबब बरब्बे जहां तुम्हारे लिए

ज़ुनूबे फना उयूबे हबा क़ुलूबे सफा ख़ुतूबे रवा
यह खूब अता करूबे ज़ुवा पये दिलों जां तुम्हारे लिए

न जिन्नो बशर कि आठों पहर मलाइका दर पे बस्ता कमर
न जब्ह वो सर कि कल्बो जिगर हैं सज्दा कुनां तुम्हारे लिए

न रूहे अमीं न अर्शे बरीं न लौहे मुबीं कोई भी कहीं
खबर ही नहीं जो रम्ज़ें खुलीं अजल की निहां तुम्हारे लिए

जिनां में चमन चमन में समन समन में फबन फबन में दुल्हन
सजाए मेहन पे ऐसे मेनन यह अम्नो अमां तुम्हारे लिए

कमाले महां जलाले शहां जमाले हसां में तुम हो अयां
कि सारे जहां में रोज़े फ़कां ज़िल्ले आईना सां तुम्हारे लिए

यह तूरे कुजा सेपहर तो क्या कि अर्शे उला भी दूर रहा
जेहत से वरा विसाल मिला ये रिफ़अते शां तुम्हारे लिए

खलीलो नजी मसीहो सफी सभी से कही कहीं भी बनी
ये बे-खबरी कि खल्क फिरी कहां से कहां तुम्हारे लिए

ब–फौरे सदा समां ये बंधा ये सिद्रा उठा वो अर्श झुका
सुफूफे समां ने सज्दा किया हुई जो अजां तुम्हारे लिए

ये मरहमतें कि कच्ची मतें न छोड़ी लतें न अपनी गतें
क़ुसूर करें और उनसे भरें क़ुसूरे जिनां तुम्हारे लिए

फ़ना बदरत बक़ा बबरत जेहर दो जेहत बगिर्दे सरत
है मर्कज़ियत तुम्हारी सिफ़त कि दोनों कमां तुम्हारे लिए

इशारे से चाँद चीर दिया छुपे हुए खुर को फेर लिया
गए हुए दिन को अस्र किया ये ताबो तवां तुम्हारे लिए

सबा वो चले कि बाग फले वो फूल खिले कि दिन हों भले
लेवा के तले सना में खुले रज़ा की जबां तुम्हारे लिए

नज़र इक चमन से दोचार है

नजर इक चमन से दोचार है न चमन चमन भी निसार है
अजब उसके गुल की बहार है कि बहार बुलबुले जार है

न दिले बशर ही फ़ेगार है कि मलक भी उसका शिकार है
ये जहां के हजदह हजार है जिसे देखो उसका हज़ार है

नहीं सर के सज्दा कुना न हो न जबां की जम्‌जमा ख्वां न हो
न वो दिल कि उसपे तपां न हो न वो सीना जिसको करार है

वो है भीनी भीनी वहां महक कि बसा है अर्श से फ़र्श तक
वो है प्यारी प्यारी वहां चमक कि वहां की शब भी नहार है

कोई और फूल कहां खिले न जगह है जोशिशे हुस्न से
न बहार और पे रुख़ करे कि झपक पलक की तो खार है

ये समन ये सौसनो यासेमन ये बनफ़्शा सुम्बुलो नस्तरन
गुलो सर्वो लाला भरा चमन वही एक जल्वा हज़ार है

ये सबा सनक वो कली चटक ये ज़बां चहक लबे जू छलक
ये महक झलक ये चमक दमक सब उसी के दम की बहार है

वही जल्वा शहर बशहर है वही अस्ले आलमो दहर है
वही बह्र है वही लह्र है वही पाट है वही धार है

वो न था तो बाग़ में कुछ न था वो न हो तो बाग़ हो सब फ़ना
वो है जान जान से है बक़ा वही बुन है बुन से ही बार है

ये अदब कि बुल्बुले बेनवा कभी खुलके कर न सके नवा
न सबा को तेज़ रविश रवा न छलकती नहरों की धार है

बअदब झुका लो सरे विला कि मैं नाम लूं गुलो बाग़ का
गुले तर मुहम्मदे मुस्तफ़ा चमन उनका पाक देयार है

वही आंख उनका जो मुंह तके वही लब कि महव हों नअत के
वही सर जो उनके लिए झुके वही दिल जो उनपे निसार है

ये किसी का हुस्न है जल्वा गर कि तपां हैं ख़ूबों के दिल जिगर
नहीं चाक जैबे गुलो सहर कि क़मर भी सीना फ़ेगार है

वही नजरे शह में जरे निकू जो हो उनके इश्क में जर्द रु
गुले खुल्द उससे हो रंग जू ये खिज़ां वो ताज़ा बहार है

जिसे तेरी सफ्फ़े नआल से मिले दो निवाले नवाल से
वो बना कि उसके उगाल से भरी सल्तनत का उधार है

वो उठीं चमक के तजल्लियां कि मिटा दे सबकी तअल्लियां
दिलो जां को बख़्शें तसल्लियां तेरा नूर बारे दोहार है

रुसुलो मलक पे दुरूद हो वही जाने उनके शुमार को
मगर एक ऐसा दिखा तो दो जो शफ़ीए रोज़े शुमार है

न हिजाब चर्खो मसीह पर न कलीमो तूरे निहां मगर
जो गया है अर्श से भी उधर वो अरब का नाका सवार है

वो तेरी तजल्लीए दिल्नशीं कि झलक रहे हैं फ़लक ज़मीं
तेरे सदक़े मेरे महे मुबीं मेरी रात क्यों अभी तार है

मेरी ज़ुल्मतें हैं सितम मगर तेरा मह न मेहर कि मेहर गर
अगर एक छींट पडे इधर शबे दाज अभी तो नहार है

गुनहे रज़ा का हिसाब क्या वो अगरचे लाखों से हैं सिवा
मगर ऐ अ.फू तेरे अफ्व का न हिसाब है न शुमार है

तेरे दीने पाक की वो जिया कि चमक उठी रहे इस्तेफ़ा
जो न माने आप सकर गया कहीं नूर है कहीं नार है

कोई जान बस के महक रही किसी दिल में उससे खटक रही
न ही उसके जल्वे मे यक रही कहीं फूल है कहीं खार है

वो जिसे वहाबिया ने दिया है लकब शहीदो जबीह का
वो शहीदे लैलीए नज्द था वो ज़बीहे तेगे ख़ियार है

ये है दीं की तक़्वियत उसके घर ये है मुस्तक़ीमे सिराते शर
जो शक़ी के दिल में है गाव खर तो जबां पे चूढ़ा चमार है

वो हबीब प्यारा तो उम्र भर करे फ़ैजो जूद ही सर बसर
अरे तुझको खाए तपे सकर तेरे दिल में किससे बुखार है

वो रज़ा के नेज़े की मार है कि अदू के सीने में गार है
किसे चाराजूई का वार है कि यह वार वार से पार है

ईमान है काले मुस्तफ़ाई

ईमान है काले मुस्तफ़ाई
क़ुरआन है हाले मुस्तफ़ाई

अल्लाह की सल्तनत का दूल्हा
नक़्शे तिम्साले मुस्तफ़ाई

कुल से बाला रुसुल से आला
इज्लालो जलाले मुस्तफ़ाई

अस्ह़ाब नुजूम रहनुमा हैं
कश्ती है आले मुस्तफ़ाई

इद्बार से तू मुझे बचा ले
प्यारे इक़बाले मुस्तफ़ाई

मुर्सल मुश्ताक़े ह़क़ हैं और हक़
मुश्ताक़े विसाले मुस्तफ़ाई

ख़्वाहाने विसाले किब्रिया हैं
जूयाने जमाले मुस्तफ़ाई

महबूबो मुहि़ब की मिल्क है एक
कौनैन हैं माले मुस्तफ़ाई

अल्लाह न छूटे दस्ते दिल से
दामाने ख़्याले मुस्तफ़ाई
हैं तेरे सिपुर्द सब उम्मीदें
ऐ जूदो नवाले मुस्तफ़ाई
रौशन कर क़ब्र बेकसों की
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
अंधेर है बे तेरे मेरा घर
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
मुझको शबे ग़म डरा रही है
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
आंखों में चमक के दिल में आजा
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
मेरी शबे तार दिन बना दे
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
चमका दे नसीबे बद नसीबां
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
क़ज़्ज़ाक़ हैं सर पे राह गुम है
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई

छाया आंखों तले अंधेरा
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
दिल सर्द है अपनी लौ लगा दे
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
घंघोर घटायें ग़म की छाईं
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
भटका हूं तू रास्ता बता जा
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
फ़रियाद दबाती है सियाही
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
मेरे दिले मुर्दा को जिला दे
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
आंखे तेरी राह तक रही हैं
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
दुख में हैं अंधेरी रात वाले
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
तारीक है रात ग़म्ज़दों की
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई

हों दोनों जहां में मुंह उजाला
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
तारीकी–ए–गोर से बचाना
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
पुरनूर है तुझसे बज़्मे आ़लम
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
हम तीरादिलों पे भी करम कर
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
लिल्लाह इधर भी कोई फेरा
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई
तक़्दीर चमक उट्ठे **रज़ा** की
ऐ शम्अ़े जमाले मुस्तफ़ाई

ज़र्रे झड़ कर

ज़र्रे झड़ कर तेरी पैज़ारों के
ताजे सर बनते हैं सय्यारों के
हमसे चोरों पे जो फ़रमायें करम
खिल्अ़ते ज़र बनें पुश्तारों के

मेरे आक़ा का वो दर है जिसपर
माथे घिस जाते हैं सरदारों के
मेरे ईसा तेरे सदके जाऊँ
तौर बे तौर हैं बीमारों के
मुज्रिमो! चश्मे तबस्सुम रक्खो
फूल बन जाते हैं अंगारों के
तेरे अब्रू के तसद्दुक प्यारे
बन्द कुर्रे हैं गिरिफ्तारों के
जानो दिल तेरे क़दम पर वारे
क्या नसीबे हैं तेरे यारों के
सिद्को अद्लो करमो हिम्मत में
चार सू शोह्रे हैं इन चारों के
बह्रे तस्लीमे अली मैदां मे
सर झुके रहते हैं तल्वारों के
कैसे आक़ाओं का बन्दा हूं रज़ा
बोल बाले मेरी सरकारों के

सर सूए रौज़ा झुका

सर सूए रौज़ा झुका फिर तुझको क्या
दिल था साजिद नज्दिया फ़िर तुझको क्या
बैठते उठते मदद के वास्ते
या रसूलल्लाह कहा फिर तुझको क्या
या ग़रज़ से छुट के महज़े ज़िक्र को
नामे पाक उनका जपा फिर तुझको क्या
बेख़ुदी में सज्दए दर या तवाफ़
जो किया अच्छा किया फिर तुझको क्या
उनको तम्लीके मलीकुल मुल्क से
मालिके आलम कहा फिर तुझको क्या
उनके नामे पाक पर दिल जानो माल
नज्दिया सब तज दिया फिर तुझको क्या
या इबादी कह के हम को शाह ने
अपना बन्दा कर लिया फिर तुझको क्या
देव के बन्दों से कब है ये ख़िताब
तू न उनका है न था फिर तुझको क्या
ला यऊ़दून आगे होगा भी नहीं
तू अलग है दाइमा फिर तुझको क्या

दश्ते गिर्दो पेशे तैबा का अदब
मक्का सा था या सिवा फिर तुझको क्या

नज्दी मरता है कि क्यों ताज़ीम की
यह हमारा दीन था फिर तुझको क्या

देव तुझसे ख़ुश है फिर हम क्या करें
हमसे राज़ी है ख़ुदा फिर तुझको क्या

देव के बन्दों से हम को क्या ग़रज़
हम हैं अ़ब्दे मुस्तफ़ा फिर तुझको क्या

तेरी दोज़ख़ से तो कुछ छीना नहीं
ख़ुल्द में पहुंचा रज़ा फिर तुझको क्या

वही रब है जिसने तुझको

वही रब है जिसने तुझको हमा तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया

तुम्हीं हाकिमे बराया तुम्हीं क़ासिमे अ़ताया
तुम्हीं दाफ़िए बलाया तुम्हीं शाफ़िए ख़ताया
कोई तुमसा कौन आया

वो कुंवारी पाक मरयम वह नफख़्तो फीह् का दम
है अजब निशाने आज़म मगर आमेना का जाया
वही सबसे अफ्जल आया।

यही बोले सिद्रा वाले चमने जहां के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाये का न पाया
तुझे यक ने यक बनाया।

फइज़ा फरग्त फ़न्सब ये मिला है तुमको मंसब
जो गदा बना चुके अब उठो वक़्ते बख़्शिश आया
करो क़िस्मते अ़ताया

व इलल् इलाहे फर्गब करो अर्ज़ सबके मत्लब
कि तुम्हीं को तकते हैं सब करो उनपर अपना साया
बनो शाफ़िए़ ख़ताया।

अरे ऐ ख़ुदा के बन्दो! कोई मेरे दिल को ढूंढो
मेरे पास था अभी तो अभी क्या हुआ ख़ुदाया।
न कोई गया न आया

हमें ऐ **रज़ा** तेरे दिल का पता चला बमुश्किल
दरे रौज़ा के मुक़ाबिल वो हमें नज़र तो आया
ये न पूछ कैसा पाया

कभी ख़न्दा ज़ेरे लब है कभी गिर्या सारी शब है
कभी ग़म कभी तरब है न सबब समझ में आया
न उसी ने कुछ बताया
कभी ख़ाक पर पड़ा है सरे चर्ख़ ज़ेरे पा है
कभी पेशे दर खड़ा है सरे बन्दगी झुकाया
तो क़दम में अ़र्श पाया।
कभी वो तपक कि आतिश कभी वो टपक कि बारिश
कभी वो हुजूमे नालिश कोई जाने अब्र छाया
बड़ी जोशिशों से आया
कभी वो चहक कि बुलबुल कभी वो महक कि ख़ुद गुल
कभी वो लहक कि बिल्कुल चमने जिनां खिलाया
गुले .क़ुद्स लह्लहाया
कभी ज़िन्दगी के अरमां कभी मर्गे नौ का ख़्वाहां
वह जिया कि मर्ग .क़ुरबां वो मुवा कि ज़ीस्त लाया
कहे रूह हां जिलाया
कभी गुम कभी अ़यां है कभी सर्द गह तपां है
कभी ज़ेरे लब फ़ुग़ां है कभी चुप कि दम न थाया
रुख़े कामे जां दिखाया

ये तसव्वुराते बातिल तेरे आगे क्या हैं मुश्किल
तेरी .क़ुद्रतें हैं कामिल इन्हें रास्त कर ख़ुदाया
मैं उन्हें शफ़ीअ़ लाया

लह़द में इश्क़े रुख़े शह का दाग़

लह़द में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ लेके चले
अंधेरी रात सुनी थी चराग़ लेके चले
तेरे .ग़ुलामों का नक़्शे क़दम है राहे ख़ुदा
वो क्या बहक सके जो यह सुराग़ लेके चले
जिनाँ बनेगी मुहि़ब्बाने चार यार की क़ब्र
जो अपने सीने में यह चार बाग़ लेके चले
गए, ज़ियारते दर की, सद आह वापस आए
नज़र के अश्क पुछे दिल का दाग़ लेके चले
मदीना जाने जिनानो जहां है वोह सुन लें
जिन्हें जुनूने जिनाँ सूए ज़ाग़ लेके चले
तेरे सह़ाबे सुख़न से न नम कि नम से भी कम
बलीग़ बह्रे बलाग़त बलाग़ लेके चले
हु.ज़ूरे तैबा से भी कोई काम बढ़ कर है
कि झूटे हीलए मक्रो फ़राग़ लेके चले
तुम्हारे वस्फ़े जमालो कमाल में जिब्रील
मुहा़ल है कि मजालो मसाग़ लेके चले

गिला नहीं है मुरीदे रशीद शैतां से
कि उसके वुस्अते इल्मी का लाग लेके चले
हर एक अपने बड़े की बड़ाई करता है
हर एक मगबचह मग का अयाग लेके चले
मगर खुदा पे जो धब्बा दरोग़ का थोपा
ये किस लई की ग़ुलामी का दाग़ लेके चले
वक़ूए किज़्ब के माना दुरुस्त और क़ुद्दूस
हैए कि फूटे अजब सब्ज बाग लेके चले
जहां में कोई भी काफिर सा काफिर ऐसा है
कि अपने रब पे सफ़ाहत का दाग़ लेके चले
पड़ी है अंधे को आदत कि शोरबे ही से खाए
बटेर हाथ न आई तो जाग़ लेके चले
खबीस बहरे ख़बीसा ख़बीसा बह्रे ख़बीस
कि साथ जिन्स को बाजो कुलाग़ लेके चले
जो दीन कौओं को दे बैठे उनको यकसां है
कुलाग़ लेके चले या अलाग़ लेके चले
रज़ा किसी सगे तैबा के पाँव भी चूमे
तुम और आह कि इतना दिमाग़ लेके चले

ग़ज़ल क़तअ़ बन्द

अम्बिया को भी अजल आनी है

अम्बिया को भी अजल आनी है
मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है

फिर उसी आन के बाद उनकी ह़यात
मिस्ले साबिक़ वही जिस्मानी है

रूह़ तो सबकी है ज़िन्दा उनका
जिस्मे पुरनूर भी रूहानी है

औरों की रूह़ हो कितनी ही लतीफ़
उनके अज्साम की कब सानी है

पाँव जिस ख़ाक पे रख दें वो भी
रूह है पाक है नूरानी है

उसकी अज़्वाज को जाइज़ है निकाह़
उसका तर्का बटे जो फ़ानी है

यह हैं ह़य्ये अब्दी इनको रज़ा
सिदक़े वादा की क़ज़ा मानी है

विलाए आले रसूल

खुशा दिले कि देहन्दश विलाएं आले रसूल
खुशा सरे कि कुनन्दश फिदाए आले रसूल
गुनाहे बन्दा बबख़्श ऐ खुदाए आले रसूल
बराए आले रसूल अज बराए आले रसूल
हज़ार दुर्जे सआदत बर आरद अज सदफ़े
बहाए हर गुहरे बे बहाए आले रसूल
सियह सपेद न शुद गर रशीद मिस्रश दाद
सियह सपेद कि साजद अताए आले रसूल
इज़ा रुऊ ज़ुकिरल्लाह मुआयना बीनी
मनो खुदाए मन आनस्त अदाए आले रसूल
ख़बर देहद ज़े तगे *ला–इलाह–इल्लल्लाह*
फ़नाए आले रसूल व बक़ाए आले रसूल
हज़ार मेहर परद दर हवाए ऊ चू हबा
बरोज़े नै कि दरख़्शद ज़ियाए आले रसूल
नसीबे पस्त–नशीना बुलन्दीस्त ईं जा
तवाज़ो अस्त दरे मुर्तक़ाए आले रसूल
बर आबः चर्ख़े बरीनो बेबीं सितानए ऊ
गरा बः ख़ाको बेया बर समाए आले रसूल

क़बाए शह बगलीमे सियाहे ख़ुद नख़रद
सियह गलीम नबाशद गदाए आले रसूल
दवाए तल्ख़ मख़ुर शहद नोशो मुज़्दा नियूश
बेया मरीज़ बदारुश्शिफ़ाए आले रसूल
हमीं न अज़ सरे अफ़्सर कि हम ज़े सर बरख़ास्त
नशिस्त हर कि बफ़र्क़श हुमाए आले रसूल
बसुख़र व तानए सख़्ती ज़नद बआरिज़े गुल
बसंगे सख़रा वज़द गर सबाए आले रसूल
देहद ज़े बागे मिना .गुन्चहाए ज़र ब गिरह
दमे सवाल हया व ग़िनाए आले रसूल
ज़े चर्ख़ काने ज़रे शर्क़ी, मग़्रबी आरन्द
बदर्दे मिस बमसे कीमियाए आले रसूल
जरस बसल्सलाए अश आंचे गुफ़्त राही रा
हुमा बसिल्सिला आरद वराए आले रसूल
रसूल दाँ शवी अज़ नामे ऊ नमी बीनी
दो हर्फ़े मअ़रेफ़ा दर इब्तेदाए आले रसूल
बख़िद्मतश नख़रद बाजो ताज रंगो फ़िरंग
सपेद बख़्त सियाहे सराए आले रसूल
अगर शबस्तो ख़तर सख़्तो रह नमी दानी
बेबन्द चश्मो बेया बर क़ेफ़ाए आले रसूल

ज सर नेहन्द कुलाहे ग़ुरूर मुद्दईयाँ
बजलवए मदद ऐ कफ़्श पाए आले रसूल
हज़ार जामए सालूस रा कतानी देह
बेताब ऐ महे जैबे क़बाए आले रसूल
मरौ ब-मैकदा कांजा सियाह कारानन्द
बेया ब-ख़ानकहे नूर ज़ाए आले रसूल
मरौ ब-मज्लिसे फिस्क़ो फ़ुजूर शय्यादाँ
बेया ब-अंजुमने इत्तेक़ाए आले रसूल
मरौ ब-दा-मगहे ईं दरोग़-बाफ़ाँ हेच
बेया ब-जल्वा-गहे दिल्कशाए आले रसूल
अज़ाँ ब-अंजुमने पाक सब्ज़ पोशाँ रफ़्त
कि सब्ज़ बूद दराँ बज़्म जाए आले रसूल
शिकस्त शीशा बहिज्रो परी बशीशा हनोज़
ज़े दिल नमी रवद आँ जल्वा हाए आले रसूल
शहीदे इश्क़ नमीरद कि जाँ ब-जानाँ दाद
तू मुर्दी ऐ कि जुदाई ज़े पाए आले रसूल
बगो कि वाए मनो वाए मुर्दा माँदने मन
मनाले हरजा कि हैहात वाए आले रसूल
कि मी बुरद ज़े मरीज़ाने तल्ख़ कामे नियाज़
ब-अहदे शहद-फ़रोशे बक़ाए आले रसूल

सबा सलामे असीराने बस्ता बाल रसां
बताइराने हवाओ फज़ाए आले रसूल
खता मकुन दिलका? पर्दा ईस्त दूरी नीस्त
बगोश मी ख़ुरद अकनूं सदाए आले रसूल
मगो कि दीदा गरी वो गुबारे दीदा बेखन्द
बकारे तुस्त केनूं तूतियाए आले रसूल
मपेच दर गमे अय्यारगाने जम्ब शेआर
अगर अदब न कुनन्द अज़ बराए आले रसूल
हर आँ कि निक्स कुनद निक्स बहरे नफ्से वैस्त
ग़नीस्त हज़रते चर्ख़ एअ़तेलाए आले रसूल
सेपास कुन कि बपास व सेपासे बद मन्शॉ
नियाज़ो नाज़ नदारद सनाए आले रसूल
न सग बशोरो न शप्पर बखामुशी काहद
ज़े क़दरे बद्रो ज़ियाए जकाए आले रसूल
तवाज़ुओ शहे मिस्कीं-नवाज़ रा नाज़म
कि हमचू बन्दा कुनद बोसे पाए आले रसूल
मनम अमीरे जहाँगीरे कज कुलह यानी
कमीना बन्दा व मिस्कीं गदाए आले रसूल
अगर मिसाले खिलाफत देहद फकीरे रा
अ़जब मदार ज़े फ़ैज़ो सख़ाए आले रसूल

मगीर ख़ुर्दा कि ऑ कस न अह्ले ई कार अस्त
कि दानद अह्ले नुमूदन अ़ताए आले रसूल
"बेबीं तफ़ावुते रह अज कुजास्त ता बकुजा"
तबारकल्लाह मा वो सनाए आले रसूल
मुरा ज़े निस्बते मलिक अस्त उम्मीद ऑ कि बहश्र
निदा कुनन्द बेया ऐ **रज़ाए** आले रसूल

रुबाइयाते नअ़तिया

पेशा मेरा शायरी न दावा मुझ को
हां शरअ़ का अल्बत्ता है जुम्बा मुझको
मौला की सना में हुक्मे मौला का ख़िलाफ़
लोज़ीना में सीर तो न भाया मुझको

हूं अपने कलाम से निहायत मह़ज़ूज़
बेजा से है.अल् मिन्नतः लिल्लाह मह़.फ़ूज़
.कुरआन से मैंने नअ़त गोई सीखी
यानी रहे अहकामे शरीअ़त मल्हूज़

☆☆☆

महसूर जहां दानी व आली में है
क्या शुब्हा रज़ा की बे मिसाली में है
हर शख्स को इक वस्फ़ में होता है कमाल
बन्दे को कमाल बे कमाली में है

कस मुंह से कहूं रश्के अनादिल हूं मैं
शायेर हूं फ़सीह बे मुमासिल हूं मैं
हक़्क़ा कोई सनअत नहीं आती मुझको
हां ये है कि नुक़सान में कामिल हूं मैं

☆☆☆

तोशे में ग़मो अश्क का सामाँ बस है
अफ़ग़ाने दिले ज़ार हुदी ख़्वाँ बस है
रहबर की रहे नअत में गर हाजत हो
नक़्शे क़दमे हज़रते हस्सां बस है

हर जा है बुलन्दीए फ़लक का मज़्कूर
शायद अभी देखे नहीं तैबा के क़ुसूर
इन्सान को इंसाफ़ का भी पास रहे
गो दूर के ढोल हैं सुहाने मश्हूर

किस दर्जा है रौशन तने मह्बूबे इलाह
जामा् से अ़यां रंगे बदन है वल्लाह
कपड़े ये नहीं मैले हैं उस गुल के रज़ा
फ़रियाद को आई है सियाहीए गुनाह

☆☆☆

है जल्वा गहे नूरे इलाही वोह रू
क़ौसैन की मानिन्द हैं दोनों अब्रू
आंखें ये नहीं सब्ज़ए मिज़्गां के क़रीब
चरते हैं फ़ज़ाए लामकां में आहू

मअदूम न था सायए शाहे सक़लैन
उस नूर की जल्वा गह थी ज़ाते हसनैन
तम्सील ने उस साये के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं आधे से हुसैन

***

दुनिया में हर आफ़त से बचाना मौला
उक़्बा में न कुछ रंज दिखाना मौला
बैठूं जो दरे पाके पयम्बर के हुज़ूर
ईमान पर उस वक़्त उठाना मौला

ख़ालिक़ के कमाल हैं तजद्दुद से बरी
मख़्लूक़ ने महदूद तबीअत पाई
बिल्जुमला वजूद में है इक ज़ाते रसूल
जिसकी है हमेशा रोज़ अफ़्ज़ूं ख़ूबी
हूं कर दो तो गर्दूं की बिना गिर जाये
अब्रू जो खिचे तेग़े क़ज़ा फिर जाये
ऐ साहबे क़ौसैन बस अब रद न करे
सहमे हुवों से तीरे बला फिर जाये

नुक़सान न देगा तुझे इसियां मेरा
गुफ़रान में कुछ ख़र्च न होगा तेरा
जिससे तुझे नुक़सान नहीं करदे मआफ़
जिसमें तेरा कुछ ख़र्च नहीं दे मौला

क़तअ़

न मुरा नोश ज़े तहसीं न मुरा नेश ज़े तअ़न
न मुरा गोश ब-मदहे न मुरा होश ज़मे

मनन व कुंजे ख़मूली कि न गुन्जद दर वै
जुज़ मनो चन्द किताबे व दवातो क़लमे

नोटः- यह क़तअ़ए मुबारका आला हज़रत क़ुद्देस सिर्रुहू की मुकम्मल सवानेह़ उमरी है जो ख़ुद आला हज़रत क़ुद्देस सिर्रुहू ने तह़रीर फ़रमाया है।